

लक्ष्मीनिवास विरला



सुल्तान और निहालदे



नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

प्रकाशक

नैशनल पब्लिशिंग हाउस

बम्बेसोक बजाहरनगर, बिस्ती

बिस्ती-केन्द्र नई सड़क बिस्ती

प्रथम संस्करण



जानवरी १९६३

मूल्य : पाँच रुपये

मुद्रक

गुर्गा प्रिंटिंग वर्क्स बामरा

दो शब्द

राजस्थान के एक बड़े भाग में प्रचलित जनप्रिय लोक-कथा के आधार पर यह उपन्यास श्री मधुमीनिवास बिरला ने लिखा है। पहले उन्होंने इसे मद्रास में लिखा था। जब यह हिन्दी रूपान्तर है। श्री बिरला ने भूमिका में लोक-कथा के ऐतिहासिक संय पर शोधपूर्ण प्रकारा इला है। ऐतिहासिक तथ्यों को लोक-कथा का ऐसा रूप क्यों मिलता है? यह प्रश्न उठता है। साथ ही यह भी कि इतिहास क्या है? इतिहास की अनेक व्याख्याएँ की गयी हैं। कुछ बिलसन हैं

एक सनकी का कहना है कि इतिहास वह है जो सभी हुमा ही नहीं और ऐसे मनुष्य का लिखा जो वहाँ या ही नहीं। कारलाइल ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'क्रांस की क्रांति' में लिखा है कि इतिहास गणों का निबोध मात्र है।

गिबन ने अपनी विख्यात पुस्तक 'रोम साम्राज्य का हास और पतन' में कहा है कि इतिहास मानव के पापों, पूर्वताओं और दुर्बराओं के बपन से अधिक और है ही क्या? कांस के नेपोलियन बोनापार्ट का नाम बहुत लोगों में सुना है। यह हुजरत फरमाते हैं—'सर्व-सम्मत किस्से के सिवाय इतिहास और है ही क्या?'

नामो अमेरिकन हार्निक इमसन की राय है—'इतिहास वास्तव में जीवन-वर्तियों के सिवाय और कुछ नहीं है।'

जर्मन हार्निक शेगस कुछ और कह कर शान्ति देता है—'इतिहास-लेखक वह श्रुति है जो पीछे लौट-लौट कर देखता है।'

प्रसिद्ध इतिहास-लेखक एच० बी० वेल्स अपने प्रथम 'इतिहास की बपरेला' में कहता है—'मानव का इतिहास सार रूप में बिचारों का इतिहास है।'

निष्कर्ष यह कि इतिहास मानव-व्रगति के निरन्तर विकास का अपूर्ण उल्लेख ही है।

जनमन का स्वल्प और चित्र कथित इतिहासों में तो बिलनाई नहीं पड़ता। जनमन का वह रूप-स्वरूप और जन-भावनाओं का वह चित्र लोक-कथामों में ही मिलता है। लोक-कथामों का इसी कारण बहुत महत्त्व है। इतिहास लेखकों का ध्यान इनकी ओर बहुत ही कम गया है। लोक-कथामों के संग्रह अनेक देशों में किये गये हैं परन्तु उन पर उपन्यास तो बहुत ही कम लिखे गये हैं।

'मुस्तान और मिहानदे' उपन्यास के लेखक ने तुमिका में सही लिखा है कि 'युग की प्रति' उसके भाषा-विचार का प्रभाव साहित्य पर पड़ता है क्योंकि साहित्य और कुछ नहीं, लोक-जीवन का मात्र दर्पण है। और यह भी कि,—सम्पत्ता (साधुनिक सम्पत्ता) के पूर्ण विकसित होने के पूर्व कालीन साहित्य में मुख्यरूप से बीरगीतों और लोक-कथामों का बाहुस्य रहा है। चरित्र-विन्यास में आज की अपेक्षा अधिक सादगी थी। ब्रैता समाज जैसे पात्र। पुरातन और सभ्यकालीन साहित्य में अगर कहीं-कहीं समस्यार्थ आती भी थी तो उन्हें अधिकतर आधिभौतिक घटनाओं के बल पर उड़ाया जाता था और कलात्मक ढंग से उनका निर्बाह कर दिया जाता था। घटना-वर्चिष्य के कारण समस्कार पैदा करके पाठकों की जिज्ञासा को तीव्र किया जाता और फिर जैसे ही समस्कारपूर्ण ढंग से उनका समाधान कर देना निश्चय ही रस-रिचय कसाकार द्वारा ही सम्भव हो सकता था। किन्तु साधुनिक साहित्य में समस्यार्थ अधिक मनोबैज्ञानिक भाषा पर लड़ी की जाती हैं क्योंकि आज का वैज्ञानिक जगत ब्रैती आधिभौतिक घटनाओं के समस्कार को स्वीकार करने के लिए स्वभावतः ही तैयार नहीं है। लोक-कथा में ऐतिहासिक तथ्यों को इसी कारण वह रूप मिलता है।

इस उपन्यास का प्रधान नायक 'मुस्तान' प्रतिहार बंसीध ठाकुर था। बचन का बरका बड़ा साहसी और बीर, ताक ही कव्य-साहित्य

तपस्वी, ऐश-आराम से हुए । जनता ऐसे ही तबकों को समाज में आहूती रही है । 'मुस्तान' के बलिदान और-कार्य इत्यादि जनता की उसी चाह के अनुसार आये हैं । लोक-कथा तो रोचक और प्रेरक है ही, श्री लक्ष्मी-निवास बिरला ने उसे और भी हृदयपात्री कर दिया है । पाठक का मन बराबर लगा रहेगा । मूल लोक-कथा में एक जगह यह भी आया है कि 'मुस्तान' को जाड़ू से तोता बना दिया गया था । इसे लेखक ने छोड़ दिया है तो अच्छा ही किया । लोक-कथा में एक जिन (बैतब कह लीजिये इसे) का जिक्र है । उसे लेखक ने उपन्यास में रख लिया है । उचित ही किया । यह जिन-वस्तु मनुष्य-मन्ती था । 'मुस्तान' ने जनता को बचाने के लिए इसका बय कर दिया । तात्पर्य यह है कि जनता का सताने वाला छोड़ा न जाय । उपन्यास में एक स्थान पर गुब गोरखनाथ के प्रकट होने का भी बचन आया है । युरोप पहले हुए हैं गुब गोरखनाथ । योपियो और महात्माओं के प्रति जन-मन की अदृष्ट अट्टा रही है और उनकी करामातों पर विश्वास भी भरपूर रहा है । एक योगी की करामात का वर्चन मराको से आये इम्नबतूता नाम के विख्यात यात्री ने जो मुहम्मद तुगलक के जमाने में आया था, अपनी पुस्तक में किया है—
 झौलों बेकी घटना का । तो फिर लोक-कथा में निहालबे की लोक-कथा में कैसे रह जाता ? श्री लक्ष्मीनिवास बिरला ने अपने इस उपन्यास में जो उस लोक-कथा पर आधारित है गुब गोरखनाथ को ले जाने में बिलकुल ठीक किया । पाठक नहीं भ्रुसेगा कि उपन्यास लोक-कथा पर आधारित है । छोड़ बैठे तो जन-मन की वह आस्था दबी रह जाती ।

राजस्थान में और अन्य क्षेत्रों में भी बहिन का सम्माननीय स्थान है । जिसे एक बार बहिन मान लिया बस सदा के लिए वह आदर सम्मान और रसा का पात्र बन गई । इसे लेखक ने बड़ी सूधी के साथ निभाया है ।

राजस्थान में जरा-जरा-सी बात पर मुठ हो जाते थे । लोक-कथा

में उनका वर्चस्व अनिवार्य था। उस युग के जीवन का यह चित्र भी उपन्यास में पूरी तरह आया है।

‘निहालदे’ निहालदेवी का ही रूप है। ‘निहालदे’ का चित्रण भी बहुत स्वच्छ, भरा-पूरा और सुन्दर हुआ है।

इस प्रकार की लोक-रूपायों के आचार पर और उपन्यास भी लिखे जाने चाहिए। इनमें मनोवैज्ञानिक विरसेवर्षों और संश्लेषणों की आवश्यकता बहुत कम है। सीधी भाषा में सीधी साफ-सुधरी बात, रोचक ढंग से।

इस उपन्यास की सफलता के लिए श्री लक्ष्मीनिवास बिरला को मेरी हार्दिक बधाई। यदि इसके आधार पर और इस प्रकार की कहानियों के आधार पर फ़िल्म भी बनें तो बहुत अच्छा होगा।

शांसी

सुम्हाबमछाउ बनी

भूमिका

साहित्य वह कला है जो चरित्रों के माध्यम से जीवन के चिरन्तन मूर्तियों के प्रति लोक-मानस में आस्था के भाव भरती है। युग की प्रति उसके आचार विचार का प्रभाव साहित्य पर पड़ता है क्योंकि साहित्य और कुछ नहीं लोक-जीवन का मात्र दर्पण है। निश्चय ही पहले के समाज का रूप आज से भिन्न था। न तो तब उतनी जटिलताएँ थीं न बेसी उलझनें। सीधा-सादा समाज भोले-भासे लोग। सामाजिक संगठन वैचारिक क्रांतियाँ और युग को पच बतमाने वाली आदर्श सामाजिक संस्थाएँ निश्चय ही आज जितनी अधिक हैं उतनी पहले नहीं थीं। तब का समाज आज की अपेक्षा अनेक अंशों में सीमित था क्योंकि समय और दूरी को अनायास ही एकदम कम कर देने वाले वैज्ञानिक साधन तब उपलब्ध नहीं थे जैसे कि आज के मानक को है। इसीलिए पुराने साहित्य के चरित्रों में भी इतनी विनयताएँ, इतनी जटिलताएँ नहीं थीं जितनी आज के साहित्यिक चरित्रों में हैं। पर उसका यह अर्थ नहीं कि उन चरित्रों में आदर्श की महारई नहीं थी। आदर्श की वह महारई आज कहीं आज तो बस उसकी विनयता उसकी अनेकरूपता मानसिक असन्तुलन ही रह गया है। इसीलिए आज के लेखक समस्याप्रधान पात्रों की सर्जना करने में सीन रहने लगे हैं। ऐसे समस्याप्रधान पात्र तब नहीं थे यद्यपि मानव-मन की स्वाभाविक अनेकरूपता तो किसी न किसी रूप में आदिम सृष्टि से ही जन्मी आ रही है।

सम्यता के पूर्ण विकसित होने के पूर्वकालीन साहित्य में मुख्य रूप से वीर-वीरों और लोक-कथाओं का बाहुल्य रहा है। चरित्र विनयता में आज की अपेक्षा अधिक छावनी थी। जैसा समाज जैसे पात्र। पुरातन और मध्यकालीन साहित्य में अगर कहीं-कहीं समस्याएँ आती भी थीं तो उन्हें अधिकतर व्यापिभौतिक घटनाओं के बल पर उठाया जाता था

और कलात्मक ढंग से उनका निर्वाह कर दिया जाता था। बटना वैश्विय के कारण चमत्कार पैदा करके पाठकों की जिज्ञासा को तीव्र किया जाता और फिर वैसे ही चमत्कारपूर्वक ढंग से उसका समाधान कर देता निश्चय ही रससिद्ध कसाकार के द्वारा ही सम्भव हो सकता था। किन्तु आधुनिक साहित्य में समस्याएँ अधिक मनोवैज्ञानिक आधार पर ढकी की जाती हैं क्योंकि आज का वैज्ञानिक जगत् वैसी आधिभौतिक बटनाओं के चमत्कार को स्वीकार करने के लिए स्वभावतः ही तैयार नहीं है।

भारत प्राचीन साहित्य का अक्षय भण्डार है। लोक-कथामों का तो भारतीय साहित्य में विशेष महत्त्व है। प्रायः ये लोक-कथाएँ विभिन्न राज्यों में एक-सी पाई जाती हैं, यद्यपि उनमें कहीं-कहीं कुछ अन्तर भी आ गया है। वस्तु-विम्यास का अन्तर प्रतिवेदन का अन्तर, कथ-प्रवाह का अन्तर। 'सुस्तान और निहासदे' राजस्थान और उसके पार्श्ववर्ती अंचल की बड़ी ही लोकप्रिय जन-गाथा है। आज की इस वैज्ञानिक आपाधापी के युग में भी जिस अपूर्व तन्मयता के साथ लोग इस लोक-गाथा को सुनते हैं, उससे छाछ पटा चसता है कि जब तक भी वहाँ के लोगों के मन में अपनी परम्परा अपने अब्धम्य जातीय-जीवन के प्रति प्रगाढ़ वास्था बनी हुई है। युग की प्रगति के साथ चलते हुए भी वे अपने गौरवमय अतीत को भूल नहीं सके हैं।

प्रस्तुत पुस्तक सुस्तान और निहासदे भी बल्लकथा पर आधारित है। मानना ही होना कि खरिजो और कथा प्रवाह को आज के युग के अनुरूप बनाने के लिए लेखक ने स्वतंत्रता से भी काम लिया है। पुस्तक का नामक 'सुस्तान' मूल लोक-कथा का आधिभौतिक नामक न होकर एक साधारण गुन-दोषयुक्त मानव के रूप में आया है। यद्यपि उठमें केवल गुन की स्थापना नहीं की गई, तथापि मानवता के कल्याण के लिए संघर्ष करने वाले एक कमपुत्र्य उदारचेता मानव का रूप ही उसको दिया गया है।

कहा जाता है कि मुस्ताम प्रतिहार बंशीय था। यह कहना कठिन है कि मुस्ताम उसका नाम था या उपाधि। बाल के तक्तिशाही प्रतिहार राजाओं ने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया था किन्तु मुस्ताम के कर्म-स्थल मुख्यतया राजस्याम और सीराप्ट्र थे। इतिहासज्ञों के मतानुसार कन्नौज के बाहर का कोई प्रतिहार राजा इतना शक्ति-सम्पन्न नहीं था कि बाबल दुर्ग उसकी छाता में हो। अगर मुस्ताम कन्नौज पर राजा था तो बनबाघ से सीटल हुए या रानी मारु के पास जाते हुए तसे वर्तमान राजस्थान की यात्रा करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। 'वंशमास्कर' के कारण कवि सूरजमल के अनुसार छठी और सातवीं छवी में वेनु महिप मस्त महिप या उसके भाई मधुपाल और स्वध महिप ने राज्य किया था। सम्भव है कि वेनु महिप मुस्ताम का दादा रहा हो मस्त महिप या मधुपाल मैनपाल मुस्ताम का पिता हो और स्वर्ण महिप ही हो स्वर्ण मुस्ताम।

सूरजमल के अनुसार ये तीनों ही अत्यन्त शक्तिशाली राजा थे और इनके अधिकार में कई दुर्ग थे। उनकी राजधानी बिसबल नगर में थी। आज यह बतमाना कठिन है कि यह बिसबल नगर कहाँ था पर यह कहा जा सकता है कि यह मारवाड़ के अन्तर्गत ही कहीं था।

प्रतिहारों की उत्पत्ति के विषय में कई मत हैं। कोई कहता है कि ये बिदेसी थे जिन्हें बाघ में भारतीयों ने अपने में मिला लिया। कारणों के मतानुसार वे लदमज बंशीय हैं। लदमज राम के प्रतिहारी थे इसीलिए इस बल का नाम प्रतिहार बंस पड़ा। एक मत यह भी है कि ऋषि बशिष्ठ ने यज्ञ किया तो उससे चार बातियों का प्रतिनिधित्व करने वाले चार व्यक्ति निकले जिनमें से एक प्रतिहार या परिहार था जिसे काबुल का राज्य दे दिया गया। इस बल में बीन नामक एक शक्तिशाली राजा हुआ जो अपने बाहुबल से सभ्राट् हो गया जिससे उसको 'बहुमा बीन' कहा गया।

अगर यही बहुमा (पञ्चवर्ती) बन मुस्ताम का दादा था तो

मुस्तान का समय काफी पीछे चला जाता है। सुदूर काबुल में राज्य करते हुए भी मुस्तान इस कहानी में बर्णित खौर्य के कारनामे कर चुका था इसमें कुछ अस्वाभाविक नहीं लगता। अग्नि से उत्पत्ति की बात छोड़ कर अगर हम इस बात को मान लें कि प्रतिहारों के एक बंस ने काबुल पर भी राज्य किया था तो यह बात इतिहास-सम्मत हो जाती है। इतिहास यह मानता है कि प्रतिहार भारत के मूल निवासी नहीं थे किन्तु वे बाहर से आये थे।

अगर हम इस मत को सही मानते हैं तो यह सिद्ध हो जाता है कि मुस्तान अफगानिस्तान में राज्य करता था और वर्तमान राजस्थान और सीराप्ट के कुछ क्षेत्र भी उसके आधिपत्य में थे। बहुत करके मुस्तान उसका नाम बसली न होकर उपाधि रही होगी।

प्रतिहारों को सूर्यवंशी कहा जाता है और अफगानिस्तान में सूर्य देव की बिनाम प्रतिमा मिलन की बात इस मत को प्रमाणित कर देती है। इस्लाम के बिनाम प्रतिहार एक रक्षा पंक्ति का काम कर रहे थे। जब इस्लाम का बचाव पड़ा तो वे धीरे-धीरे भारत में आने लगे और यहाँ आकर शक्तिशाली बन बैठे।

डाक्टर आर० सी० मजूमदार के मतानुसार बाद में भी प्रतिहारों ने अच्छा शक्ति-अवलोकन किया। मुस्लिम विजय से पहले कन्नौज का प्रतिहार-राज्य ही उत्तर भारत का अन्तिम बिनाम साम्राज्य था। यह यह भी कहते हैं कि सम्भवतः प्रतिहार साम्राज्य हय साम्राज्य से भी बिनाम था और उसकी कानाबधि भी अपेक्षाकृत अधिक थी।

यदि हम इसे सही मान लें तो यह स्वतः मानना होगा कि इस बंस में शक्तिशाली राजाओं की एक सुगठित श्रृंखला थी क्योंकि उसके अभाव में यह सब सम्भव ही नहीं हो सकता।

और फिर ऐसी बतकपाएँ भी तब तक प्रचलित नहीं हो सकती जब तक उनका नायक कोई शक्तिशाली और राजा न रहा हो। उस नायक के बारे में और अधिक जानकारी पुटाने की जिम्मेदारी अब

पाठक पढ़ते ही चौंक न उठें। इस पुस्तक में मध्य भूमिगत वातावरण बनाये रखने की पूरी कोशिश की गई है। कभी-कभी कपोस-कल्पित शब्दों की झंझरी भी ठीक रहती है, क्योंकि इससे ऐसे यथार्थ का परिचय भी मिल जाता है जिसकी कल्पना भी नहीं रहती है। सम्भव है प्राचीन कास का सामाजिक जीवन उसकी भास्यार्थ, परम्पराएँ हम में उस सादगी के प्रति एक आकर्षण पैदा कर सकें जिनका हम आधुनिक प्रभाव के कारण अबोधित कहकर मजाक उड़ाते हैं।

—लेखक

पाठक पढ़ते ही चौंक न उठें। इस पुस्तक में मध्य युगीन वातावरण बनाये रखने की पूरी कोशिश की गई है। कमी-कमी कपोल-कल्पित जगत् की झंझी भी ठीक रहती है क्योंकि इससे ऐसे समार्थ का परिचय भी मिल जाता है, जिसकी कल्पना भी नहीं रहती है। सम्भव है प्राचीन काम का सामाजिक जीवन उसकी आस्पारें, परम्पराएँ हम में उस छात्पी के प्रति एक आकर्षण पैदा कर सकें बितका हम आधुनिक प्रभाव के कारण अबोधिक कहकर मजाक उड़ाते हैं।

—लेखक

हिरन को घोड़े की पीठ पर बांध सुल्तान बसने को तैयार हुआ। घोड़ा घूमा तो उसने देखा कि छरहरे बदन की एक सुन्दर युवती टकटकी सगाये उसे ताक रही है। बड़ी क्षान से वह सीधी सड़ी थी। साँस के साय-साय उसका वक्ष फूल जाता और बैठ जाता, पर चाहते हुए भी सायद लज्जा से उसकी बोली निकल नहीं रही थी।

युवती के सौन्दर्य से सुल्तान जैसे आहत हो गया। उसमें राजब की मनोहरता थी। उसकी कजरारी आँखों में चमक थी और चेहरा बड़ा आकर्षक। इसके पहने कि वह कुछ बोसने की कोशिश करे, सुल्तान ने कहा, 'सुन्दरी, आप कौन हैं और यहाँ क्यों सड़ी हैं ?'

'यह प्रश्न तो मुझे आपसे करना चाहिए। मैं महाराजा माप की पुत्री हूँ और यह मेरा बगोना है।' युवती ने बबाव दिया।

सुल्तान मुबतियों से सदा बबराता था। पर वह तो कुछ बूसरे ही बाँके में बनी थी। आदषर्य से उसने युवती की आँखों में देखा। उसे लगा कि वह उसे निराश नहीं करेगी, वह अपूव थी।

"शायद अब तक आप कुमारी ही हैं। आप-सरीखी रूपवती राजकुमारी की तो अब तक किसी भाग्यवान् राज कुमार से सगाई हो जानी चाहिए थी।"

पाठक पढ़ते ही चौक न उठें। इस पुस्तक में मध्य युगीन बाताबरण बनाये रखने की पूरी कोशिश की गई है। कभी-कभी कपोल-कल्पित बगत् की झंझी भी ठीक रहती है क्योंकि इससे ऐसे यन्त्रार्थ का परिचय भी मिल जाता है, जिसकी कल्पना भी नहीं रहती है। सम्भव है प्राचीन कास का सामाजिक जीवन उसकी मास्पाएँ, परम्पराएँ हम में उस साबगी के प्रति एक आकर्षण पैदा कर सकें जिनका हम आधुनिक प्रभाव के कारण अभीष्टिक कहकर मजाक उड़ाते हैं।

—लेखक

मगर संकेत से आह भरकर और अपने सुकोमल हाथों को हिलाकर उसने अपना मनोरथ समझा दिया ।

“मैं ही तो वह अभाग्य सुल्तान हूँ । अगर मैं कहूँ कि मैं अपने आप से डरता हूँ तो क्या तुम विश्वास करोगी ? मेरा मन क्या कहता है, यह तो समझ ही गयी होगी । मगर बचन पूरा न कर सकूँ तो कुछ भी कहना बेकार है ।

“आप आप तो बड़ी निराशा भरी बातें कर रहे हैं । स्नेह से मेरा उसका काँपता कण्ठ हकसाने लगा ।

मीनी मीनी ठंडी हवा का एक झोंका आया । भारी ओर फेंसी मोतिया की, निहालदे के बस्त्रों से उठी, मधुर सुगंध सुल्तान के मस्तिष्क में भर गयी । उसे लगा कि घरों से बहु इतना एकाकी नहीं था । क्या कुछ नहीं कर सकता ? उसने एकाएक अल्पी से झुक निगलता और अपने को समत करते हुए एक सन्धी साँस भरी । “एक ही रास्ता है । तुम अपने पिता से कहो कि वे राजकुमारों और राजाओं को आमन्त्रित करें और तैल-पात्र में पड़ती परछाईं को देखकर मछली की आँसों घेघने के लिए कहें । मुझे विश्वास है कि इस परीक्षा में मेरे सिवा दूसरा कोई उत्तीर्ण नहीं हो सकता ।”

राजकुमारी को यह बात ज्ञेय गयी । उसका मुँह तिस गमा और आँसों चमक उठीं । काँपती हुई वह उठी । उसकी प्रत्येक क्रिया, और प्रत्येक भंगिमा में इकृता और सुन्दरता घुसी हुई थी । वह महल को ओर सौदने को उतावली हो उठी । उसका मन दादलों में मँडरा रहा था, और वह मविष्य की त्रिभी फूमवारी को देखने लगी । सुल्तान उसकी भूमिस

बड़े घने जंगल से मुबारना था, नदियाँ पार करनी थीं, उदयपुर पार करना था और उसके बाद भी काफ़ी लम्बी यात्रा के पश्चात् इबरकोट पहुँचना था। उदयपुर से नरबलगढ़ के रास्ते में ठगों का एक बड़ा गढ़ था।

॥ २३ ॥

ठगों को यह खबर सग गयी थी कि सुल्तान भोड़े बीबाता हुआ इबरकोट की ओर जा रहा है। यह तो सभी जानते थे कि सुल्तान को मोटी तनख्वाह मिलती थी। सब यही समझते थे कि वह खूब पैसों वाला होगा। कुछ ठगों ने तय किया कि जब वह उस रास्ते से गुजरे तो उसे लूट लेने का अच्छा मौक़ा रहेगा। इसके लिए चार ठग तनात किय गये तनिया, मनिया, गोपालिया और हरसलता। गोपालिया के पास एक मैना थी। वह जहाँ भी जाता, उसे पिंजड़े में साप से जाता। मना मनुष्यों की बीसी की नक़ल करके उनसे बातें करती।

पिछली रात की बारिश की बजह से वातावरण नम था। सूरज आध मन से मुस्करा रहा था, और बादलों से ठके आकाश में इधर-उधर नीले चपकके झंझ रहे थे। नदी निकट होने के कारण बनस्पतियाँ घनी थीं, और एक ढसान के पास एक निबिड़ कून भी था।

वे सोच रहे थे कि सुल्तान अपने साप यशों पर हीरे जवाहरात सादे साप में से था रहा होगा। जब उन्होंने अकेले

घुड़सवार को देखा तो वे यह तय नहीं कर पाये कि वह सुल्तान है या कोई और। फिर उन्होंने किस्मत आज्ञामानी चाही। गिरोह का मुखिया मनिया बोला, 'इस अकेले घुड़सवार को भी नहीं जाने देना है और जो कुछ मिले हथिया लेना है।'

जब सुल्तान पास आया तो वे रोने-सिसकने लगे। उसने पूछा 'तुम लोगों को क्या तकनीक है?' मनिया बोला, 'हम एक सीवागर के घेरे हैं। हम नवी पार कर रहे थे कि नाब डूब गयी। हम तो किसी तरह बच गये पर हमारा सब कुछ डूब गया।'

सुल्तान बोला, 'अगर तुम्हें धन चाहिए तो मेरे घोड़े की जीन क पारों कोनों पर धार भ्रसरें सटक रही हैं इनमें असली हीरे अड़े हैं। बाकी कोई धन-बौसल मेरे पास नहीं है। हाँ अगर तुम सोग नवी पार करना चाहो तो मेरे घोड़े की जीन के पारों कोनों को पकड़कर पार हो सकते हो।'

उन्होंने कहा कि वे तो पार होने में मदद चाहते हैं। सुल्तान राजी हो गया। वो उसके घोड़े के धाय और दो पीछे चले। जो पीछे थे उन दोनों ने उसे मारने के लिए तसवारें निकाल लीं।

मैना का पिअड़ा एक वेड़ से सटक रहा था। वह बिस्मायी "देसो देसो।"

सुल्तान ने अपानक पीछे सिर घुमाया और दोनों ठरों के हाथ में नगी तसवारें देखीं। उसका पारा पड़ गया और उसने तसवार निकालकर उन दोनों को मार डाला सामने के दोनों

ठगों में से भी एक को खरम कर दिया। चौथा किसी तरह बचकर भागा।

सुल्तान ने उसे भागते देखकर कहा 'ऐसा नहीं है कि मैं तुम्हें पकड़ नहीं सकता, लेकिन मैं तुम्हें इसीलिए छोड़े दे रहा हूँ, जिससे तुम्हारे गिरोह के लोग जान जायें कि विश्वासघातियों के ऊपर क्या बीतती है। फिर वह मैना के पिंजरे के पास गया और उसे उठा दिया।

इसके बाद सुल्तान घोड़े को तराकर नदी पार कर गया। रात होने लगी थी। दूसरे पार वह सुस्ता गया।

:: २४ ::

चौथे ठग ने बाकी ठगों को आपबीती घटना कह सुनायी। उनमें से घूँके ठग मोतिया ने कहा, 'ये नये-नये छोकरे ठग बिधा ठीक से नहीं जानते। मैं दिग्गमाऊँगा कि ऐसे आदमियों से कैसे निपटना चाहिए।'

बटियाँ बजाती बकरियों का झुंड सुल्तान के सामने रास्ता पार कर गया। पीछे एक सड़का उनका रखवासा था। सुल्तान आराम से इस शान्त वातावरण में घसा जा रहा था। उसने देखा कि पीछे कोई आ रहा है। जब वह पेड़ के पास आया, तो देखा कि वह आदमी सफ़ेद दाढ़ी वाला बूढ़ा ब्राह्मण की तरह मामूम पड़ता है। सुल्तान ने प्रणाम किया।

ब्राह्मण ने आशीर्वाद देते हुए कहा, 'परदेसी, तुम कहीं

से भा रहे हो और कहाँ जा रहे हो? यह जगह अकेले आदमी के चलने-फिरने लायक नहीं है।”

सुस्तान बोला, ब्राह्मण देवता, मेरे विषय में चिन्तित न हों। मेरा माम सुस्तान है। मैं नरबल्लगढ़ से भा रहा हूँ, और इंदरकोट जा रहा हूँ।”

मौसम मम था। सुस्तान व घोड़े को गर्मी का असर मासूम होने लगा था। ब्राह्मण के भेष में ठग ने कहा 'बेटा तुमसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं तो इसी दिन की प्रतीक्षा में था। तुम्हारे दादा की बतबानी हुई भीस यहाँ से पास ही है। तुम्हें और घोड़े दोनों को उसके ठगे पानी से आराम मिलेगा।’

सुस्तान को भीस के बारे में पता चलने से बड़ी खुशी हुई, और वह उस तरफ घूम गया। जब वहाँ पहुँचा तो सूरज डूब रहा था, और आकाश में सुनहली आकृतियाँ छितरा ययी थीं। जस पर कहीं जस तो कहीं सुनहले रंग के चकसे भूम और नाभ रहे थे। पक्षियों का एक बाबल उड़ा—गबराये छाटे, सूरे कभूतरों का और चककर लगा वे पास के पेड़ पर आ बैठे।

मोतिया ने पहल से ही तय कर रखा था कि भीस के पास पचास ठगों को छिपकर उसके हुषम की राह देखनी चाहिए। भीस पर जाकर सुस्तान ने पहल घोड़े को पानी पिताया फिर उस भरने को छोड़ दिया। उसने अपनी पेटी छोली। मसुन उतार कर एक तरफ रख वह नहाने के लिए भीस में पैठा। ज्योंही वह निरस्त भीस म नहाने लगा, कि हथियारों

से सस पचास आवमिया ने भीस को धर लिया, और सुल्तान के भागने का रास्ता बन्द कर दिया ।

अब सुल्तान को होश आया कि यह बाह्य कौन है, और उस पर क्या बीतने वाली है । फिर भी बिना हिम्मत हारे उसने षोड़ का बुसाने के लिए सीटी बजायी । षोड़ा बड़ा होधियार था । उसकी तसवार दाँतो में दबाकर बह पानी में डूब पड़ा । ठगा को भगाना अब तो सुल्तान के लिए बाएँ हाथ का खेल था । बहुत-से मारे गए किस्ने घायल हुए, बाक़ी भाग गए । स्नान करके सुल्तान ने फिर अपना रास्ता पकड़ा ।

वह उदयपुर की पार कर इदरकोट के माग पर चसन लगा ।

॥ २५ ॥

उदयपुर और इदरकोट के बीच सुल्तान ने एक छाटा-सा सुन्दर बगीचा बना । उस मुन्दर स्पर्शों से बहुत प्रेम था । कुछ बिना बाद, पहले दिन सुबह से शाम तक पानी बरसा था । धरती से सौंभी सुगंध उठ रही थी । फिर भी मौसम के दस्तते मूरज का तेज काफ़ी था । सुल्तान थक गया था । उसे प्यास भी लग रही थी । बाग़ देखकर पानी पीने के इराद से वह उसके भीतर गया । एक सुन्दरी धीतल अस सकर बाहर निकली । सुल्तान को देखकर उसके गाल लाल हो गए । पानी पिसान के बदल वह सुल्तान की ओर एकटक देखती लोई-सी रह गयी ।

अजनबी औरतो के बीच सुल्तान संकोष महसूस करता था। उसे लगा कि वह कुछ कहना चाहती है, मगर कुछ भय ला रही है। सुल्तान ने हाथ बढ़ा पानी का पात्र ल लिया।

“नोबवान, इतनी जल्दी क्या है ? ऐसी गर्मी में क्यों न कुछ सुस्ता लो।”

बिना कुछ बाल सुल्तान पाना पीता रहा।

उसकी आँखा में जरा निराशा की झलक आ गयी मगर उसने फिर कहा, “कुछ दर यहाँ ठहरोगे तो मैं तुम्हें अच्छी लगने सगूँगी।

उसने हाथ उठाकर कुछ टोना-सा किया और सुल्तान के देखते-देखते उसका थोड़ा पत्थर क जैसा हो गया। उसने फिर अपना हाथ उठाया और इसके पहले कि सुल्तान कुछ कह यह जैसे खरगोश-सा बन गया।

उसे आश्चर्य हुआ ! क्या यह कोई धाबा है या वह सचमुच खरगोश हो गया है। वह एक कुंज में भुस गया जो कि झाड़ियों से घिरा हुआ था और वहीं बठ वह अपनी स्थिति पर विचार करने लगा। उसका हृदय फट रहा था। ऐसी उस पर पहले कभी नहीं बीती थी। उसने ऐसा क्या किया था कि उसे यह सजा मिल ? उसके गस में कुछ अटकन लगा। निहासद का याद में वह व्याकुल था। वह क्या करे, यह नीता नहीं मूस रहा था। अगर उसके हाथ में कुछ भी हाता पास में कोई छाटा पत्थर भी ता न था।

उसने देगा कि जादूगरनी उस झाड़ियों के बीच स झाँक-

कर दख रही है। उसने मजाक से हँसकर कहा, "खरगाश बेचारा अब क्या करे, इसकी मुझे कोई परवाह नहीं। अब तुम मुझ से छूट नहीं सकस, यही मैं चाहती थी।"

आदुगरनी ने अपने हृदय पर हाथ रखा और उसके बेहरे पर एक छाया घूम गयी। भय या घायब ऐसा ही कोई भाष उमड़ पड़ा हो पर सुल्तान यह पहचान नहीं पाया।

'मैं तुम्हारी खूब तन-मन से देख-भास करूँगी। देखते नहीं, मैं तुम्हें कितना चाहती हूँ।' उसका बेहरा माल हो उठा।

आदुगरनी ने उसकी ओर देखा कि घायब वह अब भी कुछ कह कोई इगारा करे या सिर ही हिला दे। उसने लम्बी उसाँस भरी। 'बताओ तो, आओ न जरा पास आओ ताकि सगे कि तुम सजीदा हो। मैं तुम्हें प्यार करती हूँ। तुम्हें इसका पता नहीं क्यों, नहीं है?' उसने सिर हिलाकर पूछा। 'मैं सदा दुःख भोगने को तयार नहीं हूँ। चमकीले साल कठ घास हरे रंग के तोतों का एक भुण्ड ऊपर से उड़ गया।

वह कुज के भीतर घुसी थीर सुल्तान की कमर में हाथ डालकर उसे घर में खींच ल मयी। अन्दर घर में काफ़ी सजावट थी। उसने अपना दुपट्टा फेंक दिया। अब उस पर कुछ मीन कपड़े ही रह गये थे। कमर के अँधरे में उसका काले मास चमक रह था। सचमुच उसमें एक अजब माहिनी मासूम पड़ रही थी।

सुल्तान ने साधा कि सचमुच बर्हा आकर उसने कितना बड़ी बेबकूफी की। कहीं वह इस मोहिनी के आस में न फस जाय। अब घायब वह कमी निहासद को न बचा सकया, और

न उससे भेंट ही हो पायेगी। वह एक क्षण झिझका। तो क्या उसका यही अन्त है? नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। मगर यह कैसी बात है कि वह जो कुछ कहती है, सब उसकी समझ में आता है। बड़ी विनम्रता से वह जाबूगरनी के पास गया।

“वाह!” वह बोली, ‘इस तरह ज़रा मेरी भी तो सुना करो। अब तुम यह सब मुझ पर ही छोड़ दो। मैं तुम्हारी पत्नी से मुसट सूंगी।’ उसने मुँह घुमाकर सुल्तान के होंठ घूम लिये।

वह घबराकर पीछे हटा। “अब बनी बात न बिमाड़ो। मेरा और अपना जीवन नष्ट न करो। वह बोली “मैं अपने बीच किसी और को नहीं रहने दूंगी। फिर उसके पास जाकर उसका मुँह पकड़कर वह कह उठी, काश कि मैं तुम्हें इतना प्यार न करती।’

सुल्तान का विस धडकने लगा। भालूम पड़ा कि एक आमन्द की सी लहर उसके विस में दौड़ रही है। यह जाबूगरनी के हाथ किसी छोटे जानवर को तो नहीं छू रहे हैं उसने सोचा। मगर उसके घोंड़ का क्या हुमा? अचानक उसे फिर धक्का लगा। ओह! यह सब कुछ व्यर्थ है फ़िज़ूल है। वह इस जाबूगरनी से कभी अपने को नहीं छुड़ा सकेगा। वह अपने को एकदम अचक अनुभव करने लगा।

मगर मान लो कि यह एक छल ही था, घोड़ा अभी तक जिम्दा हो। अच्छा मगर वह जाना चाहे तो क्या होगा? अब इससे क्यादा और क्या बुरा होगा।

जादूगरनी ने विचित्र दृष्टि से सुल्तान को देखा, मांभो उसके मन की बात भांप रही थी। उसने अपना सिर सुल्तान के सीने में छिपा उसे हाथों से जकड़ लिया। सुल्तान को लगा कि वह एक आस्मोस्तास प्रभा से घिर गयी है। सुल्तान चुपचाप सूम्य सड़ा सोचता रहा।

‘मेरे प्यारे सरगोश मैं तुम पर फ़िदा हूँ। मैं तुम्हें दिमो जान से चाहती हूँ। मैं तुम्हारी नन्ही बन्दरिया बनकर तुम्हारे साथ सेरुमी तुम्हें सुख रसुंगी। क्या कोई एसा भी होगा जो तुम्हें प्यार न करे?’

एकाएक सुल्तान ने उसे धक्का दिया और दौड़ पड़ा। बाहर जा वह उस पत्थर के घोड़े पर कूदकर बठ गया। यह क्या? उस पत्थर के बदन में तो गर्मी है। पत्थर जीवित पवार्य को तरहू हिसने भी सगा। उसने रास सीची।

‘नहीं मैं मना करती हूँ’ जादूगरनी बिल्नायी। ‘रुको मैं तुम्हें रिहा कर दूंगी तुम्हारी मदद करुंगी।’

सुल्तान तब तक निकल चुका था।

‘हे भगवान् कसा बधा। और उसने सन्तोप को सम्भी सांस सीची।’

:: २६ ::

दापहर को सुल्तान इदरकोट पहुँच गया। इस अनिश्चितता में कि यह ठीक समय पर पहुँचेगा या नहीं, हवाशा में वह

मुस्तान और निहासदे

अपने आप को खोसता-सा महसूस करने लगा। उसके अग
अग सिधिल हो रहे थे और वह पकड़कर धूर हो गया था।
अभी आधा दिन बाकी था इसलिए उसने महसूस में जाने के
पहले सोचा कि क्यों न कुछ क्षण मुस्ता ल। उस बिल्कुल
पता नहीं था कि निहासदे तो चिता पर बैठी है। वह घोड़ से
उतरा और एक पेड़ के नीचे मुस्ताने लगा। दुर्भाग्य से उसे
गुरन्त नीद आ गयी।

मुस्तान को लगा कि कोई उस ओर से ढकढोर रहा है।
वह अचकचा कर जाग पड़ा। सोते हुए उस काफ़ी देर हो
गयी थी। कामध्वज राव उसे गले लगात हुए स कह गये हे
भगवान् पागल की तरह मैं बघाये के चारों ओर मटक रहा
था। मेरा दिमाग फटा जा रहा था। अगर मैंने यह न जानना
चाहा होता कि इतनी मस्ती में कौन सो रहा है तो घायद
गुम मुझे मिसते ही नहीं। उठो दौड़ो अब वक्त नहीं रहा।

मुस्तान का हाथ पकड़कर बूढ़ा दौड़न लगा। निहासदे
चिता पर बैठी हुई थी। आग अभी तक उसके शरीर में नहीं
समी थी पर वह बेहोश हो चुकी थी। मुस्तान चिता की ओर
दौड़ा। निहासदे का गोद में उठा वह चिता स नीचे ल आया।
सप्राटा छा गया। उस क्षण उपस्थित सागों में महसूस
किया कि प्रम क्या होता है—जब चिता स नीचे आने पर उन्होंने
निहासदे की मुस्तान पर जमी हुई एक नज़र को देखा। वह
निहासदे का नया रूप मुस्तान की वाँहा में प्रगाढ़ानिगिध।
मुनगती सपट की तरह प्रसन्नता एकाएक फूट पड़ी। वहाँ सड़ा
हरेक व्यक्ति आनन्द से चिल्ला उठा।

रानी कर्णावती ने आगे बढ़कर दोनों को अपनी बांहों में बाँध लिया। बोली, मेरे बेटे, मेरे पापों को क्षमा कर दे। यह मेरा ही दोष था कि आज यह सब घटित हुआ। मैं नहीं जानती कि मैं अपने पाप कैसे धो पाऊँगी।

माँ, पछताया काहे का। होनहार को कौन टास सकता है? जा होने को सिखा था वही सब हुआ। इसमें किसी का दोष नहीं।

जब सुल्तान पुत्र की भाँति उसके चरणों पर झुका तो कर्णावती के नेत्र डबडबा आये।

सुल्तान और निहासदे को एक हाथी पर बिठाकर जुलूस में सजाया गया मानो उनका अभी-अभी ब्याह हुआ हो। जब वे इस बार महल के सामने उतरे तो रानी कर्णावती ने आगे आकर आरता उतारा और उनका इस रीति से स्वागत किया मानो वे नये दूल्हा-दुल्हन हों। नगरवासी आनन्दमग्न थे। अछमो सीज का महोत्सव तो अब आरम्भ हुआ, जो सप्ताह भर तक चलता रहा।

एकान्त में पहुँचते ही फिर वे आँसुमय में बँध गये। पीसी पारदर्शी रक्ता बानी होकर भी निहासदे दमक उठी और अनुराग से बिल्लरे बाला के बीच बसकता उसका बेहरा भग्ना से साम हो उठा। सुल्तान भी विचलित हो उठा और उसमें प्यार की बहा ज्वालना भड़क उठी, जिसे प्रथम मिसन पर निहासदे न जगाया था। जब वे दोनों मरुभूमि में खोकर वापस पहुँचने वाले पिपासाकुल अपनी सृष्टि बुझते हों।

॥ २७ ॥

निहासदे मुल्तान को अपने वादे पर न सौटमे का उसाहना दे रही थी। मुल्तान ने अपने साथ घटी सारी घटनाएँ सुनायीं और कहा “प्रिये, जानती हो, जो लोग बुराई के बगुन से निकलकर अच्छाई की ओर आना चाहते हैं उन पर क्या बीठती है। अच्छाई तक वही पहुँचता है, जिसका सम्बन्ध किसी देवी से हो। मगर तुम इतनी आतुर हो चिता पर क्यों बैठ गयीं ?

धूसों में धूसू भरकर उसने मुल्तान की ओर दखते हुए कहा “अच्छा, यह मेरी आतुरता थी ?”

“नहीं, नहीं, मेरा मतलब यह नहीं था। मुझ माऊ कर दो।” और उसने निहासदे को छाती से लगा लिया।

निहासदे ने बतसाया कि उसके पल जाने के बाद क्या क्या हुआ था। जब तक फूसकुँवर ने मेरी बेइयाबती नहीं की तब तक मैंने बड़ सब से काम लिया। माऊ को पिट्ठी भेजने के बाद मैं समझनी थी कि तुम तीखे क पहल ही यहाँ पहुँच जाओगे, जिससे कि इस साम उरसब न रुक। पर फूसकुँवर अपनी दुष्टता से बाध नहीं आया। राजा की आज्ञा की उपेक्षा करके उसने उरसब मनाने की झुपचाप आज्ञा दे दी। उसने एक दिन राजा से पूछा कि आखिर कब तक हम रसोहार न मनायें ?”

कामध्वज राव को यह संवाद पसंद न आया, और उन्होंने दो टूक जवाब देते हुए कहा, “जब तक मुल्तान वापस नहीं सौटया।”

‘जनता तो दुखी थी, पर कुछ नौजवान रागरग मनाने के लिए आकुस थे। एक दिन महस के पास से लड़कियों का समूह देण-माण्ड मिथित विचित्र-सा गीत गाता हुआ गुजरा। यह गीत एक सज्जामु पति और भ्रष्ट पत्नी के विषय का था। जब उसमें उनकी सुहागराज का वणन आया, तो वे सभी लड़कियाँ हर्ष से पागल हो उठीं। मैंने दुःख की साँस लेकर सोचा कि तीव्र सबके लिए भले ही आमी हो पर मेरे लिए नहीं।

‘साबन की रात थी। बिजली बादलों से लुकाछिपी खेल रही थी। मैं जगी हुई थी और बेचन थी। मेरा दिल अजब ढग से घड़क रहा था। तुम्हारा कुछ भी समाचार नहीं था। घायद पुरुषों और स्त्रियों की विचार-भारा अलग ढग पर बसती है। मैंने अपने आप को समझाया। अचानक मुझे भारी निरागा होमे लगी। मैंने सोचा—तुम्हारा प्यार सच्चा था, या मेरी कल्पना ही थी? क्या यह आवश्यकता से उपजा दिखावा तो न था? क्या यह कोई ऋक थी? मैं सोच-सोचकर घुसने लगी। लेकिन मैंने इस पर विश्वास नहीं किया। मेरा मन बार-बार यही कहता रहा कि तुम्हें यहाँ आने से रोका जा रहा है।

इब फिर दिल घड़क उठा, छाती में ठूक उठने लगी। ह्रीं बार-बार ठूक उठने लगी। दिल फटकर जस बाहर आ जाएगा। यह कहीं उड़ जाना चाहता था। मन में तरह-तरह के विचार उमड़ रहे थे। एक बार विचार आया कि तुम जीवित नहीं हो? उसी क्षण मैंने जीन काट ली। नहीं, नहीं, मुझे ऐसी बात नहीं सोचनी चाहिए। तो फिर तुम आय

क्यों नहीं ? मैं अपने को डारस बँधाती रही, और किसी तरह इतने बरस तो बिताए, पर अब नियोग भसड़ा हो रहा था ।

“इब-उब फिर वह पोट देने लगा । अगर तुम जीबिस बे तो तुम्हें आने से कौन रोक सकता था ? मैंने सोचा जो होना था, वह हो गया । अब मेरे सामने एक यही रास्ता था कि मैं तुम्हारे पास वहीं पहुँच जाऊँ । उम्माव में तरह-तरह के चिप उभरते हैं । मैंने आँसू बन्द कर लीं । धुपहले देस का सपना देखने लगी, जहाँ पहाड़ थे और भीसँ थीं, लम्बे-लम्बे हरे पेड़ हवा में झूम रहे थे, और उन सबके बीच तुम्हारा लम्बा-पौड़ा ब्यक्तित्व मेरे साथ लड़ा उसी तरह घातें कर रहा था, जैसी कमी अपने वारा में हमने बातें की थीं ।’

वह सिसकने लगी । सुस्तान ने उसे कसकर पकड़ लिया ।

“अब मेरे लिए किसी भीज का कोई महत्त्व नहीं था । मैंने सोचा । कई महीनों से मेरे मन में यही घात पनप रही थी । मानो जीवन का कोई मतलब नहीं रह गया है ।

“मैंने कामध्वज राव को कहना भेजा । यह भी निवेदन किया कि वे सचिव उहा को अन्तिम ब्यवस्था करने के लिए हुकम दें ।’

∴ २८ ∴

निर्वासन के १२ वर्ष बीत रहे थे, इसलिए सुस्तान ने किचसकोट जाने का फ़सला किया । आज्ञा सेने के लिए वह राजा कामध्वज राव के यहाँ पहुँचा ।

राजा ने कहा 'बेटा मैं फूलकुंवर के दुर्भ्यवहार पर बड़ा लज्जित हूँ। अगर उसकी माँ उसे इतना प्यार न करती, तो अब तक मैं उसे दरबार से निर्वासित कर देता।'

'महाराज ऐसी बातों से चिन्तित न हों। केवल एक ही व्यक्ति है जो सबका संचालन करती है हम सभी तो उसके हाथ की कठपुतलियाँ हैं।'

उदा राजा के पास था। राजा ने कहा 'सुल्तान निहालदे एक अनमोल हीरा है। यदि वह चिंता पर भस्म हो जाती तो मैं भी आत्महत्या कर लेता।'

सुल्तान बोला, आपके आशीर्वाद से उसकी उमर सम्बी है।

उदा ने कहा, बड़ी कठिन समस्या थी। राजा को कोई उपाय नहीं सूझ पा रहा था। अगर वह निहालदे को भस्म होने से रोकते, तो वह उन्हें साप दे देती। दूसरी ओर, अगर तुम उसकी मृत्यु के बाद आते, तो यह तुम्हें क्या जवाब देते?

'इन्होंने मुझ बुसाया और कहा कि निहालदे को किसी भी तरह एक दिन के लिए और रोकने की कोशिश की जाय। उन्हें पूरी आशा थी कि तुम लौटोगे पकर।

'मुझे निहालदे का चेहरा याद है। उसका चिबुक बूढ़ था। जिस चेहरे पर सदा आशा की चमक रहती थी, उस पर घोर उदासी छायी थी। वह जानबूझकर अपने सौम्य से बेपर्वाह हो गयी थी, तो भी वह अपने लहरीसे केशों के गहरे कासेपन की चमक न मिटा सकी, जिनके बीच से मुसाबी कपोस फूलों की तरह बिल रहे थे।

“मने उससे अपने सपने के बारे में कहा। मने सपने में देखा था, कि वह तुम्हारे साथ एक ही भोड़े पर बैठी है। इसलिए मने प्रार्थना की कि कम-से-कम एक दिन तो वह रुक जाय।

“निहासदे बोली ‘उहाजी, भगवान् करे, तुम्हारा सपना सत्य हो मगर तुम कब तक मुझे रोकने के लिए कहते हो। अब मुझसे आग्रह न करो।’ कहते-कहते उसे लगा मानो उसका हृदय धूर धूर हो रहा हो।’

सुल्तान का गला भर आया। बोला, ‘जो हो गया सो हो गया अब इन बातों को दोहराकर क्या होगा?’

“लेकिन अब तक मैं अपने भीतर का बोझ हलका नहीं कर लेता मुझे चैन नहीं मिलेगा। उहा न कहा। ‘हाँ, तो मैंने निहासदे से कहा ‘मैं भसी-भाति समझता हूँ कि तुम पर क्या बीती है, मगर तुम्हें समझना चाहिए कि भगवान् ने हमें सिर्फ सुख भोगने के लिए ही नहीं, बल्कि दुःख का भी स्वाद चखने के लिए भेजा है।’

‘तब वह बोली ‘मैं तुम्हारा सर्वज्ञान समझने का प्रयत्न करती हूँ। पर सुल्तान ने एक निश्चित दिन आने को कहा था। मुझे लगता है कि या तो यह इस सप्ताह में नहीं है या उन्हें आने से रोक लिया गया है।

“सभी आकाश में एक गजना से हम दोनों चौंक गये। तेज बारिश से धूल में चकत्त पड़ गये। वह बोली ‘क्या बादलों की यह गरज मेरी बात का समर्थन नहीं करती?’

‘मेरी जमान बन्द हो गयी। निहासदे की आँसू घास

में, जिसकी गहराई में से सन्ध्याई साक़ झसक रही थी। मन्हीं
 जटाबदार कासी बरीनियाँ भीग गयी थीं। उसके सुवृद्ध संकल्प
 में थोड़ी उदासी सी मिमी-जुली थी जिससे मैं मौन बठा रहा।
 मैंने आकर महाराजा को सब बातें बतायीं। वह भी और कुछ
 नहीं कह सके। अन्त में उन्होंने तयारी करने की आज्ञा दे दी।”

“राजा न फुसफुसाकर कहा ‘उहा, इस बूढ़े आदमी पर
 जो रहम करो।’ लेकिन फिर तुरन्त वे बोले, ‘नहीं, नहीं, कहो,
 छोड़ो। पर मुल्तान को सब कुछ जानना चाहिए।’

== २९ ==

निहासदे ने सोलह शृंगार किये। अपने सबसे मुन्दर
 रूपके और गहने पहन पालकी में बठ बाजे-गाजे के साथ जुनुस
 में उस बाग की ओर वह चली, जहाँ चन्दन की चिता तैयार की
 गयी थी। पण्डित भी बेद-स्वनि करते उसके साथ-साथ चले।

फूलर्दुबर की माँ ने बाजे की आवाज सुनी तो पूछा
 कि यह किसका जुसूस जा रहा है? यह सुनकर कि निहासदे
 सती होने जा रही है वह स्पर्यं छोकर एकदम बेचन हो उठी।
 बिना दासी या सचिका को साथ लिये वह निहासदे की पासकी
 की ओर दौड़ पड़ी। उन्हें जबरदस्त धक्का लगा कि ऐसी
 पतिव्रता स्त्री अपने आप को चिता पर नरम करने जा रही है,
 और इसमें उन्हीं का दोष भी है उसने सोचा। मुल्तान ने
 उन्हीं के कारण तो इतरकोट छोडा। पासकी रोकी गयी।

‘रानी कर्णावती ने बड़े ही कातर स्वर में निहालदे से कहा, बटी, इस घूटा को समा कर दो। यह सब मेरे ही कारण हो रहा है कि तुम पिता पर बठने का निश्चय कर चुकी हो। अगर तुम सती हो गयीं तो मैं दुनिया को अपना मुह कैसे दिखाऊँगी?’

‘रानी कर्णावती निहालदे को जब मना न सकी तो वे मी जुमूस में घामिस हो गयीं। रानी कर्णावती लम्बी छरहरी देह की थी, और उनके माथे पर सन के जैसे सफ़ेद केश सहरा रहे थे। लेकिन उनके मुख पर घोर उदासी थी। सारे राज्य की हँसी-खुशी खसी गयी थी। फूलकुंवर अब धकेला ही रह गया था। उत्सव में किसी ने भाग नहीं लिया। उस दिन का उदय तो हुआ खुशी और उदासी के हाथ में हाथ डाल खसने के साथ मगर अन्त में जीत हुई उदासी की ही।

‘जुमूस बाग के पास पहुँचा। निहालदे सीढ़ियाँ चढ़कर पिता के ऊपर जा बठी। पिता काफ़ी ऊँची बनायी गयी थी। भगवान् से प्रार्थना करके उसने कहा कि ‘पिता मैं भाग लगा दी जाय।’ पिता खसने के पहल ही इन्द्र न जोरों से पानी बरसाना शुरू कर दिया जिससे बड़ी कोठियों के बाद नी आग नहीं जलायी जा सकी।

‘मैंने भगवान् से प्रार्थना की कि, ‘कस तक इसी तरह बरसते रहो।’” उदा ने बताया। ‘पर दोपहर के बाद पानी रुक गया। भागे जो हुआ वह तो तुम जानते ही हो। मुस्तान बैठ गया। उसे लगा कि उसकी सारी शक्ति निचोड़ सी गयी है।

:: ३० ::

हालांकि कामध्वज राब न मुस्तान को किचलकोट जान की आज्ञा दे दी, मगर उन्हें उसका वियोग सतान लगा। उन्होंने उस जाने से बार-बार रोका। बोसे “तुमन अपने परिवार के विषय में मुझसे छिपाकर बड़ा गुनठ काम किया। अगर मैं जानता कि तुम किचलकोट के राजकुमार हा तो मैं तुम्हें यहाँ का राजा बना सम्पास से लेता। अब भी चूँकि मैं तुम्हें अपना पुत्र समझता हूँ, इसलिए, मेरा धाधा राज्य तुम्हारा है।

“मैं आपके विषय में क्या कहूँ। जब मेरे दुःख के दिन थे तो मेरे साथ कौन बसा व्यवहार करता जसा कि आपने किया। मैं आपके एहसानों को कभी नहीं भूल सकता। आपस मिला स्नेह तो मुझे सदा ही याद रहगा।’

“तो तुम मुझ क्यों छोड़ रहे हो ?

‘मरे पिता वृद्ध हैं उनको उम्र आपस भी अधिक है। पहल उनके कोई पुत्र नहीं था। बाद में महात्मा गोरखनाथ के बरदान से मेरा जन्म हुआ। इसलिए मरे पिता का म्यास करते हुए भाप रोकने का आग्रह नहीं करे। मुझ अब जान ही दीजिए।’

“तुम मुझ बड़ी दुविधा में डाल रहे हो। जा कुछ तुमन कहा है, उससे तो तुम्हें जाना ही चाहिए। लेकिन मैं तुम्हें अकेले नहीं जाने दूँगा। तुम अपने साथ हाथी, बोंडे और साब-सदकर लेकर जाओ।

मुस्तान बोला, “पिताजी जब मैं नरबसगढ़ से चले रहा था तब बहन मारु न भी इसी बात पर जोर दिया था, पर

न ता मुझे सनिकां की टुकड़ी चाहिए न खोर कुछ । भगवान् मेरे रखक हूँ और सकटकास में मेरी मदद के लिए महारत्ना गोरखनाथ सवा प्रस्तुत हैं ।

अपने धर्म पिता से विदा लेकर मुस्तान रानी कर्पावती के पास गया और उनसे किचलकोट जाने की आज्ञा माँगी । उसने रानी से सारा क्रिस्ता कह दिया और बोला "माँ, एक बात मैं और साफ़ कर दूँ । निहासदे की सगाई पहले मुझसे ही हुई थी । मेरे पिता ने मुझे निर्वासित कर दिया था, इसलिये वे चाहते थे कि राजा माधपत राव १२ वर्षों तक प्रतीक्षा करें, जिसके लिए वे तयार नहीं थे ।

रानी ने कहा, "बेटा मुझे यह सब बातें नहीं मासूम थीं, इसीलिए मैंने इसनी बड़ी भूल की । मुझे माफ़ कर दे बेटा !

"भाग्य का सिद्धा बड़ा प्रबल होता है, इसीलिए जिससे मेरी सगाई हुई थी उसी से ब्याह हुआ । मुस्तान ने रानी को प्रणाम किया, और फूलकुंवर से विदा लेकर वह राजकुमारी निहासदे के साथ किचलकोट को चल दिया । फूलकुंवर गहर के बाहर तक उन्हें पहुँचाने आया ।

॥ ३१ ॥

निहासदे और मुस्तान दोनों एक ही घोड़े पर सवार थे । रास्त में उन्हें एक नदी, और कई जगल पार करने थे । बरसात का गरजता हुआ सबरा या और अण्ड पस रहा था ।

निहासदे अपन वारों से उमड़ रही थी। हवा के झोंके बासा को उड़ा रहे थे और पानी के थपेड़ों से वह परेशान थी।

नदी में लहरें उमड़ रही थी। जब वे नदी किनारे पहुँच, तो अँधेरा हो गया था। किन्तु कुछ ही देर बाद चाँद उनकी बगल से निकल उपहसी रेखा खँचता आया। हवा जरा थमी, मगर फिर दूसरी दिशा से बहान लगी। सुल्तान न निहासदे से पूछा कि रात इधर बितानी चाहिए या नदी के उस पार। निहासदे किजसकोट पहुँचने के लिए बंधन थी इसलिए उसने आप्रह किया कि हम चलते ही रहें तो अच्छा होगा।

सुल्तान ने कहा, 'ठीक है थोड़ा हम यों तो इस उमड़ती नदी के पार अवश्य ल जा सकता है मगर अभी घोर अँधेरा है और शायद थोड़ा भड़क जाय।

'लेकिन मैं तो भर की याद म पागल हूँ। ऐसी क्या बात है, अभी चाँद उग ही आयेगा। निहासदे ने कहा।

मुस्तान मान गया और वे नदी पार करने लगे। नदी की धारा बिखरी चाँदी की तरह चमक रही थी जबकि पश्चिम की ओर क्षितिज पर बगनी घुँघसापन छाया हुआ था।

ब मँकधार में पहुँचे कि बादलों न चाँद को ठँक लिया। थोड़ा बेचैन हो उठा और डूबन लगा। उन्होंने चाहा कि हाथ में हाथ दकर ब साध-साध वह सकें, मगर पानी के थपेड़े बहुत तेज थे। अन्त म निहासदे का हाथ छूट गया। वह भीख उठी 'प्रिय मुझे माफ़ करना, यह मेरी जिद का ही नतीजा है।'

मुस्तान यहफर एक दूर के नगर म जा पहुँचा। यह रात भर पानी में बहान के कारण थकान और मिरासा से एकदम

पूर हो गया था। सुबह वह सट पर आकर सग गया। मट मैली नदी के किनारे बसे नगर की सफ़ेदी चमक रही थी। नगर का एक बड़ा ब्यापारी नदी पर नहान आया था। उसके कोई सड़का न था। जब उसने सुल्तान को देखा तो अपने आप स्नेह उमड़ पड़ा। उसने सोचा कि ईश्वर ने उसे एक घेटा भेज दिया है। उसने अपने नौकर से कहा कि इस को पानी से तुरन्त निकासो। सुल्तान को पानी से निकास गया। सुल्तान को निहासदे का कुछ भी पता नहीं चला। उसने सोचा कि बिना निहासदे के किचसकोट सौटन की अपेक्षा तो ब्यापारी क साथ रहना कहीं अधिक अच्छा है।

निहासद को यह भूम नहीं सका। एक सुन्दर लड़की से उसकी पावी हुए छह साल हो गये थे। पहल तो उसके साथ रहन का अवसर ही नहीं मिला। जब मिला भी तो हबा के भ्रुके से बुझी ली की तरह बह जुवा हा गयी। वह उसे फसे भूम सकता था? बह जंगल की तरफ़ पाने ऋरोखे पर दान्त भाव से लड़ा उभर ताका करता। लेकिन उस सगता, मानो बह बन्द तान वाले दरवाजे के सामने लड़ा है। मन में आया, इसकी चानी तो हागी ही। बह किसी दिन उकर खुलेगा। दिन की रोशनी कम हाने लगी अँधेरा छान सगा। बह पुप चाप बही लड़ा रहा, मानो निहासद की बाट जोह रहा हा जो किसी दिन आकर उस मिल जायगी।

उस याद नहीं कि कब बह ऋरोखे के फ़य पर सट गया, और कब उस नीद आ गयी। मय उसे सगा बह मकसा नहीं था। उसके बेहरे पर एक छाया पड़ी। उसन बाँह बड़ाकर उस

पकड़ना चाहा—यह तो निहालदे थी। वह आवेष्ट में चित्साया और आँखें सौरी। सब कुछ शान्त था। वहाँ कोई न था। चाँद पर काले-काले यादस धुमड़ रहे थे।

== ३२ ==

सेठ भगीरमस न मुल्तान से पूछा “इतन अच्छे और सम्मानित परिवार की सुन्दर लड़की से विवाह का अवसर पान पर भी तुम दुखी क्यों हो ?

दिन का जमकीसा प्रकाश उसकी आँखों में सहारा उठा, पर उस दुख के आसुआ न तुरन्त ठेक लिया। उसके कानों में अबब आवाजें गूँजन लगीं। उसके सिर फटन लगा। धन्दर उसके भारी उबस-पुपस मची हुई थी।

“बेटे, जो गया, वह फिर नहीं सौटता। तुमने अपना जीवन न्यौछावर कर दिया है और इस एक दूसरा ही मुझ समझो। हिम्मत मत हारो।

मुल्तान ने कहा “लेकिन मेरी तो एक पत्नी थी और मैं कस जानूँ कि वह मर चुकी है। मैं एसी हासत में दूसरी लड़की से विवाह नहीं कर सकता।”

वह कुछ सोचता हुआ पुप हो गया।

“वह स्त्री बड़भागिनी है जिसन तुम्हारे हृदय में एसा प्रम जगाया। मगर, मरे बटे, तुम्हारी एसी जवानी और तुम्हारा एसा सुन्दर रूप देखकर मुझ पीड़ा हाती है।”

मुस्तान ने सोचते-सोचते खिर झुका लिया। उसे केलागढ़ के बाग में वह बाँकी कजरारी आँखों वाली सबाधुर याद आयी जिसके होठों पर सदा मुस्कराहट लिखी रहती थी। एक धीमा—मधुर स्वर उसके कानों में गूँजने लगा—वह स्वर जो सदा उसकी याद में घुसा रहता। मगर यह एक लिखा हुआ फूल अपनी भरपूर जबानी में मस्त चुनती। उसे वह रात याद आयी—इदरकोट की आखिरी रात। किस तरह वे एक-दूसरे से बँधे हुए थे, अपने आपको और सारे जगत् को बिसारकर।

“नहीं मैं दूसरी पत्नी कैसे सा सकता हूँ ? हे ईश्वर— मैं उसे खर खोज कर रहूँगा।

भंगीरमस ने कहा ‘निहासदे अब जिन्दा नहीं होगी। तुनिया अपने ढग से घसती जायेगी। उसे भूल जाओ। मुझे अफसोस है कि ऐसी पत्नी को मुम गवाँ बठे, भकिन किस्मत के सामने किसकी बसती है ?

उसका गमा सूख रहा था। वह बककर लगाता रहा थापीमापी करता रहा। बड़ा ही अकेलापन महसूस हो रहा था।

मनुष्य को चाहिए कि वह अपने कर्तव्या का ठीक ढग से पालन करे। दिन रात व्यथ की निराशा में डूबे रहने से कोई फायदा नहीं। भोर, मुस्तान वह अब पुराना मुस्तान नहीं था। उसका अस्तित्व वा निहासदे के साथ अस्त हो चुका था। अब यह एक दूसरा ही व्यक्ति था। भंगीरमस के पास पान्तिपूवक जीवन पिताने के लिए क्यों न टिक जाओ। उसे किचसकोट

का नून जाना चाहिए। लेकिन यह भी सुगी की बात नहीं थी। वह सोचता रहा।

निहास अगर ज़िन्दा भी हो तो यह सब नहा समझेगी किन्तु पुरुष तो सोच सकता है, सही रास्ता बतल सकता है। वह एक सम्पन्न परिवार की सुन्दरी लड़की से विवाह करने जा रहा है। वह अभी बिल्कुल युवा है। ध्यय में ज़िन्दगी बर्बाद करने से क्या फायदा ?

यफ़ायक सुल्तान प्रसन्न हो उठा। उस लगा कि गादी कर लनी चाहिए। 'मैं समझता हूँ मेरे लिए यही एक रास्ता बचा है'—उसने गाम्तिपूबक कहा और अब उस काई शक नहा रहा कि यही उसका फ़ज हो गया है।

गादी का दिन आ गया। दूल्हा बनकर सुल्तान बारात के साथ कागी की ओर चला। कुछ दिनों में बारात वहाँ पहुँची।

दूल्हा बना मुल्तान हाथी पर चढ़ा। शहर के बीच से बारात धीरे-धीरे जा रही थी। तभी सुल्तान के दाहिने गाल पर कुछ आकर लगा। धूमकर उसने देखा—खिडकी पर निहासद बहाण पड़ी थी और उसके मुँह माथे पर मूस की किरणें चमक रही थी।

मुल्तान हाथी से नूदकर उस घर में दाढ़ के चला गया। बारात के लोग आश्चर्य-भक्ति से कि दूल्हा यों क्या दौड़ रहा है।

किसी को कुछ भी कहने का उरुखत न पड़ी, निहासद के चहर के प्रदीप्त सौन्दर्य ने ही सब कुछ कह दिया। बहनों ने उस एकान्त में छोड़ दिया। निहासद ने ध्यान से मुल्तान को देखा। क्या यही वह म्यन्ति है ? इतनी मुनीबतो का

मारा, बेभरवार हो जाने पर भी क्या अपना वैसा ही स्वभाव बनाये रखा है, जिससे वह सबका प्रिय हो जाता था ? उस सन्देश होने लगा मगर वह कभी यह विश्वास न कर सकी कि सुल्तान का भी पतन हो सकता है ।

निहालदे के भीतर उठती हुई आँधी को सुल्तान भाँप गया । बिना कुछ कहे उसने निहालदे को अपनी मुबारकों में बाँध लिया । निहालदे के होंठों पर उसके होठ थे और तुरन्त निहालदे की तीव्र चाह का संदेश उसके पास पहुँच गया । उसने आँसू खोलीं और पहले से विचित्र शब्दों में एक-दूसरे से बोले—सिर्फ़ सबास-पर-सबास पूछे गये बिना अबार की आशा किये, बीच-बीच में धोड़ा रुकते हुए ।

सुल्तान सगभग रोता-सा बोला, 'मुझे लगा कि जीन के लिए कुछ भी नहीं बचा है । कब तक ऐसा रहा मैं तो अब यह भी भूल गया ।'

'मैं जानती थी कि पहले तुम्हें बहुत धक्का लगेगा फिर मुस्कराकर निहालदे कहन लगी, 'किस्तु सगठा है कि तुम उसे संभास स गये ।'

सुल्तान को बड़ी घम मासूम हुई । इस झिड़की से वह चुप हो गया ।

'मुझे माफ़ कर दो प्रिय ! तुम मुझसे इतने दिनों तक दूर रहीं इस पर तो मुझे विश्वास भी नहीं होता । निहालदे ने अपना सिर सुल्तान की गोद में छिपा लिया, सुल्तान ने मुक़-कर उसके कपोल से अपने कपोल सटा लिये और फिर वह सुतान समी कि कैसे वह इस जगह पहुँची ।

॥ ३३ ॥

राजकुमारी निहालदे को सहारों के धपेड़े इधर-उधर बहाते रह मगर दूसरे दिन वह किनार से लग गयी। वह अपने भीम कपड़ों में धर-धर काँप रही थी। सूय जितिक से उठ रहा था और हवा में ठण्ठक थी। उसकी पानी से चूती हुई लट्टे कंधों पर झूल रही थी। वह थककर घूर हो गयी थी और उसकी ताकत जवाब दे रही थी। नदी किनारे उस समय हांबराम पण्डित पूजा कर रहा था। उसकी चार सड़कियाँ भी साथ थीं। जब उन्होंने देखा कि एक नवयुवती बहाव में बचकर तट से आ गयी है तो वे बड़ी प्रसन्न हुए।

वे काशी में रहती थीं, और निहालदे को वहीं पर म गयीं। उनमें से बड़ी सड़की ने कहा 'हम चार बहनों तो हैं ही, अब तुम पाँचवीं बहन हो गयीं। बस रहते हम तुम्हारे लिए कुछ भी उठा न रखेंगी।'

अब जो कुछ भी हाँ वह इन सब बातों की चिन्ता छोड़ चुकी थी। निहालदे ने सारी कहानी पुरू से सुना ली—वह कौन है, कैसे मुस्तान को बहू बनी और कैसे धपेड़ों में बह गयी। इससे उसका कुछ राहत मिली। उसने कहा, 'शायद मेरी परीक्षा सन के लिए मुझ पर यह मुसीबत आयी है। मुझ तुम लोगों के साथ बहन बनकर रहने में कोई आपत्ति नहीं, पर मुझसे कभी घर से बाहर जाकर किसी पुरुष से मिसन के लिए कभी मत कहना। जब तक मैं जीवित हूँ, मुस्तान के सिवा किसी अन्य पुरुष से नहीं मिलूंगी।' उसकी कापती और

शोकपूर्ण बाणी दुःख के स्रोत की तरह बहती हुई पदचासाप की नदी में जा गिरी ।

कुछ देर तक वह इतनी पीड़ित रही कि उससे कुछ साया तक न गया । पारां वहना को बड़ी चिन्ता हुई । मगर भीर भी ब्रूख मिटाने के लिए खाना खाना म्बोकार करना पड़ा ।

घर वह बहुत पुराना था । लोगों के चलत फिरत पत्थरो और शोसटों पर पाँवों के निदान पड़ गये थे । पड़ित के घर के पीछे कुछ दूर पर गंगा नदी बहती थी । निहासदे साम को रम्बा का तरह खेजी से सहाराती हुई गंगा उसे बहुत सुहाती थी । वह सोचती कि इस घुमाबदार रानी नदी के अन्त में समुद्र इस मिमनासुका की बाट ओह रहा होगा । किन्तु कोई उसकी बाट जाहून बाला नहीं देखता । बाखिर यह नदी से बाहर आयी ही क्यों ? अपार जस था परतों पर परतों थी जस की । वह शान्ति से नीचे सायी रहती—सदा-सदा के लिए सो जाती । पानी की दस्त चादर उमक मुल और घरीर का ठँक मती—फिर किसी बात का कोई अन्तर पड़न वाला नहीं था ।

बालों को पीछ की आर फेंकनी हुई वह उठ खड़ी हुई । उसका घांघरा गँदम पानी से भीग गया था और वह अकेसपम की निरामा में डूब रही थी । यह घुपघाप एक अजन गुनगुनाने सगी पर यफायक एक गयी । उस धन नहीं पड़ा । इस तरह विपण्य दिन बीतने लगे और बसन्त ऋतु आ

पहुँची। फूला को गंध से मस्त मधुमक्खिया की गुनगुनाहट उसके कानों में पड़ी, और कोयल की कूक सुनकर ऐसा लगा मानो कामदेव आह्वान कर रहे हों।

वह बड़ी बुल्लित और हताश हो बठी रहती। हाबराम की दो बड़ी लड़कियों की सगाई हो चुकी थी और घादी भी जल्दी ही होम वाली थी। उसके बाद छोटी लड़कियों का ब्याह भी हो जायगा। लेकिन उसके जीवन में तो सुनापन ही बाकी बचा है। आखिर वह किस लिए जिन्दा है? ऐसा प्यार, जो अपने प्रिय को न पा सके सच्चा प्यार नहीं।

क्या मेरा मन निमल नहीं रहा। हाँ मैं तो चिता पर नस्म होने जा रही थी। क्यों न अभी देह को नस्म कर दूँ। चिता पर ही मैं पवित्र हो सकूँगी। गंगा में भी डूब सकती हूँ।" उसने उठन की कोशिश की, पर फिर पड़ी। 'नहीं यह कायर नहीं बनगी। मुस्तान की आत्मा को उद्घातित करने के लिए ही वह चिता पर जलना चाहती थी। मगर घायल कपटा में दिन काटता हुआ उसका प्रियतम उसकी ठमाश ही कर रहा है।'

फिर मुस्तान से विवाह करके उसने केवल अपना पति ही नहीं चुना है बल्कि जीवन का एक ऊँचा आदर्श भी। वह उसी मुख्य बात पर सोचन लगी, जिसके लिए वह अपने को न्योछावर कर चुकी थी। उस आदर्श तक पहुँचने के लिए उसे मुस्तान की मदद चाहिए। "मैं सिखा उसी बारे में सोचने के और क्या कर सकती हूँ? सिर्फ पथ निहारती रहूँ अब मेरे माग्य में यही एक सन्तोष बचा है।'

पंडित हाबेराम सेठ करोड़ीमस के पुरोहित थे। एक दिन पंडित ने कहा कि सेठ की बेटी के पति की तरह का सुन्दर, वाँका पुरुष उन्होंने जीवन में नहीं देखा। उस युवक की ओर देखने से एक तरह की छान्ति मिसठी है, और देखने वाला अपनी सारी चिन्ताएँ भूल जाता है। लगता है कि उसे अँधेरे में भी खड़ा कर दिया जाय, तो वहाँ रोशनी फल जाय। बिना सबषज के ही वह सुगोमित होता है।'

घघू के घर की ओर आते समय बर को हाबेराम के घर की ओर से गुजरना था। चारों सड़कियाँ निहासदे के पास आकर बौली, 'तुम अपने पतिदेव के बारे में बताती थी वह तो ऐसे होंगे ही, पर जरा सेठ करोड़ीमस के दूल्हे को तो देखो। कहते हैं वह भी एक ही है उसका जबाब नहीं।'

निहासदे ने पहले तो देखने से इन्कार कर दिया पर काफ़ी कहने-सुनने पर इस बात पर राजी हो गयी कि वह दूर से देख कर बतायेगी कि दूल्हा कैसा है।

ज्योंही बारात घर के पास पहुँची, निहासदे ने छिड़की छ देखा और अनाक रह गयी। उसका दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। उसने भरपि गल से कहा 'यह तो मेरे पति हैं। शायद उन्होंने यह सोच लिया है कि मैं मर गयी हूँ। ओह कुछ करो कुछ तो करो, कि यह हाथी छिड़की के नीचे रुक जाय। चारों सड़कियाँ घबरायी हुई नीचे उतरनीं। उन्हें कुछ सूझ नहीं कि वे क्या करें।

निहासदे दुख से पागल हो उठी। अगर वह मुस्तान का ध्यान अपनी ओर नहीं खींचती तो माजी ही हाथ से पसी

जायगी। उसका गसा सूख रहा था। दिस मत्तोस रहा था।
 अन्ति तो उसकी खरम हो ही चुकी थी। बिना सुल्तान के
 जीवन का वह भयभीत हो उठी यह तो पहले से
 ही अधिक भयानक। "कुछ-न-कुछ ज़रूर हो सकता है
 हाय राम क्या करें ?"

हाथी सिड़की के विल्कुल नीचे आ गया था। यकायक
 आखिरी फ़ायदा करने के आवेष्ट में वह चिस्तामी और अपनी
 अँगूठी उस पर फेंकते ही बहोश हो गयी।

अपनी राम-कहानी समाप्त करते ही वह सिसक-सिसक
 कर रोने लगी। उसकी देह काँपने लगी। सुल्तान ब्यग्र हो
 देखाता रह गया। उसकी आँखें भर आयीं। उसने उसे वहाँ
 में बाँध लिया।

सुल्तान अपने और निहान्दे के सम्ये सफ़र के लिए एक
 अश्व घोड़ा चाहता था। सेठ करोबीमस न हाल ही में कुछ
 घोड़े खरीदे थे। वे सुल्तान की मदद करने को तैयार हो
 गये। सुल्तान सेठ के घुड़साल में गया, तो एक घोड़ा बुरी
 तरह उछल-कूद मचाकर हिनहिनाने लगा। सुल्तान उसक
 पास गया। अरे ! यह तो उसी का वही घोड़ा है जिसे उसने
 समझा था कि नदी में डूब गया।

सम्ये सफ़र के बाद व क़िषलकोट पहुँचे। निर्वासन का
 बनी एक दिन और बाक़ी था। निहान्दे क साथ वह अपने
 पिता के श्राग़ में गया, जिससे आखिरी दिन बिना किसी को
 पता सप बिता सके।

निहान्दे धरकर धूर हा गयी थी। उसकी आँखों के नीचे

कासी कुण्डली वीस रही थी। धंसे में जो कुछ बाकी था, उससे उन्होंने अपनी भूख मिटानी चाही। एक कोने में मासी की कोंपड़ी थी। चूँकि अन्दर गर्मी थी इसलिए सुल्तान ने टूटही चारपाई को खींचकर बाहर कर लिया ताकि निहास उस पर सो सके। मगर निहास ने कहा कि जब तक दोनों के सोने का प्रबंध नहीं हो जाता वह अकेली जाट पर नहीं सोयेगी। अतः दोनों आकाश के धरोरे तले ज़मीन पर ही सो गये।

‘आखिर हमने निर्वासन के दिन काट ही लिये,’ सुल्तान ने कहा और दोनों एक-दूसरे की ओर देखने लगे। आवेष्ट में उसने निहास को आसिगन में बाँध लिया। निहास उसके मठे धरीर से और भी लिपट गयी, और उसके सीने में अपना सिर छिपा लिया।

:: ३४ ::

क्रिष्णकोट की हासत घुरी थी। अकाल पड़ा हुआ था। राज्य की आय इतनी कम हो गयी थी कि उसका खस पाना मुश्किल हो रहा था। सज्जामा घासी था। राजा की भी हासत घुरी थी। उनका स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया था।

दूसरे दिन, सुबह सुल्तान ने दरवार में जाकर पिता को दण्डवत् प्रणाम किया। निहासदे ने भी अपने स्वामुर के चरण स्पृश किये।

राजा मनपास इतने अधिक भानन्द विह्वल हो गये कि रो पड़े ।

सुल्तान यों सड़ाई से नफ़रत करता था पर वह नहीं चाहता था कि उसके शत्रु उस पर विजय पायें । सबसे पहले सुल्तान ने क़िपसकोट को सुदृढ़ बनाया जिससे वह शत्रुओं से सुरक्षित रह सके । वह जोश का गुलाम नहीं था, मगर सुराज की स्थापना के लिए उसका सुदृढ़ होना जरूरी था । उसने ऐसा इन्तज़ाम किया जिससे आसपास के राज्यों की सेनाओं की गतिविधियों का पता उसे लग सके । उसने नये उप के हथियारों को बनाने की घोष के लिए नुज़-बिखारद सेनानी नियुक्त किये । क़िपसकोट आने वाले यात्रियों पर निगाह रखी जाती कि दूसरे राज्यों के जासूस तो इस भेष में नहीं आ गये हैं । जब भी सुल्तान कोई सड़ाई सड़ता, वह नष्ट करने से अधिक निर्माण करने की बात सोचता ।

कुछ दिनों बाद महाराजा मनपास ने निश्चय किया कि वह सन््यास लेकर अपने अन्तिम दिन भयवत् चिन्तन में बितायेंगे । उन्होंने घोषणा करवा ली कि उनके स्थान पर सुल्तान को राजा बनाया जाय ।

यह एक शुभ मूहूर्त था । नगर को सूय सजाया गया । रय-बिरये भड़कील वस्त्रों में सबी गौरवदनिया इपर-उपर मगसमान गा रही थी । राजा ने शरीरों के लिए अपना निजी सजाना सोल दिया कि कोई भी नगर में अस्थापित न रह जाय ।

सुल्तान परिवार के इष्ट देवता की पूजा करने गया ।

सगमग दोपहर को वह पूजा करके निकला। उसे महल तक ले जाने के लिए सेना खड़ी थी। पुरोहित आये और उन्होंने मन्त्रोच्चार करते हुए पहले पवित्र ठेस और पाँच पवित्र नदियों के जल से नहसा कर सुस्तान का अभिषेक किया। निहासदे उसकी तलवार लिये खड़ी थी। सुस्तान बस्त्रों से सज्जित हो गया तो निहासदे ने उसे तलवार बाँध दी।

पहले पिता के पास जाकर उसमें शरण स्पर्श किये। फिर बाहर बसकर आगे-आगे सेनापति और उनके पीछे वह अपने पिता के साथ बिश्वास समागार में आया। नगर के सभी सम्मानित व्यक्ति वहाँ उपस्थित थे। सारे क्रिसेदार भी आये थे। योद्धाओं के शिरस्त्राण और मुकुट बमक रहे थे। शंखनाद और मन्त्रोच्चार के बीच राजपुरोहित ने उसके मस्तक पर टीका लगाया। प्रत्येक सामन्त और सेनापति ने घारी-बारी से सिंहासन के सामने आकर नये राजा को सम्भाषित अर्पित की।

पहला दिन प्रायना तथा आभार प्रवचन में बीत गया, किन्तु दूसरे दिन रागरग होने लगा। गलियों सड़कों गृहों और मण्डपों में धाजे-धाजे गूँजते रहे। नतकियों के नाजूक पाँवों में बंधे रूँधरूँधर दिन भर बजते ही रहे।

राज्य के सामन्तों और पड़ोस के मित्र राजकुमारों ने सुस्तान को एक धानदार वाकत दी। संगीठ और हास्य के बीच प्यासों-मर-म्यास खाती ही रहे थे। हरेक पर सहर छाने लगा था। हर आदमी रगरेसियाँ कर रहा था। एक राजकुमार तो उठकर एक नसकी की नकल करके नाचने ही लगा। उसे घेड़कर दूसरे लोग हँसने और तानियाँ बजाने लगे।

सुल्तान ने भी जीवन में पहली बार अपना संयम तोड़ दिया था। जब वह सोने के लिए बसने लगा, तो नशे में चूर था। लड़खड़ाता हुआ वह अपने शयनागार की ओर बढ़ा। आगे उसने घूँघट-काढ़े निहासदे की बेंसी एक छाया खड़ी देखी। पानी की धारा देखकर पिपासाकुल पथिक की तरह उसने हाथ बढ़ाया, और उसे अपने से लपेट लिया। उसकी आँखें नशे की घोर मादकता से घमक रही थीं। घूँघटवासी के नरम हाथ उस झूमते हुए को धामकर कमरे में ले गये।

फिर वह सुल्तान के पास अट गयी। मबिरा से सुल्तान की विचार-शक्ति क्षीण हो गयी थी। अन्त में जब सुल्तान ने उसका घूँघट हटाने की कोशिश की, तो उसने धीमे स्वर में कहा 'मेरे प्राण, आज मेरा घूँघट मत हटाओ क्योंकि इसमें मुझे कुछ अक्षुभ नजर आता है।'

मगर वह भी तो आदमी था हाँड़-मांस का पुतला। वे दोनों एक-दूसरे में मिल्त हो गये। सुल्तान की बाँहों ने उसे और कस लिया और युवती के भीतर का सगीत उमरने लगा। अन्तिम बाहुपाश के बाद सुल्तान ने अनुमति किया कि, घूँघट बाँसुओं से भीग गया है मगर वह नींद से इतना बकस था कि उसे सोचने की प्ररसप्त न थी।

दूसरे दिन सुल्तान शहमाई की मदमाती धुन से जाग उठा। कमरे में वह अकेला था। हासाकि घूँघटवासी युवती की उसे क्षीण याद थी, किन्तु राज-काज में फँसने के बाद वह उसे बिस्कुल भूल गया।

-- ३५ ::

निदान, सुल्तान संकट से मुक्त हुआ। पर मन में बार-बार उठने वाली उल्लास और विजय की अनुभूति को वह दबाये रहता। वह इस वक्त मुलाने वाली शान्ति के उल्लास में भोग विभास से दूर रहा। ऐसे समय मनुष्य प्रायः अपने को अजेय और अडिग समझ लेता है, मगर सुल्तान के भीतर ऐसी कोई भावना नहीं थी। अब वह जान गया था कि आस पास के बहुत से राजे उसके राज्य पर नजर लगाये हुए हैं। उनमें से बहुतेरे तो ऊपर से दोस्ती दिखावाते थे, पर भीतर ही भीतर उसे गिराने की ठाक में थे। राजा के गुणों या अब गुणों से उन्हें कोई मतलब नहीं था। उनकी नजर में उसके गुणों का केन्द्र तो उसकी सेना ही थी।

जिधर भी वह देखता एक ही समस्या दृष्टि में आती। पश्चिमी क्षेत्र में कच्छ का राजा अपनी सेना बढ़ा रहा था और उसे दबाना जरूरी हो गया था।

जाड़ा आते ही दिन छोटे होने लगे और हवा में ठण्ड भस गई। आक्रमण की सारी तैयारियाँ हो चुकी थीं। किल्लों की दीवारों पर चढ़कर हमला करने के लिए मजान तैयार थे। हाथियों की सूँडों के लिए इस्पात की परतें तैयार थीं जिन्हें वे दरवाजों को धकेलकर तोड़ सकें। किल पर गोले बरसाने वाली तोपें हाथियों को ही बाँधकर लै जानी थीं। मातायात के लिए जमीन कठोर भी हो गयी थी। फसलें कट चुकी थीं, इसलिये सड़ाई से किसानों के रुष्ट होने का भी डर नहीं था। इसलिये सुल्तान ने दूसरे दिन कूच करने का आदेश दे दिया।

सुल्तान सोन की तयारी कर ही रहा था कि निहालद चुपके स आयी। उसने बालों की एक लहराती सट को पीछे किया और धांधर की चुपटों को सहेजा। एक कोमल शान्त भाव उसे अपने में सपेटे हुए था।

वह सुल्तान के पास बिस्तर पर बठ गयी। उसन निहाल के बालों को सहसाया और कान बालों वाली युवती की ओर देखा, जिसका सिर पीछे को झुका हुआ था वक्ष तन हुए ये और कानों में हीरे के बुन्द दमक रहे थे। निहाल न अगड़ाई सो। यह अगड़ायी मस्ती मरी थी जिसस उसकी देह का लचीलापन दरस गया साथ ही उसका उमग उठना उसके बस छाठे सौन्दय में चार चांद लगा गया।

सुल्तान न उस पास खींच सिया। मुस्करानी हुई वह नुकी मगर खाली जान से वह सुल्तान के कंधे पर गिर पड़ी। उसन हाथ बढ़ाकर निहाल का चिबुक अपनी ओर कर सिया। हुस्के झटके से सम्बे कस झुल गय और उनक बीच स, ऊपर जमत हुए न्यङ्-फानुशों की रोशनी स उसकी गदन और कंधे समकन सग और दोनों एक-दूसर में खो गय।

रात को देर तक वे आदमियाँ का चित्ताना और धाड़ा का हिनहिनाना मुनठ रह। यह एक लम्बी सड़ाई हा सकती है।' सुल्तान न कहा।

“हम कहाँ हटन वाम हैं ? निहाल बाली।

‘यह ‘हम’ कौन हैं ? तुम तो नहां ही हो।’

‘क्या इसम तुम्हें ताग्जुब हाता है ? क्या इसक पहल

तुमन मुझ तसबार लिये नहीं देखा है ?" बड़े ही आश्चर्य भरे ठण्डे स्वर में उसने पूछा ।

'मगर यहाँ यह बात नहीं है, यह सड़ाई बहुत कठिन है।'

नरमाहूट से मुरन्त उसने अपना हाथ खींच लिया । एक हाथ के सहारे वह सट गयी । 'अब तक जो हुआ उसे देख कर भी तुम इसे कठिन बताते हो ?

उसने लम्बी साँस सी और उसकी आँखों में आँसू झलक आये । मुस्तान ने अनुभव किया कि वह कोप रही थी ।

मुस्तान बोला 'नहीं नहीं मेरा मतलब यह नहीं था ।

निहालदे और मुस्तान का व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन एक-दूसरे से गुंथा हुआ था । वे दोनों मिसकर राजकीय कामों में भी उसी तरह हाथ बँटाते थे जैसा आनन्द घन में ।

दूसरे दिन सुबह मुस्तान के साथ सना के आगे-आगे एक दूसरा घोड़ा भी था । निहालदे एक सुन्दर सजी घोड़ी पर सवार थी, और उसके दोनों ओर दो तसबारें सटक रही थीं । यह ऐसा दृश्य था जिसे देखकर सभी की आँखों में उत्साह की चमक आ गयी । बिचसकोट का पश्चिम की ओर स होन बामे आक्रमण के आतंक से आजाद करान के उद्देश्य से वे कच्छ की ओर बढ़ चले ।

ज्यों-ज्यों मुस्तान कच्छ की ओर बढ़ने लगा, छोटे-छोटे राजाओं ने राह में पड़ने टोक दिये । उन्होंने न कबस यही बघन दिया कि वे बिचसकोट के खिलाफ नहीं सड़ें, बल्कि वे कच्छ के खिलाफ सड़ने के लिए अपने बस-बस सहित मुस्तान को मना में जा मिल ।

ऊपरी तीर पर सुल्तान किचलकोट की ओर मुड़ गया। उसने अपनी सेना को दो भागों में बाँट दिया। पराजित राजाओं की सेनाओं को आगे रखा गया, और असली सेना को लोहा लेने के लिए पीछे। लगभग एक सप्ताह तक किचलकोट की ओर चलने के बाद एक रात मुख्य सेना चुपचाप लौटकर दूसरे रास्ते से कच्छ के रण की ओर चल पड़ी। यह सब सुल्तान ने सिर्फ इसलिए किया कि कच्छ का जगतसिंह सुल्तान की फौज की गति के बारे में शकिल रहे।

यह रण में रका। वही एक स्थान ऐसा था जहाँ के बारे में यह नहीं सोचा जा सकता था कि कोई सेना वहाँ आकर अपना पड़ाव भी बना सकती है। इसलिए सुल्तान ने सोचा कि जगतसिंह इस दिशा में असावधान रहेगा।

सुल्तान को कच्छ के दुर्ग के बारे में यद्यपि सब कुछ पता था, फिर भी वह स्वयं पशु का भलीभाँति परिचय पाना चाहता था। वह जानता था कि उसके लिए यह बड़ा ही अच्छा समय है, क्योंकि जाड़ा खत्म हो चुका है। बसन्त आ गया है और मरुभूमि की हवा कुछ गमम होन लगी है। दो महाना में रेत असहनीय रूप से गमम हो उठनी। यह किल को घेरनी सकता था मगर वह ज्यादा लम्बा तरीका था।

अपने चुन हुए सिपाहियों के साथ वह भेप बदलकर गया। जब उन बड़े दरवाजों पर सूर्य की पहली किरण पड़ी तब वे खोल गए। सुल्तान ने आन-आन बानों की सख्या बढ़ाने तक प्रतीक्षा की और बाद में कपड़ों के नीचे अस्त्र छिपाकर एक यात्री के भेप में अन्दर चला गया। चक्करदार गतियों,

सँकरे रास्तों और अँधेरी सड़कों से वह चमता गया। सोग अपने रोज़मर्रा के कामों में व्यस्त थे। लेकिन खन्द सन्तरियों के सिवा उसने सशस्त्र सेना कहीं भी नहीं देखी। यह चौंकाने वाली बात थी। अगर जगतसिंह उसकी छाबर या उस पर हमला करने निकल पड़ा हो तो सुस्तान की पराजय निश्चित थी। उसके अभाव में उसकी सेना ऐसे सक्तिशाली सत्रु का सामना नहीं कर पाएगी। इसीलिए वह थोड़ा बौढ़ासा हुआ तुरन्त अपने पड़ाव की ओर लौट पड़ा।

शाम के घक्त उसे अपना पड़ाव दिखायी दिया। शायद जगतसिंह के साथ कुछ चम रहा था। काठियावाड़ी टट्टुओं पर भुड़ों-के-भुड़ सपक-सपककर सुस्तान की सेना को जबरदस्त नुकसान पहुँचा रहे थे। जब उसने देखा कि उसकी सेना में अजीब भगवड़ पड़ी है लोग असमजस में हैं तो उस बड़ा क्रोध आया। जगसियों की तरह चिल्लाते हुए उसने अपने थोड़े-से आदमियों के साथ सरपट दौड़कर हमला बोल दिया।

सत्रु की सेना भापस मुड़ी। बस सुस्तान को उनका सेनापति की याद रही, जो अपने चमकीले दाँतों से सेना को हथम वं रहा था और उसके सव्यों को हथारों लोण पुहरा रहे थ। अब फाकी अँधेरा पड़ चुका था। उसे ही वह धूल उड़ाता हुआ सुस्तान के पास से गुहरा, उसने अपना भासा फँककर मारा। सुस्तान ने वार को अपनी हास पर रोकना चाहा, पर उसकी भाकस्मिकता क कारण वह भी चकित रह गया। भास की खाट से उसकी कुछ पसलियाँ टूट गयीं और वह थोड़े से गिर पड़ा। जमीन पर गिरते समय उसने चाहा कि बायें हाथ

से टेक लगा म और इसी कोशिश में उसके हाथ की हड्डी भी टूट गयी। हवा म लुरों की गठगडाहट और घोड़ों की हिनहिनाहट गूँज रही थी। इस कोलाहल में पशु विना पीछे की ओर देखे चस दिया और दूर जाकर वहीं गुम हो गया।

यका और चाट व दद से सहाहीन सुल्तान जमीन पर पड़ा था। धुधसका अब धन अँधेरे में डूब गया था। आकाश म कुछ ही तारे दिखसायी पड़ रहे थे और सफ़ेद रेत पर मद्धिम चमक थी। उसन कई वार उठन की कोशिश की, पर उठ न सका। बहद कमजोरी महसूस हो रही थी। यह बुरी तरह उसेजित था। अपने खेमे तक पहुँचने की उस कोई आशा न थी। आसपास की खून की बदबू से उसका दिमाग फटा जा रहा था। घायल सैनिक असहनीय कष्ट से चीत्कार रह थ और मौत धीरे-धीरे उन्हें सपेटती जा रही थी। जगसी मोदड़ मृत दहों का नाचते हुए इधर-उधर घूम रह थे। बड़ी कठिनाई से उसन एक मरं हुए सैनिक से तलवार खींचकर अपनी रक्षा का यत्न किया।

आधी रात का उसन बला कि दो मद्धिन मयालें मद-मद उसकी आर था रही हैं। कुछ सैनिक थे, और साथ में एक लम्ब ऊँच की स्त्री, जिसे सुल्तान ने निहालद समन्ध। व सागा में किसी को साज रहे थ। जब वे उसस घोड़ी दूर थ, तभी वह धपन का सेनास नहा सका और चित्सा पड़ा निहाल निहाल।”

स्त्रा आवाज की आर घुमी, और उधर का हो दीड़न समी। पीछे-पीछे सैनिक दौड़े। ‘मरे प्राण ! आह !’ कहती

हुई वह मुल्तान के दारौर पर गिर पड़ी और उसे अपन से दबोच लिया ।

'तुम लो मुझे मारे डाल रही हो । मुल्तान ने धीरे से कहा ।

उत्तजित हाकर शक्ति वृष्टि से देखती हुई वह उठ बठी मगर बैठने के साथ-साथ ह्यसियों से मुह डेककर फफक-फफक-कर रो पड़ी । वद्य जो उसके साथ थाया था, तुरन्त दौडकर मुल्तान को दखने लगा । जब वह उसे देख रहा था तब निहाल न अपने को सयत कर लिया ।

अंधरे की वजह से जगतसिंह ने अपनी सेना को हटा लिया था, और गोधू जो उस दिन मुल्तान की सेना का सेनापति था यह महसूस करने लगा कि वह मैदान में अकेला रह गया है । सैनिक चुप था । उनके भीमे कपड़ों से भाप उठ रही थी । उनके घोड़ों के मुंह फेन उगल रहे थे और उनकी बाँहें दर्व कर रही थीं । धीरे धीरे थके-माँदे वे अपने पड़ाव पर पहुँचे और वहाँ पहली बार उसने भेष बदल हुए उन जावमियों को पहचाना जो मुल्तान के साथ गये थे । मगर मुल्तान कहीं दिखसायी नहीं पड़ा ।

काफ़ी रात बीतने पर जब सय खाना ला चुके और थके हुए घोड़ों की देखभाल होने लगी ता निहालदे और गोधू मुल्तान के पास बठकर दूसरे दिन की योजना बनाने लथ । मुल्तान को अब आराम था । उसने ऊपर देखते हुए कहा 'हमारी एक-सिहाई सेना लो मारी जा चुकी है । फिर उसने गोधू को धूरकर दया । गोधू चुप था ।

उसके दाहिने हाथ में एक म्यान में फटार थी और बातों के उतार चढ़ाव पर वह बार-बार पसंग की पाटी पर उसे मारता। कभी-कभी वह एक कटे हुए पेड़ की तरह स्थिर हो जाता—ऐसे पेड़ की तरह, जो मुकेगा नहीं, टूट भले ही जाय।

निहालदे ने मौन तोड़ते हुए कहा 'मेरा एक सुझाव है। जहाँ तक मुझ पता है कच्छ में लड़ने के लिए अब कोई सैनिक नहीं है। शत्रु का ध्यान बँटाने के लिए गोधू पाँच हजार सैनिक लेकर वहाँ जाय और अगर जीत सके तो क्लिना जीत ले यहाँ का युद्ध मैं सब सँगी।'

सुल्तान थका हुआ था। कभी-कभी कराह उठता था। लेकिन उस भगा, जैसे एकाएक स्थिति उसके हाथ में आ गयी थी। उसने मुस्कराकर कहा 'हाँ यह तो गुजब की सूझ है। उससे क्यादा तो मैं भी नहीं कर सकता।

दूसरे दिन का युद्ध स्मरणीय था। उसके बाद से सुल्तान को वह शीतल मोर और उस छरहरी महिमा की प्रेरक मूर्ति सदा याद रही, जो बातों से रास दवाये कच्छी सैनिका से भरती को पाट रही थी। दोनों हाथों में दो तलवारें लिए चक्र की तरह वह शत्रुओं के पीछे काटती जाती। सुल्तान के घुड़सवार धाम बढ़ते गये क्योंकि शत्रुदल बिस्कुल टूट चुका था। वे भेड़-बकरी के झुंड की तरह जगतसिंह के सैनिकों का काटते, दबोचते और खदड़ते बस गये। सुल्तान की घुड़सवार सना के पीछे पैदल सना बृहदाकार दत्ता की तरह हथियार न्यून-न्याती बख की दीवार की नाति डटी हुई थी। उस ठास दीवार में भी दपर-उपर क्रूमकर शत्रुदल को छिन्न भिन्न कर

दिया। घुडसवारों के विपरीत उनके पास छोटी-छाटी सलवारें थीं जो ज्यादा कारगर थीं क्योंकि सम्ये सड़गों से सड़ने की जगह न थी। पीछे-पुकार से वातावरण गुँज रहा था सलवारों से सलवारों के टकराने की आवाजें हो रही थीं और घूम के बघडर उठकर आकाश पर छा गये थे। दोपहर तक यमुदस के पर उलड़ गये।

जगतसिंह ने नगर की पराजय की खबर सुनी और हृषि पार डाल दिया। उसने अपने काका बनीसिंह के क्षत्रो को भी छोड़ लिया था, इसलिए कच्छ दो व्यक्तियों के बीच में बँटा हुआ था। अब चूंकि जगतसिंह की पराजय हो चुकी थी इसलिए मुस्तान को उससे कोई क्षत्रुता नहीं रह गयी। मगर वह बनीसिंह के साथ भी म्याय करना चाहता था। जब उन्होंने मुस्तान की अधीनता स्वीकार कर ली तो वह किचलकोट सोट आया।

मुस्तान के राज्य में सभी प्रजा खुश थी। उसका राज्य के प्रमुख आधार किसान थे। वे खुशहाल थे। किसानों की बख्शता दूर करने के लिए उसने कई व्यावहारिक नियम बनाये थे। उसने अपने राज्य के विभिन्न क्षत्रो को भी मजबूत बनाने का प्रयत्न किया और उन क्षत्रो में साहस पैदा किया जो कुछ कारणों से इन क्षत्रो का अपने में बिकसित कर व्यापार नहीं बढ़ा पाय थे। अब वह बिना किसी भय के अपने राज्य पर अनुपस्थित भी रह सकता था।

और फिर, एक दिन आसपास का रतीनी घाटी में भास बमबमान समय। हरएक गढ़ी की दीवारा और पहाड़ियों से

घस्त्रों से सजी सेनाएँ जाती हुई देखी गयीं। बालू के टीलों पर सुय अथानक एक गुजरत हुए भास की नोंक पर या सुसम्बित धुबसवार क धिरस्त्राण पर धमक उठा। पहाड़ियों की तलहटी में पत्थरों पर घोड़ों की टापों की आवाजों और हिन हिनाहट से सारी घाटी गूँज उठी।

बड़े-बड़े सामन्त, क्रिसों के सेनापति और राजकुमार, बड़ी धान से अपने-अपने अगसरकों सहित साफ़ बाँधे जिनक छोर हवा में काँप रहे थे दाढ़ी साफ़ कराये या छाटी बाड़ियों में—सभी रग-रग के राजपूत किचसकोट की ओर कदम बढ़ात हुए चलने लगे।

मुस्तान ने अपन बाबनों क्रिसवारा को सन्देश भिजवा दिया था कि हर एक सेनापति अपन १५ सौ सशस्त्र सैनिका के साथ उससे आ भिस। किचलकोट से उसने अपने चुने हुए सैनिक लिए। उनमें से हरएक की उम्र २२ और २५ के बीच में थी। प्रत्येक के पास एक सिलाया-सघाया हुमा भोड़ा था, और हर व्यक्ति घस्त्रों से पूरी तरह लैस था।

मुस्तान दक्षिणी बुज पर था। सूरज ने पत्थरों की गरमाना धुरू कर दिमा था। उसने देखा कि छह धुबसवार उसके क्रिसे की ओर बढ़ते चले आ रहे हैं। उनकी पगड़ियाँ किचसकोट के सनिकों से निग्न थीं। उनके अगुवा को देखकर मुस्तान को लगा कि उसे कहीं देखा है। वह जान गया कि वे मारू के भेजे सन्देश-बाहक होने चाहिए। वह नीचे उतरा। यह मारू की बेटी के ब्याह का निमन्त्रण था। दूसरी बातों के अमाना पत्र में लिखा था—

‘भाई सुल्तान, अपने साथ ५२ गदियों के सेनापतियों और निबर योद्धाओं को लाना मत भूलो। भाई, उन्हें ऐसे घोड़ों पर चढ़ाकर लाना, जैसे मेरे पति राजा डोलकुंवर ने देखे भी न हों। भाया की राता की तरह कास रंग के हाथी लाना और मेरी भाभी यानी अपनी रानी को १५२ दासियों के साथ मोतियों से सजी पासकी में बिठाकर लाना। भाई, मेरे राज में प्रवेश करते ही हर राहगीर पर हीरे-मोती, पद्मे और मूंगे बरसाना शुरू कर देना जिससे आने वाली सात पीढ़ियाँ इस धुम अवसर को सदा याद करती रहें।’

सुल्तान के राज के कोने-कोने से लोग आकर शामिल होसे गये। उसने अपने दानों सहायकों जानी और गोधू को भी बुसाया।

इस तरह एक दिन वह अपने दुर्ग के सौहद्वार से बाहर निकला। फिर वह अपने ऊँचे भूरे घोड़े पर बठा। अपनी बिद्याम काया में वह दिम्प लग रहा था। सिद्धकियों छतों और क्रिसों की ऊँची दीवारों से झुड़-के-झुड़ लोगो ने हजारों के आये बड़ी धान से उसे घोड़े पर सवार देखा। अपन सर्वोत्तम मणियों को किसकोट न छोड़कर वह चस पड़ा।

पहले उन्होंने इवरकोट का रास्ता पकड़ा। वहाँ फूसकुंवर को भी सुल्तान ने साथ आने के लिए कहा। आगे-आगे घोड़ों पर सवार एक अग्रसेना चस रही थी ताकि किसी भी आने वाले खतरे को वह भाँप सके। हमसावरों से आगाह करने के लिए चट्टानों और टीसों पर सन्तरी सड़े वे कि देखकर बतायें, रास्ता सुरक्षित है न। दीधे क संकेत से वे देने योग्य खबर

मुल्तान और निहासदे

कर दत्त । एक टुकड़ी एक पड़ाव भाग चल रही थी कि बहू रात में पड़ाव ढांसने के लिए उचित स्थान छात्रकर बसा ही प्रवचन कर सके । अग्रसेना क पीछे एक सौ सौपे थीं, और उनके पीछे हाथी थे । यह दल-बल बीरे-धीरे बढ़न लगा । मुल्तान जब-तब अपन सेनापतियां स बातचीत करन के लिए स्वयं दल-रत्न के लिए निकल पड़ता । कारवां की बिगासठा और उत्तकी समृद्धि-सम्पत्ति न उन सब सामों का ध्यान सौंघ सिया जिनके प्रदेशा म स बहू गुबरा । उन सबन अनुमान सगाया कि कारवां की कुल सम्पत्ति १५० करोड रुपयों के बराबर है । मगर बे साथ म चलन वाली सेना स नयभीत थ ।

जाग का दल अपन पड़ाव की जगह पर पहुँच गया । रात बितान क लिए खम गाड दिय गये । आकाश का नारगी और नानुई रंग सँकड़ा बूल्हा से निकसत हुए भुएँ स पट गया । साथ म मनोरञ्जन के लिए नाचन-गान बासे भा थे ।

बिना किसी बुधटना के व इदरकाट पहुँच गय । वही बिताय दिनों का साचकर निहासदे काँप गया । इदरकाट के बाहर थाकर पूनकुंबर के साथ राजा कामध्वज राव न उनका स्वागत किया । मुल्तान अपन दलबल सहित तीन दिन वहाँ ठहरा । जब व पवन सग ता पूनकुंबर नी अपन पाँच सौ सनिकां क साथ जा मिला ।

== ३६ ==

इदरफोट के बाद साबरमती नदी पार करने तक वे बसते रहे ।

यहाँ से क्षेत्र घटस गया । जमीन कठोर थी मगर हरी मरी ज़्यादा । धूप से बमकती वह सुन्दर सुबह थी । मन्दिर गति से साबरमती बही जा रही थी । नदी का पानी स्वच्छ और मनोहारी था ।

नदी के किनारे बसते हुए सुल्तान न देखा कि धारा में कोई बमकदार चीज़ बही जा रही है ।

‘वह क्या है ?’ उसने पूछा ।

उसके ठीक पीछे सड़ा जानी घोसा, ‘बोतस मासूम पड़ती है ।’

‘देखना चाहिए । सुल्तान ने कहा ।

जानी ने बोतस निकासी । उसके अन्दर एक सन्देश रखा हुआ था । राजा सुल्तान ने ज़स्ती से बोतस खोसकर उसे पढ़ा, ‘महकवे मनुष्यता के नाम पर यह प्रार्थना करती है कि अगर उसकी रक्षा न की गयी तो उसे बनातू मुसलमान बनाकर आदिमशाह से उसकी शादी कर दी जायगी ।’

सुल्तान ने एक सम्बी साँस लींथी ।

आनू के आगे साबरमती में एक छोटा-सा टापू था । इस टापू पर नवान आदिमख़ाँ ने एक मजबूत क़िला बना रखा था, जो मोटी दीवारों से घिरा हुआ था और तोपों की सम्बी क़त्तार जिसकी रक्षा करती थी । आदिमख़ाँ की सेना दिन रात चौकस रहती थी । अगर कोई नदी पार करने की कोशिश करता

वो उस तोप से उड़ा दिया जाता। चारों ओर के प्रदेश पर उसका दबदबा था।

सुल्तान ने कहा, 'जहाँ तक मैं जानता हूँ यह एक सबसे मजबूत किलों में से है।' क्षणभर चुप रहकर वह बोला, 'नहीं, अब हम ज्यादा देर यहाँ नहीं ठहर सकते। उस घेतान कुत्ते को मैं फिर कभी सजा दूँगा।'

कारवाँ बसने लगा। वह थोड़ी ही दूर गया होगा कि पाँच हजार सैनिकों की एक सेना ने रास्ता रोक लिया। सुल्तान को घाग्गुब हुआ, 'ये सोग क्यों खून बहाकर खुदकुशी करना चाहते हैं। उसकी समझ में नहीं आया।'

अपने कुछ तीरस्वाजों और बन्दूकियों के साथ वह अपना घोड़ा दौड़ाकर आगे आया। एक सम्बा आदमी सामने बासी सेना के आगे खड़ा था। सुल्तान चित्साया, 'तुम सोग क्यों ब्यय मरना चाहते हो? मन तुम्हारा कोई अहित नहीं किया है। मेरा रास्ता मत रोको।'

घोड़ा ने सगाम बीसी छोड़ दी और उसका घोड़ा सुल्तान के नजदीक आ खड़ा हुआ। 'ईश्वर की यही मरजी है। मैं राजा बोल हूँ। आदिसगाह मुक्त पर आप्रमण करके मेरी बेटी को हर ल गया। या तो मरी मदद करो, जिससे मैं अपनी बेटी को छुड़ा सकूँ या हम सड़ते हुए खरम हो जायेंगे।'

'पर यह कैसे सम्भव है?' आपके कहने के अनुसार तो यह एक अजेय दुग है। सुल्तान ने किले की तरफ देखा।

बोल बोला, 'सबमें कहीं-कहीं कुछ कमजारी तो होती ही है। तुम तो इससे नी गिरी हालतों में मैदान जीता है।'

मुस्तान सोचने लगा। पहले उसने किले की रखवाली करने वालों की बीकरी को परसने का तय किया।

उसने बाँस के सात भारे तयार कराये उन पर बाँसियाँ रखीं, और उन्हें नदी में तरा दिया। ज्यों ही वे भारे किले के सामने आये तोपों ने उनको भुरकुस कर दिया।

जानी आगे आकर बोला, “जो कुछ हथियारों से नहीं किया जा सकता वह कभी-कभी तिकडम से हो सकता है।”

‘उसमें तुम्हीं होथियार हो और हम सबसे दूर की देख सकते हो। लेकिन तुम्हारी होथियारी से हमारा रास्ता सुनने तक पहले हमें छिपकर ही काम करना पड़ेगा।’ यह कहकर मुस्तान जानी को अपनी योजना पूरी करने के लिए छोड़कर चला गया।

जानी ने पहला काम तो यह किया कि एक सन्धे बाँस में २५ मशालें बाँधीं। फिर दोपहर पर चढ़ने के लिए कुछ सोहे की मुकीमी झूटियाँ और हथौड़ा लेकर वह चला। अब वह नदी में गोता लगाकर पानी के नीचे-नीचे बाँस को धामे हुए किले की ओर बढ़ा।

किले के सन्तरियों ने जबली हुई मशालें देखीं तो उन्होंने समझा कि कोई टुकड़ी नदी पार करना चाहती है। यह सोचते ही वे तोपें गरजने लगीं। उनकी प्रतिध्वनि नदी के किनारों से टकराकर उठने लगी। २५ गोले चलाकर २५ मशालों को बुझाया गया और जब तक यह हुआ, तब तक जानी वहाँ पर पहुँच चुका था, जहाँ वह पहुँचना चाहता था।

जानी हस्ते भर गायब रहा। मुस्तान को बड़ी चबराहट

हुई और वह चिन्तित भी हुआ। उसने गोधू से कहा, 'मैं सोचता हूँ कि अगर महकड़े के लिए नहीं, तो जानी की खातिर हम सड़ना अवश्य ही होगा।'

रात भर वह आदिसखाँ को हुराने की तरकीबें सोचता हुआ ना नहीं पाया। जब-तब वह अपने बिस्तर से उठकर लमे में बेचैनी से बापी-मापी करता। अस्स सुबह थी, और अनी अँधेरा ही था कि उसने सुना कि एक नाव किनारे की ओर आ रही है। वह दौड़कर बाहर आया। जानी उसे पहचाने इसके पहले ही मुस्ताफ न जानी को पहचान लिया। वह खुशी से बिस्तर पड़ा। जानी किनारे पर बूढ़ा, और मुस्ताफ ने उसे बाँहों में भर लिया।

"मनुष्य की हर कमजोरी के बारे में मुझे पता है मगर तुमने यह कैसे किया?" उसने पूछा।

"मैं सिर्फ इसकी थोड़ी-सी जानकारी रखता हूँ और वह थोड़ी-सी जानकारी है नगवान् की इच्छा।" और, अपने रवाना होने से तकर अब तक का जानी ने पूरा किस्सा कह सुनाया।

== ३७ ==

जब तक कि एक-एक करके तोपा ने मघालों को बुझाया, जानी किल की दीवारों तक पहुँच गया। आधी रात का मकर बज रहा था, और हर घंटे की ध्वनि के साथ बह दावार में एक फूटी ठोंक देता। इस तरह उसने एक प्रकार की सीढ़ी

बना थी जिसके सहारे वह किले की दीवार पार कर उतर गया ।

ठोस पत्थर के बने उस विशाल प्राचीर के अन्दर एक पूरा शहर था । सिड़कियाँ बाहर की ओर नहीं खुलती थीं । मकान सारे भीतर की ओर खुलते थे । छूबसूरत रास्ते थे और बीच-बीच में शाम्श, धीतल सुगन्धपूरित पुष्पों से भरे अनूठे आँगन ।

दौड़ता-फाँदता वह एक बाग में पहुँच गया, जिसे उसने समझा कि शायद नवाब का है । वहाँ एक पेड़ के नीचे बह सो गया ।

बाग की रखवाली एक मामी और उसकी स्त्री करती थी । सुबह जब मालिन ने देखा कि पेड़ के नीचे कोई सो रहा है, तो वह डर गयी । अगर नवान को पता लग गया तो वह सिर्फ न उस नौजवान को मार डालेगा बल्कि उसे यह भी शक होगा कि माली-मालिन भी उस अजनबी से मिले हुए हैं ।

इसलिए काँई देते, इसके पहल ही मालिन ने जानी को जगाया । जानी ऐसे मौक़ा पर बन्धान बाँधने में बड़ा सेज था । वह जैभाई सेला हुआ बोला 'अपने इस उजड़ भतीजे को माफ़ करो, मौसी ! अम्मा न मरते समय तुम्हारे बारे में यत्नाया था । उन्होंने तुम्हें खोजने के लिए मुझसे वचन ले लिया था ।'

मालिन ने अपनी बहन को करीब २० छाम से नहीं देखा था । इसलिए उसे सहज ही विदबास हो गया कि यह नौजवान उसकी बहन का ही सड़का है । उसकी भाँपों में स्नेह के आँसू

भर आये। जानी को विश्वास हुआ। उसने मौसी का हाथ पकड़ लिया। "मेरे प्यारे बेटे" कहते-कहते मालिन का गसा भर आया।

जब वह मालिन के साथ उसकी झोंपड़ी की तरफ चला, तो चारों ओर के सुन्दर दृश्यों को देखकर चकित हो गया। जहाँ एक नहर आती, नदी के किनारे की दीवार के साथ छायादार वृक्षों की कोमल पत्तियाँ और फूल ही नजर आते थे। पत्ती-पत्ती पर सूर्य की किरणें दमक रही थीं, और चारों ओर चमकती, झमकती मुस्कराती हरियाली फसी थी। दूसरी तरफ कुछ और झोंपड़ियाँ थीं।

मालिन ने जानी से कहा, "मैं तो बाहर जाने ही वासी थी। घंटे भर में सौट आऊँगी।"

"क्या मैं भी तुम्हारे साथ चलूँ?"

"नहीं बिल्कुल नहीं। मुझे राजकुमारी महकदे के लिए फूलों का गजरा मूँषकर लाना है।"

"मैं हार बनाने में माहिर हूँ। तुम्हारे लिए मैं ही यह काम कर दूँ, मौसी!"

मालिन को एक सोने का सिक्का देकर जानी बोला, "रेगम का धागा लाओ। प्यार की गाँठा वाला गजरा राजकुमारी को जरूर सबसे ज्यादा पसन्द आयेगा।"

हार के भीतर उसने एक छत मूँष दिया। मालिन ने हार तयार दसकर कहा, "तू तो बड़ा हाथियार है र" और, एक पल में हार भकर वह चली। उसकी भाँखों में सन्तोष की चमक थी।

राजकुमारी ने हार की बड़ी ठारीक की, पर उसकी देख आँसो से कागज का वह कोना न छिप सका। कागज निकाल कर उसने पढ़ा, "राजकुमारी, राजा मुस्ताम ने मुझे तुम्हें छुड़ाने के लिए भेजा है।—जानी।"

"मौसी, आज का हार किसने बनाया है ?" महकदे ने पूछा।

मासिन को लगा कि जैसे रात आ जायगा। जरा देखा तो मौसे की हिम्मत कि राजकुमारी को परेम-पत्र भेज दिया, उसने सोचा। फिर हकसाती-सी बोली 'मेरे भानजे की घर वाली ने बनाया है।'

'क्या उसे दुसा सकती हो ? मैं उससे मिसना चाहती हूँ।'

बुढ़िया न वहाना बमाया 'मनी वह जवान है और बीच बाजार स मना कैसे आवेगी ?

महस से पामकी मे सो।' राजकुमारी ने वासियो की आर इधारा करते हुए कहा।

मासिन घर लौटी तो उसका बेहरा देख जानी ने पूछा, 'क्या हुआ ?'

अब हम सागां की मौस आ गयी है, बुढ़िया न कापत हुए कहा। और उसका गुस्ता उभरने लगा। रो रोकर उसने जानी को चुनो हुई गामियां सुनायी। फिर घोड़ा सयत होकर वाली, 'पर मैं अपने भानज की औरत कहाँ से साऊँ ? पामकी जो अभी जाने वाली है।

जानी हँसा, "अच्छा उस इतनी-सी बात है ?

बुढ़िया ने जानी के छरहरे बदन की ओर देखा । फिर वह सुरन्त निकली और कुछ कपड़े लेकर सौट आयी ।

उसने मजाक करके हुए कहा, “अरे ओ, तू औरतों के कपड़े पसन्द करता है ? इसे चुंप तो जरा । अब दूसरा मौका नहीं मिलेगा । यह नबाध की रखस के हैं । बोबी से उधार माँगकर लायी हैं ।

जब वह तयार हो चुका था बुढ़िया बोली, ‘हाय हाय ! तू तो बड़ा खूबसूरत लगता है, जरा पीछे धूम लो, देखूँ ।’

जानी पीछे धूमा, तो बुढ़िया न और तारीफ़ की । बुढ़िया या हँसी अपनी बधा रही थी, फिर भी हँसी आती जा रही थी । भरासा दिमाकर उसे पासकी में बिदा किया ।

“भासिन के नतीज को बहू के लिए रास्ता दो, ’ एक मुन्दर युवती का आँवे देखकर सन्तरी चिस्साये ।

आसिरी इपौड़ी पर एक अम्भा हिजडा बठठा था । जब वह उसके पास पहुँची, तो हिजडा बोला ‘हाय, घरमीनी रानी का मुँह देखने दो ।’ और हाय मटकाने लगा ।

तब तक जानी न एक आपब रसोद किया ।

हिजडा चिस्साया ‘बाप रे बाप, यह तो सोड़िया क हाय नहा मामूम पड़े । जानी न अपन को सँनास लिया ।

रानकुमारी अकसी थी । पानकी भेवन के लिए उसी न कहा था, पर उस डर था कि आपमुक कहीं पकड़ न लिया जाय । जानी को देखकर उसने जन को साँस सी ।

‘तुम मुँह बचाना चाहत हा ? क्या तुम समन्धे हा कि एसा सम्भव है ?’

“यह कोई खासान काम नहीं है मगर हिम्मत न हारिये । लेकिन सबसे पहले मामिन के भानजे की बहू पर सन्देश न हो, यह तजबीज करनी चाहिए ।’

“पर तुम्हें तो सब समझते हैं कि तुम औरत हो ।”

‘हाँ, पर वह लड़की जो राजकुमारी से मिलने आयी है । सभी पूछताछ करेंगे ।’

उसने एक उपाय सोचा । नवाब को सूचना देने के लिए उसने एक सन्देश लिखा कि मुस्तान का वृत्त यहाँ आ गया है । उसे एक वाण पर बड़ाकर नवाब के महल में फेंक दिया । “हिम्मत रखिये उसने महकदे से कहा, और मासी की शोपड़ी में सीट आया ।

३८ ::

आदिसपाह आपे से बाहर हो गया । किले की जिस दीवार के पास जानी न खूंटियाँ गाड़ी थीं, वहाँ के पहरेदारों को बाँधकर कोढ़ों से घुरी तरह पीटा गया । मुस्तान के गुप्त घर को म्वाजने के लिए हर गली-सड़क पर सैनिक निकल पड़े । जबकि सैनिक चारों ओर दूँड़ रहे थे जानी माली की झोंपड़ी में छिपा था ।

सैनिक न जब सारा किला छान मारा तो किलेदार नवाब के सामने हाजिर होकर बोला, ‘जो आदमी भागा है वह बहुत ही खासाफ मामूम पड़ता है । मगर हुपम दें तो मैं

डिमाई कर दूँ। जब वह ज़रा असावधान हो सामने आ जायगा तब अपन ही जाल में फस जायगा।

तब यह हुआ कि उस रात क्रिमदार खुब अकेसे क्रिल का पहरा दगा। जानी ने माली से यह खबर पा ली क्योंकि उस रोज़ महल में जाना होता था।

घने भँधेरे में एक छोटी-सी लालटेन की रोशनी में एक ग़ज़ब की खूबसूरत सड़की को क्रिमदार ने धाड़ार से जाते दसा।

“ज़रा यहाँ आओ, क्रिमदार ने रोआव से कहा।

उसने धवराकर पीछे देखा।

“डरो मत मैं तुम्हें कोई नुक़सान नहीं पहुँचाऊँगा।

सड़क के पत्थरों की आर देखती हुई वह उसके पास आयी।

धम मुन्दरी ! नया तुम भरे साथ रात बिताने आयी हो ? मैं बहुत खुश हूँ।’

सड़की ने अपने चेहर पर उँगलियाँ फेरों, मानो पत्तीना गोंछ रही हो और उत्तजित स्वर में बोली, मैं कहीं मिसने गयी थी मगर धाता-ही-बाधों में रात काफ़ी हो गयी। भरे भस्वाबान नयाब के मुजाँबो काफ़ी परेमान हामे।’

‘भेर साथ बसा, मैं तुम्हें वहाँ पहुँचा दूँगा।’

ब परन से जाग चड़े। सड़की ने पूछा, यह क्या बड़ा हुआ है ? एमा तो मैंने कभी नहीं दसा।

क्यों ? यह ता चारों क लिए होता है।

और इस बस गोसते हैं ?’

क्रिसेदार ने उसे खोला और बताया कि क़वी के पर कहीं बांध जाते हैं। सड़की ने आजमाने के लिए अपना एक पाँव आगे बढ़ाया।

“न, न, यह तुम जैसी परियों के लिए बोज़े ही है। लो मैं दिखाता हूँ।” उसने धरन में अपने पर रख दिया। जानी डेर करने घासा क़ही, उसने भट से ताला मगा दिया।

‘अच्छा क्रिसेदार साहब मैं बही हूँ आप जिसकी समाधि में हूँ? आपकी रात आराम से बीते। नमस्त।’

क्रिसेदार का खून सूख गया। नवाब क्या कहेंगे। उस बबकूफ़ घना दिया गया। क्रिसेदार खूबमूरत सड़कियाँ देखकर फिसल पड़ता था। अब वह अपनी बीबी को क्या मुँह दिसायेगा!

:: ३२ ::

आदिसख़ा महक़वे के कमरे में पहुँचा। वह रोगी पशु की तरह हताश हो सिकुड़ी पड़ी थी। उसकी चहरे पर की रेखाएँ ही उसके घोर कष्ट को प्रकट कर रही थीं। अचानक वह कोहमिया के बल उठी और बठ गयी। आदिसख़ा ने सोचा कि उसके अन्दर आने की आहूट महक़वे जरूर पा गयी होगी।

वह रो नहीं रही थी। इतनी अपार पीड़ा थी उसे कि आँसू उसके सूख गये थे। उसका समोना फोमस मुल्ला कुम्हसा गया था। आँसों के नीचे सिसबटें पड़ रही थीं फिर भी उसमें अनुपम पवित्र सौन्दर्य था।

“बिना मेरे हुकम के कोई भी क़िले के बाहर नहीं जा सकता। तुम्हारा दोस्त कौन है? क्या तुम चाहती हो कि वह मार डाला जाय?”

“मैं जानती हूँ कि तुम सर्वशक्तिमान हो मगर मुझे जाने दो नहीं ता तुम्हें मान्य ही है कि उसका अन्त है मौत।”

‘तुम्हें क्या हो गया है? किसी की हिम्मत नहीं हुई कि मरी हुकमतपूसी करे। मैं तुम्हें खुदा करने की कितनी कोशिशें कर रहा हूँ। ज़रा तो इधर ख्याम करो। घोलते-बोलते उसम महक़दे को अपने बाजूआ में भरने की काशिश की।

महक़दे ने धूरकर देखा। महक़दे की नज़र से उसे धक्का सा लगा और पलभर के लिए वह डरकर पीछे हट गया।

‘मैं तुम्हारे लिए क्या-क्या नहीं कर रहा हूँ। फिर भी मुझे तुम्हें धूने तक का हक़ नहीं है।”

वह बिस्तायी, नहीं कभी नहीं।

‘मगर मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। मैंने हमेशा तुम्हें चाहा है। तुम्हें मैं अपनी मसका बनाऊँगा।’ उसने फिर महक़दे के कंधे पर हाथ रखना चाहा।

चौकड़कर वह उसस दूर हट गयी और बग़ल पास कमरे में जाकर उसकी साँस बड़ा सी।

अच्छा, मरी जान, मैं पहल इस खुफिया सड़की को पकड़ लूँ जा सबकी बवबूक़ बना रही है।” इतना कहकर आदिस महस क बाहर तेज़ी से निकल गया।

जानो जानता था कि उस माली की सोंपड़ी से बचना पड़गा। सड़की का स्वाँग उसन ज़रा ज्यादा ज़दा कर दिया,

और बहुत मुमकिन है कि आज नहीं तो कल उस लड़की की तलाश जरूर होगी ।

मासी महसूस से सौटकर आया, ता उसने बताया कि सना हर जगह तलाश कर खी गयी है । सनापति को उस लड़की की तलाश करने का ड्रिम्मा दिया गया है जो एजब की खूबसूरत थी ।

‘ क्या सनापति बहुत समझदार आदमी है ? ’

“हाँ, है तो ” मोसी ने कहा मगर इस समय वह दुखी है । उसकी बटी, जो पिछले १५ साल से अपन घर में पुरा थी अब पति से भगाड़ा करके सौट आयी है ।’

‘ पति क्या कहता है ? ’

‘ सुना है कि वह उस वापस बुलाने का तयार है । सनापति ने उस यहाँ बुलाने के लिए कुछ आदमी भेजे हैं और वह किसी भी दिन आ सकता है ।

मुत्कर जामी मोषम लगा । उसने एक ज्यातिपी का नय बनाया और सनापति के यहाँ पहुँचा । सनापति तो था नहीं ही उसकी परनी और बटी घर में था ।

बीबा ने कहा मैं तो ज्यातिप सिखा की बड़ी इच्छत करता हूँ हार्नाकि मर पति का इसम तनिक भी विश्वास नहीं ।”

‘ मुझे अपना हाथ दिगाइय और मरा भविष्यवाणिया की जांच का काम अपन पति पर छोड़ दें । ’

क्षण भर वह बिना घाल ज्यातिपी की भार टक लगाय दमती रही ।

उसने सड़की का हाथ पकड़ा और उसकी हथेली जानी के हाथ में पकड़ा वी, 'आप तो कोई पहुँचे हुए भासूम पडते हैं, जरा मेरी बेटी का हाथ तो देखिये ।'

'इस समय आप खुसी हैं पर घबराइये नहीं, आगे सुख ही-सुख है ।'

सड़की ने हँसकर पूछा "मुझे क्या कष्ट रहा है ?"

'यह कहना कठिन है । क्या पति के साथ कुछ भगड़ा हो गया है ?'

'पता नहीं । कम-से-कम मैं जैसा चाहती थी वैसा तो नहीं बस रहा है ।'

'हाँ, मुझ पता है । यह बुध की रेखा ही गडबड कर रही है । ज्योतिषी ने कहा और एक रेखा पर हाथ रख दिया ।

क्या गड़बड़ी है ?

सड़की घर से बाहर से जाने का इससे अच्छा मौका जानी नहीं पा सकता था । वह जानता था कि मास्ती के घर की तलाशी ली जायगी । अगर एक दिन उसे सेनापति के घर में रहने को मिल जाय तो वह बंध जायेगा और कामयाब भी होगा ।

'आपका सारा रबैया बडा हुआ वी और निराशापूर्ण हो गया है । आपकी बोलचाल, आपकी आवाज, आपके कपड़े पहनने का ढंग । इस सभ्या को लूब सज-घजकर हाथ में मासा लिये फाटक के पास अपन पति का इस्तजार करिये ।'

माँ ने सड़की से पूछा, 'क्या तुमने कभी यह भी सोचा है कि तेरे पति ने दु खी होकर कहीं जातमहत्या न कर ली हो ।'

“दुःख, कैसा दुःख ?” सड़की ने घबराकर पूछा ।

“अब तुम उसे छोड़कर बसी आयीं तो उसे दुःख नहीं हुआ होगा ? ज्योतिषी यज्ञा होसियार है । मासा संकर तुम पकर उसका स्वागत करना ।’

जानी उसकी आँखों में जिज्ञासा का भाव देखकर जरा घबराया कि वह सड़की गड़बड़ में है और पूछने को शब्द नहीं खोज पा रही है । पर वह दण बीठ गया । जानी ने खंन की साँस ली ।

माँ ने कहा “धन्यवाद । ज्योतिषीजी, मेरी बेटी पकर बसा ही करेगी ।’ फिर एक सोने की मोहर उसने ज्योतिषी को दे विवा किया ।

४०

घाम के करीब जानी शौंपड़ी में लौटा । रात होने तक उसे बाट जोहनी थी । सेनापति को अगर अपने दामाद की माव हो, और वह जानी को पहचान जाय तब ? सेकम १५ घास में तो बहुत कुछ बदस जाता है । यह जोखिम तो जानी को सेमी ही पड़गी ।

सेनापति की सड़की सचमुच तैयार होने लगी । उसने अपने को परम सुन्दर युवती की तरह शूंगारों से सजा लिया । मुसायम हरे रंग के कपड़े के छोटे घूँपट को एक पतली मुनहरी सड़की ने अपनी जमह टिका रक्ता था, जिसके दो सिरे उसकी

छात्रियों तक भूम रहे थे और उनके छोर पर हीरे की पातें थीं। हाथ में मासा सिये वह घर के बाहर निकल आयी। अभी वह कुछ ही दूर गयी होगी कि एक सैनिक ने साथी से पूछा, "यहाँ के लिए यह नयी मासूम पड़ती है।"

हे भगवान्, घायद वही हो। दूसरा बोला।

"बरा सुनिये। पहल ने कहा। दोनों उसकी तरफ बढ़े।

उसने बेपरवाही से सिर हिसाया, और वहाँ से चल दी। अब दोनों ने अल्दी क्रबम बढ़ाकर उसका रास्ता रोक लिया।

"क्या चाहते हो? क्या मेरे पिता को नहीं जानते?" उसके चेहरे पर आश्चर्य का भाव था और माथे पर सिसवटें पड़ गयी थीं।

"हम तुम्हारे साथ घाने तक चलेंगे, और जब नवाब तुम्हें बता देंगे कि हम क्या चाहते हैं?"

वह दूर हटकर उन्हें तेज भाँसों से ठाकने लगी।

"हम कुछ पूछना चाहते हैं," एक बोला "आप अंधेरा पड़ने के बाद क्यों बाहर निकली हैं?"

'दूर हट जाओ, नहीं तो पछाओगे," कड़ककर वह बोली।

"चलना चाहती है तो सीधे चली चल, नहीं तो हम तुम्हें पकड़कर ल चलेंगे।'

"तुम लोग भ्रम कर रहे हो। क्या तुम समझत नहीं, येवकूओ!"

'सिपहसामार से खुद कहना कि तुम उनकी बेटी हो।'

उसका कहना-सुनना किसी काम का साबित नहीं हुआ।

जब उसे जाने में बन्द कर दिया गया तब वह बकित रह गयी ।

जानी भोंपड़ी से बाहर आया । उसने ऐसा भेष बनाया था मानो बहुत दूर से अन्नकर आ रहा हो । रोसनी मडिम थी, और वह बच-बचकर चल रहा था । एक छाया उसकी ओर बढ़ी । उसे साफ़-साफ़ देखना तो मुश्किल था, मगर दूरी का अन्दाज़ उसने सगा लिया था । छाया ज्यों ही उसके पास आयी, उसने बायें हाथ से आक्रमण करने का बहाना बनाकर बायें पैर से उसके पेट पर कसकर साठ जमाई । जानी का अन्दाज़ ठीक था ठीकर हाड़-मांस की ठोस छाया पर सगी । चोट झाकर वह आदमी गिर पड़ा । फिर जानी ने टेढ़ पर दोनों हाथ बांधकर ऐसा वार किया कि वह वहीं डेर हो गया ।

जानी ने मरे हुए सैनिक की बर्दी से ली और ऊँचे सँकरे रास्ते से होता हुआ सेनापति के घर की ओर चला ।

रात ज़रा बढ़ गयी थी । सेनापति अपनी ड्यूटी पर निकल गया था पर उसकी घीघी घर में बैठी अपनी बटी और दामाद का इन्तज़ार कर रही थी । दरवाज़े पर हल्की-सी धप धपाहट सुनते ही वह खुश हो सपककर सकल सोमने गयी । सामने सड़े नौजवान को देखते ही खिस उठी ।

सन्नाप की साँस लस हुए उसने कहा आओ, आओ ।

वह घर में घुसा तो सास ने देखा कि वह अकला था । 'लेकिन मीरा तो तुमसे मिलने के लिए फाटक तक गयी थी । अच्छा, कोई बात नहीं, शायद वह तुम्हें न देख सकी । तुम्हें

दुरा नहीं मानना चाहिए। उसका मिजाज कुछ गर्म है।
—कहती थी तुम बड़े कड़े और तुनकमिजाज हो। वह खाम
खाह तुमसे झगड़ पड़ी। देखो मैंने तुम्हारी तरफ़दारी की।
मैंने कहा, कि वह तुम्हें बहुत चाहता है इसीलिए हर बारे में
खास विनयस्वी नेता है। वह कहने लगी कि तुमने उससे यह
भी नहीं कहा कि घर छोड़कर मत जाओ। पर यह भी कोई
मानने की बात है? मैं तो खूब जानती हूँ कि तुम उसे बहुत
चाहते हो।”

जो-जो वह कहती गयी जानी उस पर सिर हिनाता
गया।

“तुम कितने यच्चे, समझदार हो मेरे बेटे! मैं उसे
बड़ी डाँट पिनाडूँगी। यह सब मेरे ऊपर छोड़ दो।
आधी रात बीत चुकी थी। अब उन्हें चिन्ता हाने लगी
थी कि मीरा नहीं आयी। मम्बे मम्बे डग भरता हुआ सेनापति
आया। जानी कुछ पबराने लगा। बहुत मुमकिन था कि मीरा
सौट आये, और उसे पहचान जाय। लेकिन मुसीबतों का
सामना करते-करते वह आदी हो गया था सब कुछ भाग्य के
भरोसे छोड़ देने का। इसलिए सेनापति के बेहरे की खुशी ने
उसमें नई आशा और विश्वास भर दिया।

“हमने उस घरायशी लड़की को पकड़ लिया है।” घुसत
ही उसने कहा ‘दो-तीन दिन में अब उसका दिमाग ठण्डा हो
जायेगा, तो हम उस नबाब के सामने पेश करेयें।’
‘बेटी मोरा भभी तक नहीं आयी हासकि जमाई भा
मया है।”

सेनापति ने पहली बार जानी को देखा और मान लिया कि यही जमाई है। "मैंने तुमसे मना किया था कि ज्योतिषियों के बचकर मैं मत पड़ा करो। वह शायद अभी तक फाटक पर ही इन्तज़ार कर रही हो।"

"क्या ज्योतिषी ठीक नहीं कह रहा था? मेरा बेटा आ गया। वह शायद इसे देख ही न सकी होगी। आओ, और उसे भी तो खोजो।"

सेनापति थोड़े पर बचकर मुख्य द्वार पर पहुँचा। लेकिन वहाँ किसी ने किसी भी लड़की को आते-आते नहीं देखा था। आधी रात को संतरियों का पहरा बदन गया था। मगर पहल के पहरेदारों ने भी उससे कुछ नहीं कहा था। वह निराश होकर झूट आया।

४१

जानी ध्यान बँटाने के लिए कोई बहुत चौकाने वाला काम करने में विश्वास करता था। इसलिए उसकी कल्पित पत्नी के गायब हो जाने से उसे मामला और भी उलझाने का मौका मिला गया। महकदे को छुड़ाने के लिए वह एक दिन और चाहता था इसलिए एसी कोशिश में था कि सेनापति और उसकी पत्नी उस पकड़ी मयी नवयुवती से न मिल पायें, जो कि शायद मीरा ही होगी, उसने सोचा।

बड़े नाटकीय ढंग से वह उठा और दीवार से सिर

टकराता हुआ खीसने लगा, मैं अपने आपको कभी माफ नहीं करूँगा, मगर मरी वजह से मीरा कुछ कर बठी !”

वह बीबार से सिर फोड़ता रहा। सेनापति ने वीहकर उसे बचाया और घान्त किया। लेकिन सेनापति ने वीहकर अपने दामाद क रोने चिल्लाने मं शामिल हो गयी।

सास ने कहा, “मीरा कोई बच्ची तो है नहीं। वह तो तुम्हारा नाम सुनकर ही खुश थी कि कोई ऐसा गलत कदम उठाये।”

जब उपा का प्रकाश फैसन लगा, और उसने समझ लिया कि अब कोई ऐसी बात नहीं होगी, तो वह सोने के लिए जाने को तैयार हुआ। ‘हम हिम्मत तो रखेंगे, पर जब तक मेरी प्यारी बीबी वापस नहीं आ जाती, मैं रोटी का टुकड़ा मुह से नहीं मगाऊँगा।’

सेनापति और उसकी बीबी को भी सपने लगा कि बटी को साजने के लिए उन्हें भी कुछ करना चाहिए।

सेनापति ने चारों ओर पता लगाया, मगर कोई खबर नहीं मिली। इससे उस बड़ी भुँकसाहट हुई। उसने दारोगा को बुलाया, जो रतजग के बाव घोड़ा आराम कर रहा था।

“तुमने मेरी बेटी के बारे म सुना है? उसे औरत खोज निकालो, बरना मैं तुम्ह फाँसी पर बड़बा दूँगा।”

दारोगा के बेहरे पर निराशा छा गयी। पर उसने पृष्ठतापूवक कहा ‘यह तो उचित नहीं है। सारी देव रेख तो आपके ही जिम्म थी यह भापकी अपनी नाकामयानी का नतीजा है।’

“बुप रहो । तुम मुझे इस्साक सिसालागे ? जाओ, उसकी तलाश करो ।”

नवाब की क़ैदी के बारे में सूचना दी गयी । उसने कहा कि उसे कुछ दिना तक जेल में रक्षकर सड़ने दिया जाय ।

शाम तक लड़की का कोई पता न लगा तो माँ घबरा गयी । अब वह सारा दोष अपने पति को देने लगी ।

‘तुमने उसे जाने के लिए आदमी क्यों भेजे ?’

‘मगर तुम्हीं तो उसे देखने के लिए बेचैन थीं और मीरा भी यही चाहती थी ।’

जानी के निकल भागने की ख़ाहिश अब आ गयी थी । सारा वातावरण उसके अनुकूल था ।

“अब मुझे ही मीरा को खोजने के लिए जाने दीजिए । मैं उसका स्वभाव खूब जानता हूँ । मरे हुए सिपाही के कपड़ों का बग़डस सेफ़र वह बाहर आ गया ।

एकांत जगह में जाकर उसने वर्षों पहन ली । सिपाही के भेष में जानी-जैसे आदमी के लिए यह सहज था कि वह नवाब के महल के रसोई घर तक जा पहुँचे ।

उस दिन नवाब बड़ा प्रसन्न था । हाँ अब महक़दे आना-कानी न करेगी । महक़द क्या क़ैदी की मौत पाहेगी ? नवाब सोचते-सोचते धराब के लिए पिल्सा उठा ।

ऊँचारे वाले भाँगम से होकर अम्मे वाले रास्ते और गुँवते हुए कमरों में से वह साज़ी के पीछे-पीछे चल पड़ा । साज़ी नवाब के निजी कमरे में खुलने वाले दरवाज़े पर जा पहुँची ।

जानी भी बुपके से पीछे-पीछे वहीं आ गया । लड़की मात

म से आग बढ़ी । वह हाथ बढ़ाकर नबाब का कमरा खोलने ही वाली थी कि जानी न एक हाथ से उसका मुह दबाकर दूसरे से सुराही छीन सी ।

सुराही को जमीन पर रख सबकी का मुह एक कपड़े से बन्द कर उसे पर्वे की रस्ती से उसने बांध दिया और लटकते हुए पर्वे के पीछे उस मुसाफिर वह वाला, 'साब-धरम नूस आओ मेरी जान, मैं तुम्हारे कपड़े बदलूंगा ।'

एक-एक करके उसने सबकी के कपड़े उतार और खुद पहनता गया । उसने अपनी बर्दी से सबकी को ढँक दिया । वह छरहरे सफकीले बदन का था, और भेष बदलने में तो उस्ताद था ही । हाँ, कपड़े बदलत समय वह सबकी के सुगठित धरीर की सारीक़ किये बग़र नहीं रह सका । आदिमसाह सुन्दर मुकुमारियों पर मरता था । उसकी खिदमत में सिर्फ़ मौजवान बांदियाँ ही रहती थीं ।

जानी ने एक पुड़िया निकाली और घराब में कुछ मिला दिया । वह गया ही चलन को हुआ उसे एक सबकी की चिस्ताहट मुनायी दी । कमर के ऊपर विवस्त्र एक सबकी नबाब के कमरे से बाहर निकली, और तेज़ी से बोसी धरी कितनी दर कर दी । नबाब साहब बिगड़ रहे हैं ।'

जानी सबकी के पाछ-पीछ कमरे में आया । नबाब एक बीवान पर सटा हुआ था । मुपड़ धरीर की कमर तक नगी एक ओर युवती बढ़ी मस्ती में जरी के झलरों वाला ताड़ का पत्ता हुआ रही थी । दस-दस बलिया बाम दो बड़ फ़ानूसों में

सुगन्धित तेल बल रहा था। घनेसी के फूलों की महक चारों ओर फैली हुई थी।

कुछ क्षणों के लिए जानी पर भी माहौल का नशा छाने लगा। पहली बार जीवन में वह आम लेकर आ रहा था। डर रहा था कि कहीं पाँव सड़सड़ा गये तो सब कुछ जमीन पर ढरक जायेगा। किसी तरह उसने अपने को संभाला।

नशाब पर नशा बढ़ा था। वह धक रहा था, तो मेरी यह हासिल हो गयी कि धराब के लिए भी इन्तजार करना पड़ता है। मैं मुल्क के इस इलाके का सबसे बसी हूँ। चारों तरफ मेरी बहादुरी और बुसन्धी का ववदवा है। फिर एक भल्लूह सड़की अपनी जानो से मुझे जितना परेद्यान कर रही है, उतना तो मैं अपने दुश्मनों की तिकड़मों से भी परेद्यान नहीं होता।' उसने जानी की ओर घूरकर देखा। जानी के चेहरे पर चिक्न तक नहीं आयी।

'तुम्हारी क्या राय है, मरी जान। मैं महकवे को दिखला दूंगा कि यहाँ का मानिक कौन है ?

जानी चुप।

'मेरी डूर, तुम बोलती क्या नहीं ? और उसने जानी की ओर इस तरह देखा मानो अपनी बाँहों में ही भर लिया हो।

'अरे तुम मरी मबरा से घबराती हो। हा हा हा ! बड़ी उमग से उसने हाथ बढ़ाकर अगिया का बंधन खोलना चाहा। जानी का काटो तो खूट नहीं। पर तुरन्त उसने धराब भरकर प्याला मामने बढ़ा दिया।

जल्दी ही भादिसखा नद में घुस होकर बेहोत हो गया।

सुवर्ण का चेहरा खाम हो उठा। चाहते हुए भी वह सुस्तान से आँसों मिला न सकी। धक्का से उसका गला भर आया।

उसकी निरन्तर बदलती आवाज की मिठास वह पीली रही, उसने देखा सुस्तान की सुदृढ़ ठोड़ी तिरछी उठी हुई थी। उसकी गहरी वृष्टि से विश्वास झनक रहा था। मगर वह सब उसके मोहक व्यवहार के सामने कुछ नहीं था। सजीसे-से सजीसे व्यक्ति का संकोच दूर कर अपनापन दरसाने की उसमें बिलक्षण क्षमता थी, और धायद यही उसके आकर्षण का बहुत बड़ा रहस्य था। मौन रहकर भी मानो वह कह रहा था "मैंने तुम्हें पा लिया।"

मेरी सगर्भ किष्मकोट के महाराजा मनपान के पुत्र राजकुमार सुस्तान से होने वाली थी कि उनको निर्वासित कर दिया गया। अब मेरे पिता इंदरकोट के राजकुमार फूलकुंवर से मेरा ब्याह करने वाले हैं।"

मगर सच यह था कि उसका मन फूलकुंवर से बहुत दूर था। उसी क्षण उसे लगा, माना बावस ने सूर्य को छक लिया, पर बावस सूर्य पर नहीं निहासदे की आँसों में घुमड़ आया और गर्म-गर्म प्यार के मौसु डमने लगे।

वह सुस्तान के पास बैठ गयी। धीरे उठाकर उसने दोनों हाथ सिर के पीछे बांध लिये। वह अत्यन्त रूपवती तो थी ही, जैसे दीप की शिखा। सुस्तान की आँसों नीची हो गयीं।

वह सौकुमार्य-संकोच से सीपी तरह तो नहीं वह पायी,

आखिरी प्यासा वेधे हुए जानी ने आदिसर्खा के हाथ से चुपके से दाही मुद्रा निकाल ली, फिर सुराही उठाकर वह दोनों सड़कियों को वहाँ छोड़ बाहर आ गया।

अब तक का काम उसके लिए आसान रहा।

जानी सारी झ्योड़ी में खक्कर लगा आया कि कहीं कोई आ तो नहीं रहा। भीतर किसी भी मर्द को, बिना खास इजाजत के, आने की आज्ञा न थी, इसलिए वह अपने को सुरक्षित समझता था। वह सौटकर वहाँ आया वहाँ सड़की को बाँध कर छोड़ गया था। सड़की अधीरता से इधर-उधर ताक रही थी कि शायद कोई आ जाये।

‘जबान बन्द रखो, तुम्हारा कोई नुकसान न होगा।’ सुराही उसने वहाँ रक्त दी। वहीं बदनकर, सड़की को उसके चुपट्टे से डेककर, निकल आया। वह बरामदे तक आकर प्लंबारे और सता-मण्डप के पास पहुँचा।

रात के गस्त का दारोगा महस के दपतर में था।

उसने दाही मुद्रा दिखाकर कहा “मुझे हुकम मिला है कि मैं गाहवादी महकदे को नदी के दूसरे किनारे पर ले जाऊँ।”

“लेकिन तुम्हें ही यह हुकम क्यों मिला?”

“नवाब के पास मेरे सिवा और कोई आदमी नहीं था। यात्री के बारे में मैं नहीं जानता।”

दारोगा ने भार अविदबान को दृष्टि से जानी की ओर दखा, और फिर दाही मुद्रा की ओर।

“नवाब साहब वहाँ हैं?”

‘अपने कमरे में, हुजूर! मुझे तो साफ़ भीतर ले गयी।’

दारोगा को अपने कामों पर विश्वास न हुआ। वह जानी के साथ रसोई भर तक आया, भगर छात्री वापस नहीं सौटी थी।

दारोगा ने डाँटते हुए कहा, 'तुम्हें पता है कि इसकी सजा मौत है।'

जानो के दिस की घड़कन जैसे एकबारगी दक गयी। किसी तरह अपने को संभासते हुए बोला 'हुसूर, मैं कुछ नहीं जानता मुझे जो हुकम मिसा है, वह आपसे अर्ज कर रहा हूँ।'

'अच्छा, तो हुकम की तामीस करो। जानी ने उसे बीराहे के पास जाते देखा, फिर वह महकदे के महस में गुम हो गया। जानी को सगा मानो इन्तज़ार करते मुदत बीत गयी। जानी बहुत भबरा रहा था। दारोगा एक बाँदी के साथ सौटा, तो जानी की साँस में साँस आयी।

'बाँवी के साथ आकर राजकुमारी को नाव पर से जाओ। नाव को तुम्हारी इन्तज़ारी में दकने का हुकम दे दिया गया है।

.. ४२ ..

पपते चसते वे बूंदी की सीमा पर आ गये। घाम का बबन था। पहले पहुँचे हुए लोगों ने एक छोटी शीस के किनारे पड़ाव डाल दिया था।

मुस्ताफ़ान ने जानी से कहा हम हाड़ा के राज्य में आ

गये हैं । उनका हमारे साथ विशेष मित्र-भाव नहीं है, इसलिए सतक रहना चाहिए ।

श्यामसिंह हाड़ा बूदी का राजा था । उसके पुत्रपत्नी ने मुस्तान तथा उसके दस-बस के बारे में पहले से ही सूचना से रखी थी । मगर वह मुस्तान की हथियारबन्द सेना से भिड़ने में डरता था । श्यामसिंह का दुर्ग बड़ा मजबूत था । मुस्तान के लिए उसमें घुसकर हाड़ाओं को हराना सम्भव नहीं था । सकिन क्रिमे के बाहर मुस्तान के सामने हाड़ाओं का कोई मुकाबला न था ।

श्याह का समय आ पहुँचा था । मुस्तान के दस-बस को डेर हो रही थी । मावरमती को पार करने के बाद वे रेगिस्तान से गुजरने लगे । रेगिस्तान में छूट-छूट कुछ आँटी के वृक्ष अबदय थे, पर चारों ओर रेत ही रेत थी । तपते हुए सूरज के नीचे उन्हें सफ़र करना पड़ रहा था । आसमान बिस्फुल मात्र होने से गर्मी और भी तेज थी । बूदी के पास पहुँचने पर वृक्ष एकदम बदल गया । खुदक रेगिस्तान को पार कर अब पानी के एक अबदय स्रोत से माग के दोनों ओर दघर-उघर पूल और घास उगी हुई दिखायी दी । हरियाली भी दिखायी पड़ती थी ।

सूरज डूब चुका था । अपने गेमे के पिछवाड़े एकान्त में निहामदे अयेमी बीठी इस बात की प्रतीक्षा कर रही थी कि अंग्रस में कोई नहीं होगा और वह अंधरे में पीतल जल का मुल उठा सकेगी । उसने अपनी ओढ़नी उतार दी थी, सिर्फ़ महीन अगिया और घुटने तक का सहंगा सपेटे ठण्ठी रेत पर

हाथ के सहारे सेटी हुई थी। उसके बेश उसकी गालों पर सटके हुए थे, और नरम गर्दन के नीचे उसके धाब सुले गोरे चौड़े कंधे झुकते हुए सूरज की मखिम रोशनी में चमक रहे थे। छरहरा बदन कटावदार था। सुरुचिपूर्ण होकर भी वह घासना पैदा करने वाली थी। उसकी भिड़की तरह पतली कमर के ऊपर उसके भरे हुए उरोज बड़ ही लूबसूरत लग रहे थे।

फूलकुंवर अभी तक निहासदे को भूस नहीं सका था। ऊपर से तो वह सुस्तान से बड़ा भेस-बोस लिखाता मगर अन्दर अन्दर वह उससे बहुत जसता था। एक छोटे टीले के पीछे सड़ा वह निहासदे को निहारने में मग्न था। निहासदे का चेहरा बिल्कुल नवयुवतियों के जसा दीख रहा था। तपते हुए सूरज की गरम हवा और मकर में शृंगार भी बेकिक्री ने उसमें एक तरह का मासूम बलहूपन भर दिया था। स्त्री के प्रति मनुष्य की आविम भूस फूलकुंवर में तेज मकुरों की तरह महम और कूसार हो उठी। जस उसने निहासदे को बदन उचारे रेत पर सटे देसा तो उसकी इच्छा हुई कि ओर-ओर से चिल्लाये 'भुमे प्यार करो इस्बर के लिए मुझे प्यार करो।' वह अपनी इन्हीं इच्छाओं में इस इस्बर लो गया कि अपने स्थान को भूसकर निहासदे के पास तक जा पहुँचा।

निहासदे ने उसे देखा। उसने ओढ़नी लीचकर अपनी देह पर डाल ली और उसकी जालें डरावनी होकर फूलकुंवर को देखने लगीं। वह स्वतः पीछे हट गया।

यह क्या हो रहा है?' निहासदे ने मुस्से में भीगसाकर कहा।

“नहीं, इस तरह मुझ पर मत बिस्साओ।” उसने कहा, “अब मैं और अधिक नहीं सह सकता। तुम मेरी होमे वाली थीं। मगर मैं मुल्तान के हाथ से मार दिया जाता, तो अच्छा था, किन्तु इस तरह का असहनीय काट मैं नहीं भेंस पाऊँगा। उसने अपना पूँसा उठाया, और फिर वह इसम लाकर पीछे की ओर घूमा और भाग गया।

निहासदे की तीव्र घृणा से उसे ऐसा लगा कि खुद उसके भीतर भी एक तरह की खूनी और हत्या की भावना उदय हो गयी है। उसने महसूस किया कि निहासदे द्वारा प्यार किये जाने से उसे छटपटाती देखना उसे कहीं ज्यादा सुख देगा।

निहासदे भीतर से बड़ी अदान्त हो उठी। उसने अबदय हो उस अद्वान्त वग्न सिया होगा। वह एक दुःखरिच व्यक्ति था इसलिए सिवा भावेद और वासना के उसके दिल में निहासदे के लिए और कुछ नहीं था। क्या यह मुल्तान से कह दे ? मगर क्कमन घड़ान से कोई क्रायदा नहीं। उसे प्रतिहिंसा पर क्रायू रचना चाहिए। उसे चाहिए कि वह पूँसकुंवर को एक बामार भादमी समझे।

पूँसकुंवर भापा लो बठा। वह पागल की तरह अपने लुम में पहुँचा। उसके विबक-बुद्धि पर भावेद और ईर्ष्या छा गयी। भीतर में उसे बड़ी बेचनी थी। उसने पुनःपुनःते दृण कहा, ‘मुल्तान में बदला लो बस यही एक रास्ता है। हाड़ाओं की मदद करो। पर ऐसा योसले समय भीम बुद के लम के पाछे लड़ लम्बे व्यक्ति को बह नहीं देल सका।

॥ ४३ ॥

सड़की ढर से काँपती हुई मुस्तान के खेमे के सामने आकर गिर पड़ी। अब तक उसने सब-कुछ मुस्तान से कह न दिया, उसे शान्ति नहीं मिली।

अँधेरा हो रहा था। सब ने भी भरकर स्नान किया और वे अपने छमे में सौट आये। चाँद अभी तक नहीं उगा था। मौके को देख निहालदे अपनी केवल तीन सखियों के साथ धुपचाप अँधेरे के पर्दे में निकली। भीस वपण की तरह दिख रही थी। हाँ, कभी-कभी उसकी सतह पर सह्रदार भमकती झल्लें दौड़ जाती थीं।

उसने अपने मिट्टी जमे हुए पसीने से तर कपड़ उतारे और चैन की साँस से ठंडे पानी में उतर गयी। बदन को खूब मस मसकर नहाने के बाद वह कपड़ा लपेटकर बाहर निकली और उसने पोशाक पहन ली। फिर सीधे उठाकर उसने प्यार से भीस के किनारे खड़े पेड़ों के बीच से झँकते सिंथारों की ओर देखा। अचानक उसे लगा कि कहीं कोई है। शान्तिपूर्ण वृक्ष में जरा सुरसुराहट हो गयी। पेठ पर से एक जमगादड़ उड़ गया। बार-बार मुसीबतें सहने के कारण उसकी आरम रक्षा की भावना तीव्र हो उठी। वह नगे पाँव ही अपने छमे की ओर दौड़ने लगी। उसकी एड़ियाँ सम्भी नरम घास को दबाती-कुचलती हुई आगे धड़ रही थीं।

एकएक वह किसी पुरुष से टकरा गयी और हाँफते हुए उसने एक साँस ली। बचने के लिए उसकी छटपटाहट बँकार थी। उस पर झाड़ू पा सिया गया। भूँह में कपड़ा टूँसकर

उसे थोड़े की पीठ पर बाँध दिया गया। नतसौर्य पड़ी आँखों से, उड़ते बासों के बीच से, वह सामने के घने विस्तृत अन्धकार को देखती रही। वह पाटसबर्ण घोड़ा दौड़ता जा रहा था और नील के पूर्वी किनारे से होता हुआ तेजी से जिसे की मोर सरपट भागने लगा। निहालदे एक पुन्निदे की तरह बँधी हुई थी। उसकी अघसुसी आँखों से पकड़े जाने की घमं के कारण आँसू बह रहे थे। दो दासियाँ भी पकड़ ली गयी थीं। तीसरी, धर-पकड़ में, अँधेरा होने से छूटकर भाग गयी।

सुल्तान काँप उठा। तीसरी दासी ने जैसा वर्णन किया था और बिघर थोड़े गमे थे, उससे तो सुल्तान को यही लगा कि उसे पकड़कर ले जाने वाले हाड़ा ही थे। उसने भी 'अब मुझे क्या करना है?' चिन्ताकर प्रकट कर दिया कि वह भी भयभीत हो गया है।

फूलकुँवर और जानी भी यहाँ थे। हासकि फूलकुँवर ने ऊपर से थड़ी धबराहट दिखायी पर जानी को उसकी बातों में एक छिपी हुई खुशी की सहूर का अन्दाजा लग गया। फूलकुँवर के प्रति वह संकापीत हा गया, इसलिए वह कुछ बोला नहीं।

सुल्तान कुछ देर तक चुप रहा। आगे क्या करना चाहिए यह नहीं सोच सका। अन्त में बोला, 'अब हमें हाड़ाओं से सड़ता ही है, ईदवर हमारी सहायता करेगा।'

समास्यनैगिकों में एक तरह की सुगन्धुगाहट हुई, मगर कोई बोला नहीं। जानी ने आगे बढ़कर कहा, 'आपका कहना ठीक है महाराज। पर मैं नहीं सोचता कि रानी को अभी वे कोई नुकसान पहुँचायेंगे। रात भर हम जरा और बिचार कर लें।'

जब सब चले गये, तो आमी ने सुल्तान से कहा, “आप यह मुझ पर छोड़ दें, मैं किसी तरकीब से कल शाम तक रानी को यहाँ से बाढ़ेंगा। अगर मैं असफल रहा तो हम सब भी हमला कर सकते हैं।”

आमी ने तर्तकी बिजसी को बुसाया, और उसकी तरह बन-ठगकर तयार हो गया। सभकीसे, छरहरे बदन के खूबसूरत आमी को बिजसी का रूप घरले में कोई निष्पत्त नहीं हुई।

:: ४४ ::

श्यामसिंह अपने दरबार में बैठा था। उसे घेरकर मन्त्री गण सेनापति और दूसरे खास-खास छरदार बैठे थे। दाराब का दीर भस रहा था। दरबार का हाँस बहुत बढ़ा था—खूब खूबसूरत और अच्छा सजा हुआ। छाठ-भाठ जवान सड़कियाँ, जो लगभग अर्धनग्न थीं, अफ्रीम की गोसी के साथ-साथ बराब कामकर दे रही थीं। श्यामसिंह पर नया चढ़ गया। दो सड़कियाँ उसे पता लग रही थीं। एक कपमीरी लड़की भीने बस्त्र पहने बड़ी मुकुल मुद्रा से देह सभवाठी हुई, कामोत्तेजन मूर्य कर रही थी। नचे में श्यामसिंह कभी दपया तो कभी जबाहरात या जो भी हाथ में आया, सड़की पर फेंक देता। वह मूम-मूमकर नाचती रही जब तक कि वह थककर एक मूर्ति की तरह जब नहीं हो गयी। संगीत बस गया।

इस समय एक अपुव सुन्वरी को राजा श्यामसिंह के सामने वेद्य किया गया। उसने कन्धों के पीछे सहराती रेदामी चादर लटक रही थी। सामने किनखाब की अगिया और हरे पाँधरे की चमकती पीनें मड्डिम रोधनी में म्मिमिसा रही थीं, मानो वह अपनी घोमा में दमक रही हो।

उसने आदाव मजाते हुए कहा "एक अरसे से मैं इस दिन की इन्तजारी में थी। मैं केलागढ़ की मर्तकी हूँ। आज आपके आगे नाचने की मेरी बहुत दिनों की तमन्ना पूरी हुई।"

"क्या कहा? केलागढ़! मुझे बहुत खुशी हुई बहुत-बहुत।" श्यामसिंह ने लड़खड़ाती जबान से कहा "मेरे पास केलागढ़ का ही एक और मनमोस नगीना है। निहास निहालदे।"

'अगर हुजूर का मतलब महाराजा माध की बेटी से है, तो वाह क्या कहना! मैं तो उनके सामने कई बार नाच चुकी हूँ।"

"वाह खूब! वही वही तो है। अगर तुम जरा सीधी कर सकौ, तो मुँह माँगा इनाम मिलेगा।

"मैं जकर कोगिरा करूँगी।"

माघने वाली की पीशाक में सजे जानी को कोई नहीं पहचान पाया। उसे बड़ी खुशी हुई कि बिना खास दिक्कत के उसे निहालदे से मिलने की परवानगी मिल गयी।

दीवान पर एक ओर निहालदे मिर मुकाये पड़ी थी। डरी आँसों से वह रूह रूहकर दरबाडे की ओर देख लेती। वह बिम्बुल मकेसी थी। उसे मबिप्य की चिन्ता सता रही थी।

जानी अन्दर आया। निहासदे ने आँखें मसते हुए उसे देखा।

‘हाँ, मैं ही हूँ, जानी।

लेकिन लेकिन कैसे !’ धीरे-धीरे वह समझने की कोशिश करने लगी। जानी को सिर से पर तक देखकर वह हँस पड़ी। ‘अब मैं आराम की साँस ले सकती हूँ।’

‘बकत बरबाद मत करो। झटपट मेरे कपड़े पहन लो। मैं परदे के पीछे छिप जाता हूँ और तुम अपने कपड़े मुझे दे दो।’

‘भागना ? क्या तुम समझते हो यह सम्भव है ?’

‘घबरा ! यह कोई आसान काम नहीं है। मगर अब और क्या नई मुसीबत आयेगी। दोनों गवैये बाहर इन्तजार कर रहे हैं, उनके साथ हमारे पड़ाव तक घसी जाओ।

‘नहीं मैं नहीं जाऊँगी। तुम मारे जाओगे।’

‘बहस मत करो। जल्दी भागो। मैं बादा करता हूँ कि बिना श्यामसिंह को मारे मैं नहीं मरूँगा।’

उसके माथे पर दिक्कत पड़ गयी। एक आशा-किरण से स्फूर्ति पाकर उसने सिर हिमाया। दोनों ने जल्दी से कपड़े बदल जाले, और निहासदे सुस्तान के छेमे में जाने के लिए बस पड़ी।

जब श्यामसिंह ने कमरे में प्रवेश किया तो निहासदे की पोशाक पहने, जानी पेट के बस एक हाथ सिर के नीचे रखे सेटा हुआ था। वह अपना धार्य पाँव घुटने तक उमटा उठा कर तान देकर भीमे स्वर में कोई गाना गुनगुना रहा था।

मगर सकेत से आह भरकर और अपने सुकोमल हाथों को हिलाकर उसने अपना मनोरथ समझा दिया ।

“मैं ही तो वह अभागा सुस्तान हूँ । अगर मैं कहूँ कि मैं अपने आप से डरता हूँ तो क्या तुम विश्वास करोगी ? मेरा मन क्या कहता है, यह तो समझ ही गयी होगी । मगर वधम पूरा न कर सकूँ तो कुछ भी कहना बेकार है ।

“आप आप ही बड़ी निराशा भरी बातें कर रहे हैं ।” स्नेह से भरा उसका काँपता कण्ठ हकसाने लगा ।

भीनी भीनी ठंडी हवा का एक झोंका आया । चारों ओर फँसी मोठिमा की निहासदे के बस्त्रों से उठी, मधुर सुगन्ध सुस्तान के मस्तिष्क में भर गयी । उसे लगा कि वरसों से बह इठना एकाकी नहीं था । क्या कुछ नहीं कर सकता ? उसने एकाएक जल्दी से घूक निगसा और अपने को सयत करते हुए एक लम्बी साँस मरी । ‘एक ही रास्ता है । मुझे अपने पिता से कहो कि वे राजकुमारों और राजाओं को आमंत्रित करें और तल-पात्र में पड़ती परछाई को देखकर मछली की बाँटें बेचने के लिए कहें । मुझे विश्वास है कि इस परीक्षा में मेरे पिता दूसरा कोई उत्तीर्ण नहीं हो सकता ।’

राजकुमारी को यह बात ज्ञेय गयी । उसका मुँह खिल गया और याँवें खमक उठीं । काँपती हुई वह उठी । उसकी प्रत्येक क्रिया, और प्रत्येक भंगिमा में दृढ़ता और सुन्दरता घुसी हुई थी । वह महल की मोर लीटने को उठावसी हो उठी । उसका मन बादसा में मँडरा रहा था, और वह भविष्य की तिसी फुनवाटी को देखने लगी । सुस्तान उसकी धूमिल

श्यामसिंह ने हँसते हुए कहा 'अच्छा अच्छा मेरी बड़ी तुम्हारी क्रोधाग्नि बुरु गयी ? वह नसे में घूर था । जानी धीरे धीरे उठा । चाँदी के एक प्यास में उसने राजा के सामने साल-साल सुगन्धित घराब पेय की । घराब का प्यासा लेने के लिए हाथ बढ़ाते हुए श्यामसिंह बोसा में तुम्हारे प्यारे हाथों से जहर का प्यासा नी ल सकता हूँ ।

जानी ने फुर्ती से हाडा को हाथ सींचकर नीचे गिरा दिया और पर्दा फाड़ उस कसकर बाँध दिया । उसने श्यामसिंह का साफ़ा अपने सिर पर बाँधा और उसके कपड़े पहनकर बाहर हो गया । पकड़े जान के डर से धीरे धीरे बड़ी सावधानी से क़दम बढ़ाते हुए, बिना किसी अटकन के वह घोड़े के पास जा पहुँचा । शाम हो चुकी थी । अँधेरे ने उसे क़िले से बाहर निकलने में मदद की ।

:: ४५ ::

जानी के वापस न सीटने से मुस्तान बहुत बेचन हो रहा था । निहासदे के भाने का उसे पता चल गया था । कहीं जानी की चासाकी इस बार बिकस तो नहीं हो गयी ।' उसने कहा ।

गोपू बोसा 'देखने में वह दुबला-पतला तो जरूर है मगर बिस का बहुत मजबूत है । सीटेगा वह जरूर ।

जानी अपने असली रूपके पहन पहने निहासदे के सामने हाथिर हुआ ।

निहास ने पूछा, "श्यामसिंह के साथ कैसी बीबी ?"

जानी ने होंठ चिन्काते हुए कहा ' हूँ, काम-वासना के मन्त्र में घुल एक बीमार आदमी । '

फिर वह सुल्तान के सामने आकर बोला "महाराज आपको अब सड़ना होगा । पहली बार हम जीत तो गये हैं, पर दुश्मन के पास बड़े सड़ाकू सिपाही हैं । किन्तु फूमकुवर की निगरानी के लिए मुझे छोड़ दीजिए ।"

सुल्तान ने गोधू को आज्ञा दी कि वह बस हजार सैनिकों को लेकर उस ऊँचे टीले के पीछे जाय, जहाँ दुश्मन ज़रूर मोर्चा बनायेगा ।

यह बहुत मुश्किल काम था । सुबह होने के पहले ही यह ज़रूरी था कि भीस के दूसरे पार से और शत्रु-सेना की बायीं भुजा से होकर वहाँ पहुँचा जाय । इसके लिए खास फेरे हुए घोड़े होने चाहिए, क्योंकि ज़रा-सी आवाज से भी शत्रु को पता चल सकता था । सुल्तान ने कहा " सेजी से जाओ, ईश्वर तुम्हारा साथ देगा ।

सुल्तान के खेमे के सामने मशार्तों के जमने से दिन-जैसी रोशनी हो गयी थी । वह शत्रु को यह नहीं बताना चाहता था कि वह डरा हुआ है, और इसलिए मरज-गरजकर आदेश दे रहा था । देखते-देखते सैनिक सड़ने के लिए लँस हो गये ।

जानी ने देखा कि एक दुबसा नाटा आदमी चुपचाप घोड़े पर फूमकुवर के खेमे की ओर जा रहा था । जानी के असाध

छायद ही किसी ओर की नजर उस पर पड़ती। जानी न
म्यान से तत्तबार निकास सी और बिना दिखावे दो तीन
फुट बढ़ आया। जब तक कि घोड़ा बगल से भागे, जानी की
तसबार घाड़े के सीने के आरपार हो चुकी थी। सवार गिर
पड़ा। अब जानी के लिए उसे पकड़ना बड़ा आसान था।

पहाड़ी की ओर पुड़सवारों की एक बड़ी टुकड़ी गरजती
हुई आ रही थी और मूय की किरणें उनके सफ़ेद छात्रों पर
सुनहरा रंग चढ़ा रही थीं। हाथी बिचाड़ रहे थे घोड़ हिन
हिना रहे थे, सुरहिया वज उठी थीं म्यंन आपस में टकरा
रहे थे और मगाड़ धमक रहे थे। सुबह का सूरज जब उनकी
मुटिठियों में धमी तसवारों की धारों पर धमकने लगा तो
मुस्लान की सेना धनु-दल पर टूट पड़ी। गरजती हुई पदल
सेना के पीछे राजसी आन-आन का एक सम्मा खूबसूरत पुरप
घोड़ पर सवार था। यह औपचारिकताओं का समय नहीं
था—बाकी सेना के साथ मुस्लान नी लपककर सम्वे खाँड़े से
मार-काट करने लगा। कनी वार को बचाकर पोड़े को असग
छोष सता, सैनिकों और घोड़ों का समूह आगे-पीछे होता कनी
सहर की भाँति भाग भूमता और कनी पीछे हो जाता।
बायें हाथ में दास लिये और दायें हाथ में सङ्ग सेनास
बिघाससिंह एक मीनार की भाँति लड़ा था। वह धीरे धीरे
आगे बढ़ रहा था। उसका सङ्ग जरा-सा भूमता और एक
पुड़सवार उमोन भूमने लगता। गिरे हुए घोड़ों की साँगे
पस्ता रोकने समी। इस पराक्रमी योद्धा के आने से हाड़ाओं
में नई उमंग आ गयी। मुस्लान की पुड़सेना पीछे हटने लगी।

मुस्ताफ ने चिल्लाकर कहा, "उको बिद्यालसिंह" और धीधता से आगे बढ़कर एक पल में मुस्ताफ उस बहादुर योद्धा के पास पहुँच गया। अन्य हाडा मुस्ताफ की ओर बढ़े। दूसरे सवारों की मुस्ताफ ने परबाह न की। अपनी मयामक तलवार से उसने घोड़ों के गले काट दिये और सवार घराघायी हो गये। मृत जानवरों की देहों पर कूद-कूद अब वे दोनों सड़ने लगे। मौक़ा देखकर मुस्ताफ ने बिद्यालसिंह के घोड़े पर प्रहार कर उसे नीचे गिरा दिया।

इसी समय गोषू ने पीछे से हमसा किया। हाडाओं के पाँव उसड़ने लगे। श्यामसिंह ने समझ लिया कि आज का दिन हाथ से गया। उसके बाकी सनिक भी भागते जा रहे थे। कुछ ने फ़िले में भागकर जान बचायी। तोपचियों और तीरन्दाजों ने इन भागने की कोशिश करने वालों पर प्रहार शुरू किया। पर यह उन्हें सिर्फ़ डराकर हथियार डालने के लिए किया गया था न कि उन्हें ख़त्म करने के लिए। श्याम सिंह तलवार के वारों के बीच सड़ता हुआ गिर पड़ा। बिद्यालसिंह पकड़ लिया गया।

श्याम के बन्त बिद्यालसिंह को मुस्ताफ के सामने हाज़िर किया गया। वह ज़ज़ीरों से बँधा हुआ था। उसने मुस्ताफ के बारे में बहुत-कुछ सुन रखा था और उस दिन मुस्ताफ से

वह लड़ा नी या पर उसे निकट स परसन का अवसर कमी नहीं मिला था। मुल्तान एक साधारण सनिक की भाँति बैठा हुआ था। देखने स भद्रता टपकती थी, मगर चेहरे पर उदासी का भाव था। यद्यपि युद्ध के रातों में भाग्य उस बार-बार खींचकर बसा दिया करता तथापि उसे युद्ध स आन्तरिक पूणा थी। उस पर दूसरी नजर डालन से ही उसके साहस और भयता का अनुमान होता था। उसका ब्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था कि विद्यासिंह उससे आँखें नहीं मिला सका।

विद्यासिंह न कहा हम अपने अपराध का पता है। वह अगुन दिन था जिस दिन मरे भाई ने फूलकुँवर की राय मान ली।

फूलकुँवर गुस्से से खींच पड़ा 'तुम्हारी यह मजास ! तुम्हारे इस नूठ पर कौन विश्वास करेगा ? मरे पाप भी उसका एक सनूठ है। जानी ने धोनी धावाब म कहा और उसन पिछली रात पकड़ गय नाट बादमी का पेश कर दिया।

मुल्तान स्थिर बठा चुपचाप यह सब दस रहा था। जानी न मुल्तान क चहर पर सनिक बादबय का नाव देखकर कहा 'ता भाप इस जानत थ ?

नहीं सय कुछ नहीं जानता था। मगर मैंने यह नहीं सोचा था कि फूलकुँवर इस हद तक जा सकता है।

फूलकुँवर उसक चरणों पर गिर पड़ा।

उदार हृदय मुल्तान उठ गड़ा हुआ और बड़ नाई की तरह उमन फूलकुँवर को दानो हाथा स उठात हुए कहा मैं

महाराज कामध्वज के उपकार से उन्मत्त नहीं हो सकता। उन्होंने मुझे तुमसे ज्यादा स्नेह दिया है। किन्तु उनकी शुभ्रता पर तुम एक कासे दाग हो।

फूलकुंवर के होंठ हिले, पर मूँह से कोई शब्द नहीं निकला। वह नतमस्तक झड़ा था, उसकी आँखें सुमी थीं, पर वह उनसे कुछ देख नहीं रहा था। सुल्तान ने उसे प्यार से भपपपाते हुए कहा, 'भाई, मेरा जीवन सदा तुम्हारे हाथ में है' और फूलकुंवर को वहाँ से विदा किया।

विशालसिंह की ओर देखकर उसने जजीरों को जोसने के लिए कहा, एक बहादुर राजा से भूवी का सिंहासन सासी नहीं रहना चाहिए। अपने भाई की गर्दो पर बठो। संकित अभी हमारे साथ बहुत मारू के यहाँ बसो।

४७ ::

श्यामसिंह के यारे में जानी की योजना सबसे अधिक साहसपूर्ण थी। श्यामसिंह क्रुद्ध हो उठा। फटने के पूव श्वासा मुखी की तरह उबसता और खदबद करता हुआ वह अपन प्रज्वलित भावों के निकसन का मार्ग ढूँढ़ता रहा। उसने अपनी सेना को आदेश दिया कि वह सड़ने को तयार रहें। किल के बाहर की सड़कें में वह बड़ी प्रतिकूल परिस्थिति में था। मगर क्या होगा इसकी उसने परवाह नहीं की। किसी भी तरह सुल्तान से वह बदसा सना चाहता था।

विशामसिंह ने कहा, 'यह मेरा बाईसवाँ चास है। मैं एक राजपूत की परम्परा में बड़ा हुआ हूँ। जो कुछ मैंने सीखा है और जो कुछ मुझे पढ़ाया गया है वह इसीलिए कि एक विद्यालय हृदय बहादुर राजपूत बन सकूँ।'

वह सुल्तान का बड़ा भक्त था क्योंकि सुल्तान राजपूती ज्ञान का मूल रूप था।

'यह तो आपकी उदारता है। मरी खुशामद न करें।' सुल्तान ने बात काटी।

लेकिन विशामसिंह कहता गया। उसने यह भी कहा कि सुल्तान के प्रति उसके भाई की ईर्ष्या उसे बड़ी दुःखदायी थी। भाई का हुक्म सुन वह कौपते कसबे से अंधेरे में ठाकता हुआ बठ गया। फिर वह श्यामसिंह के पास गया। वह क्षण भर रुका, फिर बड़ धरल स्वर में बोला 'क्या हम बराबर नहीं हो गये? हमने फूसकूवर के कहन पर जो कुछ किया वह गलत था। अब हम सुल्तान को, जहाँ वह जा रहा है जान देना चाहिए।'

श्यामसिंह ने व्यग्न से कहा, 'मैं नहीं जानता था कि तुमने बुद्धियाँ पहन ली हैं।

'बुद्धियाँ? नहीं नया! मैंने एक भले आदमी की तरह जिन्दगी बितायी है। मैं राज्य की सदा सभा करता रहा हूँ और अन्त तक करता रहूँगा। लेकिन भगवान् के सामने मैं यह जकूर करूँगा कि हमारा पक्ष अन्याय का है।'

'क्या कहा? हम अन्याय की तरफ हैं?' श्यामसिंह ने दाँत किटकिटाते हुए कहा।

दूसरे दिन सभी फाटक से निकलकर पहाड़ी पर आ गये। केसरिया पगड़ी बाँधे ७० हाडा सरदार व सेनापति, जिनके घोड़े बस्तर से उँके हुए थे, अरबी घोड़ों से पैदा किये हुए सजील घोड़ों पर बुद्धसवार सेना, और निडर नौजवान पैदल सैनिक। मगर सबके चेहरों पर ज़रा सजीवगी थी। यह सोच कर कि उनका पसड़ा कमजोरी की तरफ है वे उदास थे।

श्यामसिंह आपे से घाहुर हा रहा था। उसका चमकता हुआ लौबई मुख उन सेनापतियों को आसक्ति कर रहा था, जिनके जीवन का सक्य लड़ना ही था। विश्वाससिंह ने भारी मन से उसका साथ दिया क्योंकि लोगों पर छापी निराशा का ज्ञान उसे हो गया था।

जब सभी एकत्र हा गये तब श्यामसिंह ने अपने भाई और मन्त्रियों को बुलाकर पूछा, मैं आप लोगो की राय जानना चाहता हूँ कि हमें सुल्तान से लड़ने के लिए आगे बसना चाहिए या यहीं रुकना चाहिए। वे लोग सोचने लगे। अन्त में विश्वाससिंह ने मानो सबकी तरफ से सम्बोधित करते हुए कहा 'सुल्तान को अगर नरबसगढ़ जाना है तो वह इधर से ही गुजरेगा। हम ऊँचाई पर होने से मजबूत पड़ेंगे। उसको यहीं धान दीजिए।'

इस तरह निर्णय हो गया। उन्होंने आ रहे शत्रु के विरुद्ध अपनी सेना तैयार कर दी।

॥ ४८ ॥

कोई एक अग्रनयी नारसिंह डोसकुंवर के सामने उपस्थित हुआ। वह खूब सम्बा था। उसको मुस्तान और उसकी आवाज इतनी बुसन्द थीर फिर भी इतनी माठी थी कि वह किसी अभिजात वग का मालूम पड़ता था। वह हिरन के मुसायम वम का एक थला लिये हुए था। उसके चारा ओर सोने की किनारियाँ थी। उसे खासकर उसन वा अत्यन्त मोहक बड़े-बड़े मोती निकाल। राजा न जिज्ञासा से उसकी ओर देखा।

‘महाराज मैं स्वान्त मुसाय यात्रा करता हूँ। मैं उत्तर म पूमा हूँ पूव म उत्कल तक गया था, और दक्षिण म बीजापुर तक। अगर आप मरी यह साधारण-सो नोट स्वीकार कर, तो मैं कुछ दिना तक यहाँ ठहरना चाहूँगा।

राजा न नोट स्वीकार करत हुए कहा मुझ तुम्हारे ब्यवहार से बड़ी प्रसन्नता हुई है।

यह तो आपका उदारता है।

नारसिंह निरय दरबार म आन सगा। यहाँ तक कि यह राजा क साथ यात्रा पर भी जान सगा। और सबक पास ता हथियार रहत पर उसक पास सिफ बंडू हाथ का सम्पा बाँस का डडा था जा थोड़ की जीन से सटकता रहता था।

‘तुम्हारे और हथियार क्या हुए?’ राजा न एक दिन पूछा।

अगर मरन क लिए न सड़ना हा, तो हथियार की क्या बकरा? वम यह डडा हा काफ़ी है।

उसे महसूस से मदिरापान के भी निमन्त्रण मिलने लगे। जब-तब वह कोई-न-कोई खूबसूरत चीज लेकर राजा को भेंट करता। राजा का वह इतना अधिक प्रिय पात्र बन गया कि कभी-कभी उसके राज्य के मामलों में भी सलाह ली जाने लगी।

रूपादे के विवाह का दिन पास आ रहा था। मारू के पिता बुढसिंह और उसके सगे भाई मेषसिंह मूल्यवान उपहारों के साथ आ पहुँचे थे। बुढे के क्विची भी कुछ दिन पर आने की याता थी। मगर सुल्तान के आने की कोई खबर न थी। दोसकुंवर ने एक दिन कहा “सुल्तान पर क्या भरोसा और वह क्यों आने लगा ?

मारू बोली ‘ अब उसने आने का वचन दिया है तो जरूर आयेगा।

गर्मी के भाखिरी दिन थे। रूपादे के विवाह के कुछ ही दिन रह गये थे। खबर आ पहुँची कि बुढा माराठ के साथ तीसरे दिन आ रहा है।

अब भेंट देने का समय आ गया। मारू को सभी सम्बन्धियों का स्वागत करना था। एक-एक करके वे अपने अपने पद के अनुसार मारू को उपहार दत्त। अतिथियों में बुढसिंह का पद सबसे बड़ा था इसलिए उसे ही पहल उपहार देना था। ‘हमें इस धृष्ट से मुक्त हो जाना चाहिए जिससे कि हम विवाह में प्रसन्नतापूर्वक भाग ले सकें।’

इस प्रस्ताव से मारू विचित्र परिस्थिति में पड़ गयी। यह सोचने लगी कि बिना क्विची को माराठ किये किस तरह

परछाईं को छाकता रहा। अब तो उसके द्वारा बिसरामा सौम्य शान्त बातावरण ही रह गया था। वह भी उठ खड़ा हुआ। वैसे उसकी इच्छा तो निहासवे के पास ही बने रहने की थी। उदास मन से उसने घोड़े को संभाला।

जब महाराजा कामध्वज ने यह देखा कि उनका बेटा शिकार से अकेला सीट रहा है तो वे बड़े चिन्तित हुए। रात में काफ़ी दूर बाद जब सुस्तान शहर की सीमा पर सौटा तो उसे तलाशने बाघों के झुंड के झुंड मघानों सिये घूम रहे थे। उसने ऊँधेरे में पुकारा और मघानों उसकी ओर घूम पड़ीं। वे दौड़ और राजकुमार को महाराजा के पास ले गये। उस सौटा बेश राजा निश्चिन्त हुआ।

॥ २ ॥

केसागढ़ नगर बड़ ही सुचारु रूप से सजाया गया था। सहर के बीच में एक विशाल पंढाल भी बनाया गया था। आसपास के राज्यों से वीसियों राजकुमार और राजे आये थे। सारा नगर उनसे और उनके अनुचरों से भर गया। चारों ओर वैभव दिखाई देता था। पत्तझड़ का मौसम था रहा था और पेड़ों ने पत्ते झड़ने लगे थे। पत्तों पर सरसू की सासी दीत रही थी।

सबसे ऊँचा तो राजमन्दिर दीक्ष रहा था। उसके चारों ओर सास पनेर के वृक्ष थे। हर पर्व पर महाराजा यहाँ पूजा

यह सिद्धि टासी जा सके। मुल्तान अभी तक नहीं आया था। उसके जैसे पराक्रमी व्यक्ति को, आमंत्रित कर वह नहीं चाहती थी कि किसी अन्य से उपहार उससे पहले लिया जाय।

अपने पिता के सम्मुख सादर शीघ्र मुकाबर वह बोली, "पिताजी, मैं आपकी बेटी हूँ, अब मुझे आपसे किसी भी तरह का बुराब नहीं करना चाहिए। मुल्तान को जब बुसाया गया है तो क्या हमें उसकी प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए ?

बुर्दासिह ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा। "बेटी, सुन, तुम्हें अभी बहुत-कुछ सीखना है। यह मेरे और तरे बीच की बात नहीं है। यह तो दो राज्या की बात है। जिसका पद ऊँचा है इसका निर्णय दूसरे लोग करेंगे। निदरपय ही तुम्हारे पिता और भाई पद में मुल्तान से नीचे नहीं हैं।

'पिताजी, आप मेरे साथ अन्धकार कर रहे हैं। मैं आपके सम्मान के विरुद्ध कुछ नहीं कहती। मुल्तान बाहर का व्यक्ति है, जिसे मैंने भाई की भाँति आमंत्रित किया है।'

बुर्दासिह बहुत झुंझसाया। वह महाराजा ठासकुंवर के पास गया, 'आखिर तुम पुरानी परिपाटी से अन्धकार नहीं हो। एक नवयुवक मेरी जगह कैसे से सकता है ?'

मारु भीतर से बहुत डर गयी। ठासकुंवर की इस्पात जगो ठडी भाँति मारु के हृदय को छदन लगी। यह एक क्रदम पीछे हटी। राजा अन्धकार में ब बिना रक्षकों को लिये स्वयं उसक महल की ओर दौड़।

"तुम अपने पिता और भाई को मुल्तान की प्रजा नहीं मान सकती। मैं किस अपनी भेंट दूँ।"

‘आप यहाँ महाराजा हैं मगर यह मत भूलिए कि भोमसिंह से मरी रक्षा सुल्तान ने ही की थी।’

‘अच्छा ! तो क्या तुम अब भी सुल्तान से प्यार करती हो?’

‘सुल्तान-जैसे बहादुर राजा का अपमान मत कीजिए । कम-से-कम इसना तो बाव रसिए कि एक दानव से उसने ही आपकी रक्षा की थी ।

‘क्या उसके लिए हमने उसे छह बप तक अपने यहाँ छरण देकर वह ऋण नहीं चुका दिया?’

‘कौन जानता है कि भोमसिंह की तरह का कोई और भी हम पर आक्रमण न कर दे । अगर आप सुल्तान-जैसे प्रबल मित्र को जो रेंगे, तो हम कहीं के नहीं रहेंगे । अब यह यहाँ दस दिन में पहुँच जायगा । क्या आप १० दिना तक प्रतीक्षा नहीं कर सकते ?

‘नहीं रामीजी नहीं । वह तुम्हारा आराध्य हो सकता है, मगर मेरे लिए नहीं ।

मारु का चेहरा गुस्से से साप्त हो गया । मैं अपने कमर में आ रही हूँ और सुल्तान का स्वागत करन के लिए ही निकलूंगी । इसना कहकर वह बसी गयी ।

महाराजा भयानक प्रोष से काँपने लग । वह नहीं जानत था कि एसी परिस्थिति में क्या करना चाहिए । धीरे धीरे वह बाहर आये । सामने से उन्होंने मारसिंह को आत बना । उसे देखकर महाराजा को हमनी दान्ति हुई कि वे महल की सीढ़ियों पर वहीं बैठ गये ‘मारसिंह तुम भड़े मोठे पर आय ।’ उन्होंने सारी बातें बताइ ।

नारसिंह बड़ा सतक था। सुल्तान से दुदमनी दिखाना वह नहीं चाहता था। उसने धड़ी खतुराई से कहा 'महाराज आप सुल्तान को भीतर नहीं आने देना चाहते, तो अपना मुख्य द्वार बन्द करा सेने से काम बन जायगा।

जैसे ही दूल्हा किस के भीतर पहुँचा राजा ने मिहद्वार बन्द करने की आज्ञा दे दी।

:: ४६ ::

साबरमती पार करने के बाद सुल्तान तेजी से बढ़ने लगा। अरावली की घाटियों के सँकरे रास्ते में सिजसिजेपन के कारण साँस ममा भी मुश्किल था। पहाड़ी के बाद बारवा बजर धरती से होकर बसने लगा। मूय की किरणें बट्टानों पर भाग बरसा रही थीं। घबकते हुए नेत्र की तरह मूय बिना पमके गिराये ताक रहा था। मुल्तान बिना कहीं बीच में एक नरकमगड़ के हरे-नरे राज्य की ओर बढ़ रहा था, जो उसके लिए मृगजाल बना हुआ था। अन्त में जिंसा दिनायी पडा। जिने की भूरी बिनास दीवारें पहाड़ी की ऊँची-नीची ढमान पर दूर तक फसी हुई थीं।

यहाँ उन्होंने अपनी सेना को दूसरे ढग से सड़ा लिया। जिने के सिंहद्वार से आम के लिए निहामदे की पासकी को सबसे भागे रखा गया। उसके पीछे निहाम की वासियाँ थीं। औरतों के पीछे मुल्तान अपने गूबमूरन अष्ट्रे छोड़े पर मवार

था। उसके दोनों ओर गोधू और पानी थे। उनके पीछे सेना पति और फौज थी।

पामकी सिंहद्वार पर पहुँचे। वह बन्द था। रास्ता रोके धीसियों सैनिक लड़े थे। पहले तो वह विश्वास नहीं कर सकी। उसका सिर झुक गया जब उसने देखा कि रास्ता रोकने वाले राजा का आज्ञापत्र दियेला रहे हैं कि यहाँ वे क्यों लड़े हैं। जीवन में उसने बहुत-से अपमान सहे थे, मगर नरवसगढ़ में उसे ऐसी उम्मीद नहीं थी।

उसे ताज्जुब हुआ “सुल्तान मारु का अपनी बहन कहता है, फिर क्यों राजा उसे भीतर नहीं घुसने देते?” एक प्रकार की कुत्सित बात निहानवे के शान्त प्रसन्न मन में उठी—क्या मारु और सुल्तान के बीच कुछ है? उसने बड़ा प्रयत्न किया कि ये विचार दब जायें।

बिपित्र भाव से सुल्तान ने अपना थोड़ा भागे बढ़ाया। लेकिन दरवाजा उसके लिए भी बन्द था। उसने थोड़ा घुमाया और पीछे से आया। जैसे उल्मासपूष स्वामत की आशा उसे थी पर यहाँ दरवाजा उसके लिए बन्द है। अब पीछे सौटना तो असम्भव था। वह डोमरूँवर से लड़कर उसे पराजित नहीं करना चाहता था, जिसकी परती ने उसे धाई भान लिया था। पबराया हुआ वह प्रवेश द्वार के मेहराब तले खड़ा रहा। दूबते सूर्य की अन्तिम किरणें उसके शिरस्त्राय पर चमक रही थीं।

॥ ५० ॥

पहाड़ी पर एक जलधारा थी। उससे एक स्रोत क़िसे के जसायार तक से जाया गया था। जहाँ वह नहर क़िसे में प्रवेश करती थी, वहाँ पर एक घेरा था। दो बाघ निगरानी के लिए वहाँ रहे मये थे। स्रोत का मूल स्रोत कहाँ है यह एक गुप्त बात थी। घुने हुए कुछ लोग ही इसे जानते थे। अगर कोई उसे किसी तरह जानकर वहाँ पहुँचता तो बाघ उसे मार डालते।

गोशू ने कहा, 'मैं उसके मूल स्रोत के बारे में जानता हूँ, फिर भी मुझे मुक़द्दस तक वहाँ पहुँच जाना चाहिए, नहीं तो लोग मुझे पहचान लेंगे। इसने अलावा अगर बाघ गरजे तो सैनिकों का ध्यान उधर बँट जायगा।'

'बाघ तुम पर घूँसे तो बूढ़ने दो, हम सकड़ी की कीसों लगी डाल बनवा देंगे। उससे तुम्हारा बचाव हो जायगा। मुस्लान ने दिलासा देते हुए कहा।

भटपट सकड़ी की एक डाल तैयार की गयी जिसमें कीसों लगी थी। गोशू ने द्वार खोलने में अपनी मदद करने के लिए तीन सैनिकों को चुना।

जब दाम का बंधेरा फँसने लगा, तो वे अपने मस्तब्य स्थल की ओर चल पड़े। उन्हें पहाड़ी की चढ़ाई के उस तरफ़ पहुँचना था ज़िपर से नीचे उतरकर क़िसे के पीछे की ओर जाने का रास्ता था। और वहाँ से वहाँ पहुँचना असम्भव था। तृतीया का चन्द्रमा हँसिए की तरह आकाश में सटका हुआ था। इससे उन्हें बीच के ऊबड़-खाबड़ स्थानों को पार

करने में कुछ सहायता मिली। बन्दूक इस समय टीसे के पीछे था, और पहाड़ी की दूसरी ओर था अँबेरा। टीसे के बूझरी ओर कुछ झोंपड़ियाँ थीं। वे उनके निकट पहुँचे, तो एक बूझा भूकने मगा। गोधू ने रुककर इशारा करते हुए कहा, 'हम उधर से चलेंगे, नहीं तो रास्ते में जो आयेगे।'

कुछ सोचने के बाद उन्होंने जंगल की ओर से झाँपड़ियों के पार निकल जाने का ठक किया। पर जंगल इतना घना था कि झाड़ू-झाँठ से उनके कपड़े फट गये और हाथों में लर्राँचें पड़ गयीं। लकड़ी की ढाल लेकर चलना भी मामूली हो गया, इसलिए वे बन्ती के इस तरफ ही बाहर आ गये।

"बसो अपनी किस्मत पर भरोसा करो" गोधू बोला।

जल्दी-जल्दी वे अपनी मजिद की ओर बढ़ गये। पहुँचने में उन्हें देर हो रही थी। पर जल्दी-जल्दी चलकर वे आधी रात को सोते के पास पहुँचे। उनके हाथों में लर्राँच सगने से सून जम गया था। सोते के स्वच्छ जस में उन्होंने हाथ धोये। फिर लकड़ी की ढाल को अपने सिर पर रख वे एक-दूसरे के पीछे-पीछे चलकर नहर में डुबकी लगा गये। साँस रोककर वे चलते रहे और जब दूसरे बिनारे पर पहुँचे तब सगभग उनका बम फुट चुका था।

बाहर निकलकर साक़ हवा सेने के लिए वे लड़े ही थे कि एक बाघ अँबेरे रास्ते से बाहर निकला। उसने अपना भारी भरकम शरीर हिमाया और वह कुछ कदम आगे बढ़ा और बूझने के लिए तयार हुआ। गोधू ने जैसे ही ढाल को ठीक किया, कि बाघ गरजकर बूझ पड़ा। ढाल में सगी बड़ी-बड़ी

फीमें उसकी बेह में चुन गयीं । उन्होंने बाल वहीं छोड़ दी, और वे चुपचाप घेरे व सीसियों की ओर बढ़े । उनमें से एक उस पार जा चुका था जबकि दूसरा बाघ धीरे धीरे सामन आ लडा हुआ । तीनों बिना हिस हुसे हाथा में बटारें घामे लडे रहे ।

बाघ पूरना रहा फिर गुर्गया और दहाड़कर पीछे सीन गया । यह उनके लिए बहुत अम्छा मौका था । वे घेरे के पार हो गये ।

मुदह होने ही वाली थी पर किस्मत ने उनका साथ दिया । बिना किसी दुर्घटना के उन्होंने जिने को पार किया । फाटक पर चार सन्तरी गड़ थे । वे छिपकर फाटक तक पहुँचे और गोधू ने उनमें से दो पर दो बटारें फेंकीं । दोनों गिर पड़े । गोधू उन बच दोना के लिए अकेला ही काफ़ी था मगर चार आदमी देप्रकर वे दोनों डर गये । गोधू ने बढ़कर ताने गोल । दरबाजा बहुत भारी था इसलिए दो सन्तरियों को भी दरबाजा खोलने में मदद करने के लिए मजबूर किया गया । विगामकाय दरबाजों के सुमने के साथ ही मुल्तान की सेना हजारों फटों से लहाइती जिने में प्रबल कर गयी ।

॥ ५१ ॥

मुदह होने के पहले ही सबका पता चल गया कि मुल्तान आ गया है । जोहरी रग्ना भी मुल्तान के साथ आ मिता ।

“इन दिनों राजा का सलाहकार कौन है ?” मुस्तान ने पूछा ।

“नारसिंह नाम का एक आदमी है मगर किसी को पता नहीं कि वह कहाँ से आया है । वह अपने को एक घुमक्कड़ कहता है ।”

मुस्तान ने दिमाग में एक आवाज गूँज उठी । वह सोचने में घाणी-भाणी करने लगा । घुसघुसाकर योसा शायद वह अब भी सुन ले ।

‘नहीं राजा अब सलाह के परे पहुँच चुका है । एक धरसे से उसने अपने विदवासपत्रों से सलाह लेनी शक्य कर दी है ।’

“रतना, तुम एक काम करो । नारसिंह पर नज़र रखो । पूरी बात का पता लगाओ ।”

मुस्तान को वे दिन याद आये जब वह यहाँ रहता था । व्यापारियों के चौक से वह सूब बाजिफ़ था । वह चौकोर आँगन व गोदामपर और खम्भेदार सीढ़ियाँ, जो रहने के कमरों से होती हुई ऊपर को घूम जाती थीं । उसे वह दिन भी याद आया, जब उसकी विदाई की बेला यह सारा चौक भरा हुआ था । शायद, अब कोई अगर उसे अपना दोस्त बताय, तो राजा उससे विद्वेष करेंगे ।

वह डोसकुंवर के पास पहुँचा । डोसकुंवर दुर्बल हो गये थे । उनका चेहरा बीमार मालूम पड़ता था । पीन की सत और पकड़ गयी थी, और वे सारे दिन नाने में धूर रहते थे ।

राजा ने कुछ नहीं कहा न मुस्तान का मामला मुसफ़ाते

की कोई इच्छा प्रकट की। इस पर प्रजा में जोश और पुणा भरने लगी।

दुदसिंह को भी पता चल गया कि मुस्तान आ गया है। दुनिया का खूब वेस धुकन और मुस्तान की ताकत जानने की वजह से उसने दूसरा स्थान स्वीकार कर लिया। मगर मेघसिंह नहीं मामा, पिताजी, मारू पहले हमारा स्वागत करे नहीं तो हम उत्सव न भाग नहीं लेंगे।

“मारू, तुम्हारी छोटी बहम है। सोच क्या कहेंगे, अगर तुम उससे लड़ोगे ?”

“ठीक है, तब मैं मुस्तान का मारू के महम तब पहुँचने से रोकूँगा। वह पहले मुझसे युद्ध करे।”

मेघसिंह ने अपनी दस हजार सेना बुलाई, और उस मारू के महम के रास्ते में अड़ा दिया। इससे मुस्तान बड़ी दुविधा में पड़ा। “मैं मारू के भाई से नहीं लड़ूँगा। साथ ही, अगर इस चुनौती के बाद मैंने दूसरा पद स्वीकार कर लिया तो मेरा घोर अपमान होगा।”

जानी समझ गया कि मुस्तान को क्या बच्य हो रहा था। उसने इस भ्रंश को खत्म करने का एक अपना तरीका भी सोचा। अगर वह मुस्तान से बहैगा तो वह तयार नहीं होगा। इसलिये वह युद्ध सोचकर रात की आँट देखता रहा।

मारू को मुस्तान के आगमन का पता चल गया। वह बड़ी खुश हुई। उसने मेघसिंह के हठ के बारे में भी सुना और वह गहरी बिम्बा में पड़ गयी। अपने बूढ़ पिता को उसने समस्या सुलझाने के लिए बुलाया, क्योंकि मेघसिंह और मुस्तान

दाना ही उसका मान करते थे। मगर नृसिंह ने कुछ भी सुनने से इनकार कर दिया।

रत्ना धीक पार कर के बाजार की ओर जा रहा था कि उसने देखा कोई नारसिंह से बगल कर रहा है। देखते-देखते ही आगन्तुक घोड़े पर चढ़कर सरपट चल दिया। नारसिंह बाजार में कहीं सायब हा गया। पादा मुश्किल से धीक के छोर तक पहुँचा होगा कि ठोकर खाकर गिर पड़ा। सवार भी दूर जा गिरा और पत्थर से टकराकर बेहोश हो गया। रत्ना तुरन्त उसके पास पहुँचा और उसे अपने घर पर ले गया। कुछ बेर बाद सवार का हाथ माया तो उसने पूछा 'मैं कहीं हूँ ?'

रत्ना ने जवाब दिया 'डरो मत तुम मित्रों के यहाँ ही हो।'

लेकिन मेरा यहाँ तो कोई मित्र नहीं है।

अगर तुम नारसिंह के मित्र हो तो भरे भी हो।

नारसिंह का नाम सुनते ही सवार की उबान घुल गयी। उसने सब कुछ रत्ना का उगम लिया। वह रघुकोट का था। भी राजा गर्ग की ओर से नारसिंह का सन्नेत्र साने-सेवाने के लिए नियुक्त हुआ है। यद्यपि मुझे गया नहीं चलता कि उन मन्देशा का मतलब क्या होता है।

गाम तक सवार चला हो गया और रत्ना से बिना सेबर वह चल दिया।

करने आते थे । उस दिन राधा और रानी राजकुमारी के साथ वहाँ पूजन करने आयी और आकाश में बमकते सूर्य ने अपनी सुन्न किरणों से निहालदे पर आधीर्वाद बरसाया । उस दिन निहालदे को स्वयंवर में अपना जीवन-साथी चुनना था और यह पूजा का विशेष अवसर था ।

निहाड़ी की ओर के घने जंगलों के सामने प्रातःकालीन प्रकाश में महल का प्राचीर सुषोभित हो उठा । मत्स्य-सदय के चारों ओर सभी राजे और राजकुमार एकत्र हो गये । किशोर, तरुण, प्रौढ़ और दाढ़ी-बाल हँसते-बोसते दो-दो, तीन-तीन एक साथ खड़े थे । कुछ के मुकुटों पर मोर-पक्ष सगे थे कुछ के सिरों पर छोटे-छोट ताज थे । वे वहाँ सड़ी स्त्रियों के सामने अपना कौशल प्रदर्शित करते हुए दिखाई पड़ रहे थे । निहालदे को घेरे हुए स्त्रियों ने अधीरता से साँस को रोक रखा था । सुल्तान शान्ति और निभयता से कामध्वज राव के पीछे खड़ा था ।

बारी-बारी से चारणों ने राजकुमारों और राजाओं को बिस्दावसी सुनानी शुरू की । प्रत्येक से राजा माधु ने प्रार्थना की कि वह अपने बाप से मछली की आँसु को बेचे । हर एक बड़ी आशा बाँध आता और निराश हो वापस चला जाता । अन्त में फूलकुँवर का नाम पुकारा गया । उसे अपने ऊपर इतना अधिक विश्वास था कि वह बड़ी शान से उठकर सदय की ओर बढ़ा । क्षण भर के लिए निहालदे काँप गयी । कुछ भी हो वह उससे ब्याह करना नहीं चाहती थी । जब वाण छोड़ा गया, तो वह माँस में सगने के बजाय मछली की

== ५२ ==

अगर किसी को किले को गणियों नुरगा गुप्त दरवाजों
जोर बकुरों का पठा था तो वह आनी को ही था। उससे
कुछ भी नहीं छिपा था। अंधरा होत ही वह अपन काम पर
बस पड़ा। हल्की चांदनी रात थी। वह मकानों की जाड़ म
चलता रहा।

बुद्धि सिंह राजकीय जतिधिगृह म टहरा हुआ था जो महल
के सामने था। भूमिगत मुरग से महल उसने जुड़ा हुआ था।
दोनों के बीच म चौड़ी-सी घासो जगह थी जहाँ कुछ मिपाही
पहरे पर रहते थे। मगर राजा क नहल में छिपकर जाना
जामान था।

वह अस्तबल म घुसा। चूँकि बहुत-स साइस इधर-उपर
फिर रह थ अंधर म कोई उसे पहचान न सका। अस्तबल
क अन्त म एक बड़ा दरवाजा था जिसमें कोट मवार पाड़
पर बठकर नी निकल सकता था। दरवाजा मुला था। वह
उसमें प्रवेग कर गया। दूसरी ओर एक छोटा दरवाजा और
था। यह जानता था कि पीछे से लकड़ी की आगल बंद
था। उसने अपने रूप निहाकर डार लगाया जोर आगल टूट
गयो। दरवाजा की एक डार राजा क मयनागार म पहुँचने
की साक्षियाँ एक गुप्त द्वार क पीछे थीं। इस तलपर क अन्त
म तरक एक मुरग था जे जतिधिगृह म मुपनी थी।
धारा ओर सिद्ध शीयारें ही-दायारें था बच, परयर क डारी
दिनारों पर मासमापन था। उगन एक कोन में जाकर अपने
नापा म दोबार मापी। ठीक माप क ऊपर उसने पन्धर पा

निशाना लगाया और डबा मारने से उसे पता चला कि वह खोखला है। उसने एक छेनी उठायी और पत्थरों के जोड़ पर से घूना छीसना शुरू किया। घूना गिरने लगा, और पत्थर छीसा पड़ गया। उसने पूरी ताकत लगाकर पत्थर खींचा, और उसे हटाकर पास के दूसरे पत्थर को ठेसा। वह दरवाजे की तरफ लुप्त गया। सामने एक खोखली सुरंग थी।

जानी न एक फरड़ा जसा सुरंग में प्रवेश किया। अल्प ही वह चौक-जितनी सम्झाई पार कर गया, और दूसरी तरफ के तलपट में जा पहुँचा। फिर सीढ़ियाँ थीं और वह एक बड़े कमरे की झोली में आ गया। कमरे में एक बड़ा समूक रखा हुआ था। जानी ने बड़ी चतुराई से उसे खोला। जो कुछ कीमती सामान उसमें था उसे निकालकर जानी ने एक थैले में रखा लिया और समूक बन्द कर दिया। इसके बाद वह राजा के महल में आ गया, और गुप्त दरवाजे से राजा के शयनागार में पहुँचा। उस रात डोजकूँबर मारुफ पास गया था इसलिए थैले को राजा के परसंग के नीचे रखने में कोई कठिनाई नहीं हुई। फिर उसी रास्ते होकर वह बुइसाल की ओर चला आया।

साईस सभा जा चुके थे। दरवाजे पर सिर्फ कुछ रक्षाक था। जानी ने सोचा कि आज की रात किसी बुइसाल में ही छिपकर काटनी होगी। बड़ सभरे जबकि साईस मोग घोड़ों का फिराने ल जायेंगे तब निकल जान में आसानी होगी।

मुल्तान के खम की बातचीत में हिस्सा लेने को वह तयार था। सूरज उग चुका था और उसको किरणें रव बिरने रघमी दामियाना और तम्बुभा पर पड़ने लगी थी।

गोधू और जानी ने अपनी राम जाहिर की। सुल्तान ने फूलकुंवर की ओर देखा हालांकि वह जानता था कि उसके नीतर बड़ी जमान हो रही है, इसलिए ओ कुछ वह कहेगा उस पर कुछ किया नहीं जा सकता। सब नी सुल्तान उसका अपमान नहीं करना चाहता था।

जब सब लोग दोस चुके तो चन्द्रसिंह लड़ा हुआ और कहने लगा "अगर मुझे कहन की आज्ञा दी जाय तो मर्षसिंह के सामने यह प्रस्ताव रखा जाना चाहिए कि हम ठीक दोपहर को शौक म मिलें और दोनों साथ-साथ मारू के उपहार ले लें।"

मुल्तान को यह बात पसन्द आ गयी। मुल्तान असीत और नविष्य—गैनों से सीखना चाहता था। पिछली परम्परा के अनुसार मर्षसिंह को मारू के महल में पहल जाने का अधिकार था। उसने गोधू का अपना दूत बनाकर भजा। मर्षसिंह ने युद्ध की निरपेक्षता ममन्द सी थी, क्योंकि उसमें वह जीत नहीं सकता था। उसने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

— ५३ —

उसने हार का कटहार पहना जिसका एक-एक हीरा सारंग से धून धुनकर मंगाया गया था। उसके मिर पर मुकुट था जिसके बीजाबीष जड़ा साथ ब्रह्मदण्ड था थाया था। उसने यनारगी कीनघाय का सहंगा पहना, जिस धुनन में हुआ

पुसाहा को ७ वष लगे थे । दुपट्टा उसका इतना महीन था कि उसे छह बार सह करन के बाद भी ऐसा लगता कि वह सिर्फ अगिया पहने हुए है । उसने अपनी धरोनियों को फिर देखा, और जहाँ-सहाँ उन्हें काबस स रग लिया ।

उसम उस दिन खास सजधज स कपड़े पहने । वह अपने आपको भाऊ से भी अधिक सुन्दरी लिखाना चाहती थी, पर थी वह काफ़ी धवराई हुई । अन्तिम बार जब वह धीरे के सामने खड़ी हुई, सो मुस्लान बहाँ भा पहुँचा । एक क्षण आश्चर्य स ताकत हुए उसने पुकारा अर निहाल ! बड़े गय स मुस्लान की बांह पकड़ निहालद पत्थर की सीढ़ियाँ उठर कर पासकी स बैठ गयी ।

मुस्लान भी तमार हो गया । वह उत्सव के अनुरूप ही वस्त्र पहन था । सफ़र पाड़ पर चढ़कर वह चौक स पहुँचा । आकाश के नील मीन की छाया में उसका चेहरा तबि की तरह चमक रहा था । काली धरोनियों की मेहराव सभ उसकी आँखा स दया और प्यार उमड रहा था । बहु सनापतियों के साथ बा और एक हजार पुङसधारां का रक्षक-दम उसके साथ था । उनके अनाख घोड़े सड़क पर उड़ते ऐसे दीपत मानो उनम चलन सा है हा नही । पुङसवार कीतखाव क कमरबन्द बाध ऐसे विल रहे थ जैसे व हवा पर ही सवार हा और उनक क्यरिया साऊ पीछ की तरफ उड़ रहे थ । निहालदे और उनकी सधियों की पासकियाँ गोधू और जानी की द्यरेण स चल रही थीं ।

फूमरुंवर एक काम पोड पर सवार था, पीर डैड सी

व्यादे बड़े-बड़े भास लिय उसके पीछे चल रहे थे। वे बहुत मणियों से भरे थे।

मघसिंह और उसके पिता बुद्धसिंह ने अपने भाग्य के साथ आ गये। एक बड़ा नन्दूक चार आदमियों के साथ पर साया जा रहा था। साथ में बीसिया जोड़ा था। मघसिंह आगे बढ़कर मुल्तान की बगल में खड़ा हुआ गया और जुमूम मारु के महल की आर बढ़ा।

शहर की सड़कें खाली भर गयी थीं। फूमकंवर ने एक-एक करके अपने आदमियों को पास बुलाया और दोना हाथा से हीरे-जवाहरात मुटावा गया। तमागबीना में उन्हें लूटने के लिए धक्कम धुक्की होती रहा। इस तरह वे महल के सब-सजाये द्वार पर पहुँचे।

मणियों से जड़ा घाल हाथ में लिय मारु भागती उतारने के लिए लड़ी थी। जडाऊ हुरा और लाल फठहार उमक गन पर दमक रहा था। उसने मुट्टीभर हीरे उठाये और अगुन को भगाने के लिए मुल्तान के माथ के ऊपर से फेंके। मुल्तान के संह को देखकर उसका गिभ कचोट उठा। उस यह सपना-सा मामूम दिया कि इतना पक्किमासी और उदार पुरुष तनी मारा दूरी पार कर निकल उसके बहन पर ही चला आया।

वायसंवर मुल्तान के आंगण से पक्कि हो मारु के पाछे एक तरफ खड़ा था।

मारु बोली 'बहन भाई मुल्तान प्रबल करें।

मघसिंह जचल गड़ा था। उगक शहर का रंग उड़ गया।

मुल्तान ने पीछे में ही टोककर कहा 'नहा बहन मरा

बहुत सम्मान हो चुका, असल में मेघसिंह का हक है पहले जाने का ।

मासू भाग आयी । मेघसिंह की भान्तरिक उपमन-पुषस को अनदेखी करती हुई मासू ने उसका हाथ पकड़कर भीतर कर लिया । मेघसिंह काँप गया । वह जानता था कि अपनी बहन द्वारा वह इस तरह कमी अपमानित नहीं किया गया था । और अब वह उस अपमान पर पर्दा बाल रही है । तीव्र आकुमता को बग़र बकाये वह बिना कुछ बोले नीचे ताकटा हुआ खड़ा था पर भीतर-ही भीतर उसका क्रोध उबस रहा था और उसके चेहरे पर भी उसके भाव उभरने लगे थे । यकायक बुद्धसिंह जा मेघसिंह के पीछे था, बोला, 'हमारे उपहार माओ ।

उसके आदमी सन्धुक को भीतर ल गये, तब तक द्वार पर सुल्तान और उसके सैनिक खड़े रह ।

मेघसिंह सन्धुक के पास आया । मासू आश्चर्य से देखती रही । एक नौकर ने चाभी घुमाकर लाला खोला । उसने कुछ शीपड़ बाहर निकाल । मेघसिंह गुस्से से सास हो गया । वह बिस्लाया, 'यह कौन-सा सन्धुक ल आय ?'

हमसे यही लाने को कहा गया था । वहाँ और कोई सन्धुक था ही नहीं । नौकर ने सन्नपकाकर कहा ।

मेघसिंह स्थग्निष्ठ हो बठ गया । मासू मग्द-मन्ध मुस्कगती रही 'उपहार ता भ्रातृ-स्नेह के आग तुच्छ यस्तु है । मुझे तो तुम्हारे स्नेह पर ही गब है ।'

बोसकृन्बर, जो अभी तक धुगचाप सय कुछ दग रहे थ,

अब अपने को नहीं रोक सके 'मया इन्हीं धीधियों के लिए तुम गुस्तान के पद से होड़ लगा रह थे ? मारू तुम्हारी बहन हो सकती है पर यह मत भूलना कि वह नरवसगढ़ की महारानी भी है। तुमने उसका अपमान करने की हिम्मत कैसे की ?

कुदसिह मुदबुदाया हमें लूट लिया।

डोलकुंवर चित्साये तुम मेरा अपमान करना चाहते हो ? मेरे राज्य में कोई एक पत्ता भा नहीं लड़का सकता।

निरास होकर पिता और पुत्र दोनों चले गये। उन्होंने अपने को इतना अधिक अपमानित अनुभव किया कि अपने डरे तक भी नहीं सोटे, बल्कि अपन भावमिर्या के साथ वहीं से वापस चले गये। यह मुदा घुड़सवारा का जुसूस था।

.. ५४ ..

रुगादे का दूल्हा एक छाट-स इसाक का सामन्त था मगर था बड़ा सेज। पहली बार मिसत ही दूल्हा-दुल्हन दोनों एक-दूसरे को चाहने लग। गुस्तान में तास और हीरा स जड़ा एक मुकुट रुगादे का नैट किया। दूल्हे को उसने सोन के म्यान में रसी एक बड़ी घुबमूरस तलवार नैट दी। मारू को उसन मुर्गी के अडा के बराबर दो पन्ने दिय। फिर उसने एक छोटा सा डिब्बा ताता और उसके भीतर की धीबें पास में बिखेर दीं। लगता था कि मूय के प्रकाश में विविध रंगा की आग प्रस उठी हो। हीरे-माणिका स जड़ी अलग प्रसग रंगा की

सकड़ो अँगूठियाँ और सटफनें थीं । मारू सज्जा से साफ हो गयी । इतनी बहुमूल्य चीजें कोई भी यहाँ तक कि उसके पति भी उसके लिए नहीं लाते ।

नरयसगड़ स बनग होने के बाद पहली बार वे यहाँ मिले थे । तब सुल्तान आधिन या मारू और डोलकुंवर पर किन्तु आज वह एक स्वतन्त्र सक्तिशासी राजा था ।

रानी के समक्ष उपस्थित होते समय जो औपचारिकताएँ यरनी जाती हैं सुल्तान उन्हें पूरी तरह निभाया करता । पर अब वह इससे परे था बल्कि उसके असे इतने बड़े प्रनापी राजा के सामने दूसरों को औपचारिकताएँ करना जरूरी था । फिर भी एक महन के प्रति भाई का जो व्यवहार होना चाहिए, उसे उसने बहुत खूबी से निभाया । मारू का यह नया रिपठा बहुत भाया । स्वभाव से भी उसे दरबारी हकाब और कायदा की गुलामा से चिढ़ थी । वह स्वाधीन रहना चाहती थी उस चिड़िया की तरह जो खुसकर गा सके सीटियाँ बजाय और जहाँ चाह उड़ सके ।

सुल्तान से अपने और पति के सम्बन्धा के बारे में— चाहे वे किसने ही नाजुक क्यों न हों, बहस करन म वह कभी सकुभायी नहीं । उसन पति की रक्तन नरयसगड़ की चिन्दगी, और दरबार के हँसी-मजाक की भी बातें कीं । फिर दोना दूब गुलकर हँसते रहे । कभी कभी सुल्तान भी अपन स सम्बन्धित घटनाएँ सुना देता था । ये उन पुरान दिनों की चर्चा करत, जब कि वह यहाँ रहा था । मारू उसस इतने मान और प्यार स पूछनी थी कि सुल्तान यह बूल जाता कि यह कहाँ है और

वह सब-कुछ यथा देता। एक दिन उसने निहालदे से हुई पहल
मैट का भी पूरा विवरण सुनाया। और इस तरह समय बीतने
नहीं बल्कि भागने लगा।

वह मुस्तान की ओर ऐसी भावपूर्ण आँखों से देखती और
इस तरह मुस्कराती जसा किसी और को देखकर नहीं। वह
उम्मुक्त होकर गर्व से चलती। ऐसा किसी ऐसे व्यक्ति के सामने
यही स्त्री कर सकती है जिसका उसके लिए कोई अर्थ हो।

आज भी वह उससे अधिक उम्र की नहीं मासूम देती
थी व्रितनी कि पहली बार मुस्तान से मिलने पर प्रतीत हुई
थी। वह दीवान पर आँखें खोले सटी रहती और वे अर्ध
विचारों में खोयी-सी रहा करती थीं। कोहनी का सहारा म
कर वह लेटी हुई थी और उसके सामने बैठने वाले को उसके
बोनों अर्धस्ते उरोज जरूर एक नजर देख पड़ते। उस यह भी
सूझ अच्छी तरह मासूम था कि वह घर्षा का विषय बन गयी
है। मारु में सौकुमाय था, और साथ ही एक प्रकार का अर्थ
भी जिसके द्वारा वह मुस्तान में तीव्र आसक्त्य जगाना चाहती
थी। पहल भी उसने कई बार इस ओर रुधम बढ़ाये थे किन्तु
अस्त में वह हिम्मत हार बठी थी। अगर मुस्तान आज भी
कोई सनेत करता, तो वह घायब इनकार न करती। यद्यपि
मुस्तान भी कभी-कभी इच्छाओं के सहाराते नोकों में बहकर
उमकी ओर मुकता मगर उसने मग्न अपन को अवण होने
से रोक लिया।

स्वयं मारु भी अर्थ नहीं चाहती थी कि वह मुस्तान और
निहालदे को एक-दूसरे से दूर कर दे। जब कोई नतीजा नहीं

निहासना था, तो अपने को सामने से फायदा ? उसके पति ने सब कुछ उस पर ही छोड़ रखा था। अब वह पूरी तरह राज भोगती रानी थी। साथ-साथ सुल्तान का वहीं पर रहना उससे खूब बातें करना, उसके साथ हँसी-मजाक करते रहना भी उसे फितना अच्छा लगता था। नहीं, वह यह सब लोयेगी नहीं।

निहासदे इधर-उधर घूमकर बड़ी व्यस्त रही। वह समदबुर्ज भी गयी जहाँ सुल्तान ने अपने निवास के पाँच वर्ष बिताये थे। पनिया पठान ने अवकाश ग्रहण कर लिया था और उसकी जगह अब दूसरे ने ले ली थी। वह भी पहल अवसर सुल्तान के साथ गया था और अपने अद्वैत साहस के लिए प्रसिद्ध था। जिंसा तो यह था ही, सौन्दर्य और कला का भी यह केन्द्र था। निहासदे ने घूमकर सब ओर देखा। यहाँ के लोगो ने बड़ी घूमघाम से उसका स्वागत किया और उसके आगमन पर एक शानदार दावत दी। उसने सुल्तान द्वारा बनवाई भील में भी जाकर स्नान किया। उसकी सखी सहेलियों ने भी उसमें बुझकी लगायी। उस दिन खानी उनकी रखवाली पर था। उसने खूब विस्तार से उस घटना का वर्णन किया जब मोमसिंह ने माऊ का उड़ाने की कोशिश की थी।

रत्ना जोहरी की पत्नी मेदना ने निहासदे को अपने महल आमंत्रित किया।

जब निहासदे पालकी से उतरी तो मेदना ने उसका सम्मुख झुककर कहा 'मैं यहाँ आपका स्वागत करने वाली कौन हूँ ? यहाँ सब कुछ आपका ही है। यह भाई सुल्तान की दया का फल है, कि हम अभी तक इतनी मौज से हैं।'

पूछ से जा निकला । फूमकुवर हताश ! उसकी शान मिट्टी में मिला गयी ।

महाराजा माघ भी बड़े बिस्मित हुए, क्योंकि सभी ने प्रयत्न किया, पर किसी को भी सफलता न मिली । कोई भी अगर सफल न हुआ तो क्या निहालदे कुंवारी ही रह जायगी !

महाराजा कामध्वज आगे आकर बोले—“मेरा एक और वह भी मेरा बेटा ही है और मुझे विश्वास है कि वह आपकी शर्तें अवश्य पूरी करेगा । मैं आपसे निवेदन करूँगा कि आप उसे और अवसर दें ।”

इससे महाराजा माघ के मन में कुछ आशा बनी और उन्होंने राजकुमार सुल्तान को सक्य बेचने के लिए बुलाया । उपस्थित जन-समुदाय उसकी ओर अचरज से देखने लगा । महाराजा कामध्वज ने उसकी पीठ पपधपाई और कहा—“जाओ मारो निधाना ।”

निहालदे बाप गयी, ‘अगर सुल्तान भी असफल रहा तो ? हे भगवान् साज रख लो ।’

सुल्तान धनुष-बाण लेकर बड़ी बिनम्रता से आगे आया । तीस-पात्र के निकट लठे होकर उसने परछाईं में देखकर निधाना साधा और जब तक लोग देखें कि धनुष से बाण छूटा तब तक मछली की आँसू बीधी जा चुकी थी ।

राजकुमारी निहालदे नायक की ओर बढ़ी । आवेश से उसका हृदय धड़क रहा था । लज्जा से उसका चेहरा मास हो रहा था । तो भी साहस बटोर कर वह आगे बढ़ी और अयमाता सुल्तान के गले में डाल दी । एक दूसरे की आँसों

निहासदे को मुस्तान और जिन के युद्ध के बारे में पता तो था पर वह ऐसे साहसिक कार्यों के बारे में सुनना चाहती थी। मेवना में उसे साथ ड्रिम्सा बठाया। इस तरह उसके दिन ऊपर से खुली से बीठने लगे मगर भीतर-ही भीतर उसके दिल में एक अजब थी।

पहले ही दिन से सन्देह का जो बीज उसके दिमाग में पड़ा था वह धीरे-धीरे बढ़ने लगा। जब मुस्तान को निर्वासित कर दिया गया तो वह उन दुःखद घटनाओं को भूल गयी थी। लेकिन अब वह उसके दिल में घर बनन लगीं। वह उदास रहने लगी।

अपनी दो दामियों को बाँधे करत एक दिन उसने मुना लैने दखा कि राजा मुस्तान आज आकर जिननी जल्नी बन गये।'

“मैं जानती हूँ कि ब्रह्मनापा दिखमाने के बहाने मारू क्या चाहती है। जकर

निहासदे की आहूट पाकर वह एकादम चुप हो गयीं।

निहासदे ने अपना चेहरा धुमा लिया। उसका चेहरा शीघ्र से सास हो उठा था। अच्छा अब औरों में भी यह चर्चा शुरू हो गयी उसने सोचा। अब वह ऊपर से खुली का बाना पहने थी पर अन्त में यह माल भी बिम्बुस फट गयी।

दौड़ती हुई वह अपने कमरे में निकली। बपड़ों तक की उम मुप-मुप नहीं थी। दुपट्टा कन्ध से नीचे गिरकर उसके पीछे पिसटता रहा। अपनी मोन चाँची की पासची में जा बठी, और उगरे ४० गज साप हो उसे महसूस कर पहुँचाने लगे।

पामकी से बाहर उतर निहासदे उछलती सीन सीढ़ियाँ बढ़कर बरामदे में जा पहुँची। बहाँ परदा टंगा हुआ था, और खानी फाँक से रोशनी आ रही थी, जिससे पता चलता था कि अन्दर कमरा रौशन है। उसने परदे को हटाकर भीतर का दरवाजा खोला। मारू हरी पोशाक पहने दीवान पर सेटी हुई थी। पास ही, एक मोढ़े पर मुस्तान बैठा था दोनों हँस रहे थे। निहासदे ने होंठ काट लिये। उनकी बातें सुनने के लिए भी वह नहीं रुकी। वह बाहर की ओर वीड़ी। बुनिया को भुसा वह चाँदनी रात के अँधेरे में भागती गयी। पेड़ों बृजों की गड़ से वह मधु-सोहान हो रही थी। यथा यक उसे असह्य पीड़ा हो उठी। उसने उड़त हुए बेग एक बटिघार झाड़ी में फँस गया, और वह चीख पड़ी।

मुस्तान और मारू ने एक साथ उसकी चीख सुनी। दोनों उठकर उसकी ओर लौड़ पड़े। मुस्तान सीढ़ियों में उतरकर दौड़ा यथायथ निहासदे का दिख पड़क उठा। उसने अपने बेग भटककर लीचे और दौड़ने वाली ही थी कि मुस्तान ने पीछे से कंधे पकड़कर उसे अपने बाहुओं में बस लिया।

निहासदे जमीन पर बठ गयी। 'सुमन मुझे डरा लिया। वह बोसा।

अच्छा तो वह तुम्हारी 'वह' है ?

'कौन क्या है ?'

'तुम्हारी रखल।

क्या कह रही हो ?

'ठीक-ठीक सब्बी बात बता दो।

मेरी कोई रखत-बखैल नहीं है ।’

‘जो भी हुआ अब मुझे सब कुछ सच-सच बता दो ।’

मारू, जो झाड़ियों की आड़ में लुकी थी, सामने पसी आयी । उसने निहाल को सीने से सगा लिया और फफककर रोते हुए कहा ‘मैं नहीं जानती थी कि बात यहाँ तक बढ़ जायेगी ।’

पेटों पर चाँदी की धारियाँ गाब रही थीं । अँधेरे में उनके आँसू एक-दूसरे से मिस गये और उनमें निहालदे के दिल का मल बह गया ।

मुल्तान ने उठने के लिए सहारा दिया और बे अपने खम में चले गये ।

मुल्तान ने फुसफुसाते हुए उससे कहा ‘मेरी रानी ।’

निहाल का मुँह खुसा और उसने उसे घूम लिया ।

‘मुझे तुम्हारे ऊपर पूरा भरोसा है और तुम्हारे बिना मैं जीवित नहीं रह सकती । वह बोली ‘पर अब घर चलो ।’

मुल्तान न अब जाना कि उसकी ऊपरी शान्ति एक छसना थी स्थिर लगभग जड़ बाह्य के अन्दर में भावनाओं का एमा म-पड़ हो सकता है कि कोई मोष भी नहीं सकता ।

सुबह की चमचमाती किरणों से मुल्तान की नील टूट गयी । सुबह में ही बढ़ी उमम थी । उसने उत्तेजित आवाजों

की गूँब सुनी । सागरसिंह पहरे पर था । सुल्तान ने चोमे से बाहर झाँकते हुए पूछा, “यह किस बात का शोर है ?”

“वे कहते हैं कि मेघसिंह का जो माल चुराया गया था वह मिस गया है ।

“कहाँ किसे मिसा ?

“वह एक थले में राजा के पदग के नीचे रखा हुआ था । राजा डोलकूँवर भी सुस्त हो गया है ।’

सुल्तान को ताज्जुब हुआ । उसने पूछा “जानी कहीं है ?’

“असस-सुवह बह महान की ओर जा रहा था ।”

मगर उसने यह किया है तो महस में जाने की उसे क्या जरूरत थी ?’ सुल्तान सूत्र की तलाश में था । “मेरा मन नहीं मानता । उस पर शक करना अनुचित है ।’

उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं रहा । मगर उसने देखा कि रानी का एक दूत उसकी ओर आ रहा है और बचानक उसे फिर घोर पीड़ा हुई । वह दूत के साथ घसने को तयार हो गया । उसे याद आया कि एक बार पहले भी रानी की एक दासी उसे समदबुर्ज से मुलाने आयी थी । आज दासी के बदले सेवक है । पर अब तक कोई बहुत गम्भीर बात न हो, मारु उसे नहीं बुलाती ।

गोधू को आगाह करते हुए उसने कहा “कोई मुसीबत हो तो हो सकता है हम तुरन्त चल पड़ें । तयार रहना ।

मारु अपने निश्चित स्थान पर बैठी आगन्तुकों के स्वागत के लिए तैयार थी । यह जानती थी कि यात जैसे शुरू करनी

चाहिए । उसे अपना काम बनाना था । 'तुमने तो मुझे कभी कुछ देने से इनकार नहीं किया ।

'हाँ, हाँ, मेरा जीवन तक तुम्हारा ही है ।

'क्या मैं जानती नहीं ? पर यह दूसरी ही बात है । उसे ऐसा नहीं करना चाहिए । नहीं यह बिल्कुल ससत था ।' उसने सडपडाती जवान से कहा लेकिन यह तो तुम्हारे ही लिए किया गया था इसलिए उसने सोचा और मैंने उसे माफ़ कर दिया ।

पहले तो मुस्तान उसभन में पड़ गया, फिर कुछ ममभते हुए बोला "क्या जानी के बारे में कह रही हा ? क्या जान है ?

बह विजित और विस्मित-सा हो उठा । मारु के चेहरे का रंग यकायक बदल गया । वह वाली मेरे माई के उपहार ?'

मुस्तान अडवसू जडा था । पसीत और वतमान दोनों मिसने सगे । यह वही व्यक्ति था जिसे एक बार पहले भी दामा किया जा चुका था । मगर पहले वह जोर था इस याग उसने राग्य के प्रति हो अपराध किया है । मारु पुप भी । बह साँस रोके पडी थी घामद मुस्तान इनयाग कर रहा है ।

जाखिर उसने जवान बोली 'ठीक है जमी तुम्हारी इच्छा नहीं तो उसने अपराध बहुत बड़ा किया है ।"

मारु ने एक सम्धी साँस लीपी 'मेरी दूसरी चिन्ता यह है कि मेरे पति और मेरे माई में सड़ाई उठर छिड़ जायेगी ।'

‘यह तुम मुझ पर छाड़ दो । भगवान पर मेरा विश्वास है ।’

‘मेरे पति शायद तुम पर भी क्रुद्ध हों । वे मुझ कायर हैं ही पर हारने में भी कायर हैं ।

‘मैं तुरन्त चम पड़ूंगा ।’

मैं नहीं जानती थी कि इतनी जल्दी जाना होगा शायद तुम्हारे लिए यही ठीक है ।

मुल्तान बिदा लेकर चम पड़ा ।

:: ५६ ::

मुल्तान जब जससमेर के पास पहुँचा तो उसने तैयारियाँ देखीं । सरासरी सैनिक ऊँटों पर चढ़े हुए गाँव रहे थे । सम्बन्धी मित्र और विभिन्न बन्दीसे सभी लिये रहे थे । अन्धे ऊँटों को घुम घुमकर बसग किया जा रहा यह दृशावा ऊँटों के लिए भयानक था । सगसग हुए ऊँटों को पैदा करने के काम थे । यहाँ के लोगों की आजी के मुख्य साधन ऊँट और भेड़ की ऊन यही थी थी । पानी बहुत कमी थी । जो पानी था भी, उसे बहुत गहरे ढोबीना पड़ता था । फसल भर के लिए भी पानी नहीं था । सिर्फ घास ही जाती जिसे भेड़ चरती थी ।

मुल्तान की सेना बहुत घोड़ी रह गयी थी । क्या सेनापति अपने सैनिकों के साथ अपने किलों में लौट गये

जानी और खन्द्रसिंह को रघुकोट और उसके राजा के बारे में पता लगाने का जिम्मा दिया गया था। मुल्तान और खन्द्रसिंह, दोनों बचपन के साथी थे। वह एक अच्छा जवान बन गया था और मुल्तान के लिए बड़ा उपयोगी था।

मुल्तान ने कहा, "मुझे फिर जलद में मत आसना। जानी ने शर्म से सिर नीचा कर लिया।

खन्द्रसिंह की स्मरण-शक्ति अद्भुत थी। एक बार किसी जगह को देखकर वह उसे सदा याद रख सकता था। सिर्फ गोधू और फूमबुंदर अभी तक मुल्तान के साथ थे, और उसके पास १५ हजार सैनिक थे।

मुल्तान ने किले के सामने घोड़ा रोक दिया। बुद्धसिंह और मर्षसिंह उनके स्वागत के लिए आगे बढ़े।

उन्होंने कहा, "हम अपने घर में तुम्हारा स्वागत करते हैं।" और घोड़ों से उतरकर मुल्तान और मर्षसिंह बसकर एक-दूसरे से लिपट गये।

मुल्तान जल्दी ही आग-बीत करके फुगसत पाना चाहता था। ज्यों ही वे महसूस के अन्दर गये, उसने पूछा, "ये तैयारियाँ किसलिए हो रही हैं?"

"मैं कायर शोमबुंदर को मलमनमाहूत का मसजद पढ़ाना चाहता हूँ।

"यह उनकी गसती न थी। भाव मरी बात पर विस्वागत करें। बुद्धिमान लोग अकारण नहीं सदा करते।"

"मगर उन्होंने हमारी घेदरजनी की। क्या हमारा अपमान नहीं हुआ?"

“इसीलिए तो उनके बदले प्रायश्चित्त करने मेरा एक प्रस्ताव है।”

मेघसिंह सोच विचार में पड़ गया। सुस्तान “अगर आप उम्र पर चढ़ाई करते हैं, तो हमारी दोसकृवर का माघ देगी।”

“हम सच्चे राजपूतों की तरह कट मरेंगे।

‘मुझे मान प्रतिष्ठापित नहीं करते।

‘तब तुम्हीं कहो, क्या करें?’

सिकंदर मैं और तुम दोपहर से शाम तक सड़ ही तुम्हारी बात का क्रैसला करेगी।

मुघसिंह ने कहा, मैं मानता हूँ कि सुस्तान व सर्वोत्तम है।

दोनों एक ही गठन और अर्वाइ के थे। मेघसिंह ने दसकर सुस्तान को सगा कि वह उसे मान।

महल के सामन अलाहा तैयार किया गया। मेघसिंह ने सुस्तान की घत मान ली थी, तो भी रि बड़ी बेचैनी मालूम पड़ रही थी। सुस्तान ने सड़ कोई खुशी नहीं थी, क्योंकि वह सुस्तान की इन परित्र के लिए ही नहीं करता था यन्कि उसे वह वीर भी मानता था।

सुस्तान और मेघसिंह दोनों घोड़े पर सवार होव की भार चले। ज्योंही सुस्तान उसके पास से निव मेघसिंह की निकल का पता चल गया। “तयार।

दृग्दुष्ट देखन के लिए सभी एकत्र हो गये थे । तिहासदे बड़ी उदास थी । युद्ध का अन्त क्या होगा यह वह जानती थी । उसे पूरा शक था कि मुस्तान अपने प्रतिद्वन्द्वी का बचाव करके ही सड़ेगा ।

तसवार की सड़ाई में कोई औपचारिकता नहीं होती । पर यह तो एक-दूसरे ही ढग की सड़ाई थी । वे तसवार भाँजते वार बचाते, लपकते और एक-एक कदम आगे बढ़ाता हुआ मुस्तान अपने प्रतिद्वन्द्वी को डकेलता उस ओर से जाता जहाँ घोड़ों के झुंड खड़े थे, मगर उसने उसे घायल करने की कोशिश नहीं की । जब भी मेघसिंह मौका पाकर वार करता, मुस्तान घोड़े पर एक तरफ़ सुड़बकर वार बचा जाता । इस तरह नाम तक सड़ाई होती रही । अचानक मेघसिंह आगे बढ़ा । मुस्तान अपने घोड़े पर दाहिनी ओर घुसका मगर उसकी औप बिना बचाव के रूढ़ गयी और मेघसिंह की तसवार ने पूरा घाव कर दिया ।

देखने बाम स्तम्भित रह गये । किसी के चेहरे पर गिबन तक नहीं गिभी । बुद्धसिंह ने मीन तोड़ा । वह घोड़े से पृथ पड़ा, साथ ही मेघसिंह भी । उन्होंने सहारा देकर उस महस तक पहुँचाया ।

गहरा भाव आँध का था। एक धिरा के कट जाने से बहुत खून बह रहा था। उसे उठकर चलने सायक होने में पन्द्रह दिम सग गये। निहासदे ने बड़ी सगम से उसकी सेवा की। वैद्य के अनुभव और बुद्धिमानी से भी बड़ी मदद मिली।

आजकल मारू की छोटी बहन निरन्तर निहासदे के पास जाती रहती। वह १६ वर्ष की एक अत्यन्त सुन्दरी और मोहिनी युवती थी। उसके मुखड़े की गठन ऐसी थी, मानो छेनी से तराशी गयी हो। उसकी रक्बा का रंग बेदाग था। गर्दन सुराहीदार थी और कन्ये बड़े खूबसूरत ढग से घुमावदार थे—सब कुछ मारू के जैसा ही था, फिर अपनी बड़ी बहन के अनुपम सौन्दर्य से उसकी कोई तुलना न थी।

उसके आने पर फूलकुँवर उस देखता। बार-बार देखने से उसे लगा कि वह उसे चाहता है। उसमें सारी दुनिया से दूर सिर्फ उसके संग रहने की कामना है। आखिरकार वह अपने को सँभाल नहीं सका और मुस्तान के पास पहुँचा। उसने जसकुँवर के बारे में बात शुरू की और अन्त में बोला 'बिठनी निडर है वह और उसके दोस्त क्या हैं मानो कोई सुरीली तान।' इतना कहते-कहते वह धरमा गया और दूसरी ओर ताकम लगा।

मुस्तान ने धादा किया कि वह उससे पिता के सामने बात चलायेगा। उसी ठाम मुस्तान बुढगिह से इस बिषय की बात करने का मौजा दखन लगा। मेघसिंह भी वहाँ पर था।

'क्या तुम फूलकुँवर का नाम बताते हो?' मेघसिंह ने पूछा।

मिर्सी और उनके अन्तर का आह्लाष सहारा उठा। निहालदे का हृदय आनन्द के अतिरेक से घड़क रहा था। उसे मग रहा था, शायद वह गिर पड़ेगी मूर्च्छित हो प्रायेगी।

महाराजा माघ ने पुरोहितों को बुसाया और अपेक्षित उत्सव के साथ निहालदे तथा सुल्तान का विवाह सम्पन्न हो गया। कामध्वज बड़े प्रसन्न थे कि उनके दत्तक पुत्र ने सक्षय बेषकर वहाँ उपस्थित सभी राजकुमारों का गब सोड़ दिया।

अब निहालदे को भी विछोह का कोई भय न रहा था। रात को उस सहजहाती पुष्प-शय्या पर उन्हें एक-दूसरे का हास जानने का पहले-पहल अवसर मिला। निहालदे ने सुल्तान से पूरा किस्सा सुना। उसने अपना भी बताया कि कैसे सक्षय-बेष स्वयंवर के लिए उसने अपने पिता को राजी किया।

राजकुमारी निहालदे वास से सीधी अपनी माँ के पास जाकर बोली, 'माँ, आपने पहले किचनकोट के राजकुमार 'सुल्तान' से ही मेरा विवाह करना चाहा था। जैसी कि ईश्वर की इच्छा थी, वह ब्याह नहीं हो पाया। पर अब क्यों मुझ गाय-बैल की तरह इदरकोट के राजकुमार को सौंपा जा रहा है। आपकी बेटी का ब्याह तो उस से होना चाहिए जो महान् और बोर हो, राजा होने के योग्य हो।' उसने सुल्तान से सुना प्रस्ताव भी बताया।

रानी थोड़ी देर सो सोचती रही, पर देखते-देखते वह बड़ी प्रसन्न हो उठी कि उसकी बेटी कितनी अच्छी समाह दे सकती है। उसने निहालदे को स्नेह से गले लगा लिया।

‘आखिर उसमें क्या कमी है ? उसका राज तो बड़ा नहीं है पर नाम तो है ।’ मुल्तान ने कहा ।

कुछ भी हाँ मैं उस ज़्यादा समझ नहीं पा रहा हूँ । मुझे कुछ आर विचार करना पड़ेगा । आवश में आकर माँग करना शक्य है, और आवश के साथ बुद्धि हो भी तो यह काफ़ी नहीं है । खरिज ज़रूर होना चाहिए, और आदश भी । बुद्धिसिंह न जवाब दिया ।

फिर ना प्रस्ताव को उसने मंजूर कर लिया और उसी दिन सगाई की घोषणा कर दी । निहासद ने जसकृवर का हाथ दबा दिया । उसका चेहरा सास हो उठा । वह निहासदे से छोटी बहन की तरह हिंस गया । मुल्तान में अभी पूरी तरह ताकत नहीं लौटी थी पर उसे बाहर धूमने की आज्ञा मिल गयी थी ।

एक दिन निहासद ने सुना कि पड़ोस के गाँव में किसी नरनक्षी पर न आतक फैला रखा है ।

वह बड़ी अच्छी घुड़सवार थी और अच्छा निगानबाज भी । वह शब्दवधी बाण घसाने में ना प्रवीण थी । उसने निकार करने का इच्छा प्रकट की । मुल्तान अभी-अभी सपारी करके लौटा था । उस भी प्रस्ताव पसन्द आया । दूसरे दिन सुबह दो दबन सनिका को साथ लेकर घ दानों पर का निकार करने निकल पड़े । पड़नी गर्मी के दिन में और बड़ी उमस थी । न गाँव में दोपहर का पड़ने । गाँव के बाहर उन्होंने एक नोबपान का मान दग्गी जिस पर ने मार दिया था । वही घ पर के पजा का निगान दग्गल हुए ब जागे बड़े । घटानों के पास जाकर निगान मारा गया ।

अब तक वे काफ़ी दूर निकल आये थे, पर थोड़ी दूर उन्हें किसी बस्ती के चिह्न दिखाई दिये। वश के इस भाग में कुएँ का पानी पीने लायक नहीं था, इसलिए गाँव के लोग बड़े कुण्ड बनाकर बर्षा का जल उनमें इकट्ठा कर लिया करते। जसागार की हमेशा निगरानी होती थी, क्योंकि वहीं पीने का पानी था।

सुल्तान ने कहा “खेर का कोई पता नहीं है अब यहाँ से हम चले। उस गाँव में ज़रा आराम कर लें।

यह एक अच्छी खासी बस्ती थी जहाँ कुछ बड़े मकान भी थे, और एक सरदार वहाँ का मासिक था। एक कुण्ड भी पास में बना था आरामगाह देखकर वे वहीं उतर गये। वहाँ पहले पर दो सैनिक थे। ‘तुम लोग जाओ कोई भी हो यहाँ ठहरने के लिए हमारे मासिक की आज्ञा सेना ज़रूरी है।’

सुल्तान ने कहा, ‘अपने मासिक से जाकर कहो कि वे हमें ठहरने की इजाजत दें।’

सैनिक गये, और लौटे तो साथ में एक १५ वर्ष का बालक भी था।

सड़क न कहा ‘मरे नामा यहाँ नहीं है इसलिए मैं ठहरने की इजाजत नहीं दे सकता।’

सुल्तान बोला, ‘बेटे, हम इस तपती धरती में खसते रह रहे हैं, इसलिए थक और प्यासे हैं। हमें इस तरह यहाँ से न निकालो।’

आप जो कहते हैं वह ठीक है लेकिन मुझ लो यही

हुसम है। इस सान पानी की कमी के कारण हमारा जना गार आधा ही भरा हुआ है।”

‘हम तुम्हारा कीमती पानी बर्बाद नहीं करेंगे।’

खुद है कि हम अनजाने लोगों को यहाँ ठहरान नहीं दते।’

मुल्तान का एक सैनिक आगे बढ़ा और उस बतमीज सड़के को धक्का देन लगा मगर सड़का बढ़ा फुर्तीसा निकला। एक हाथ से सैनिक को पकड़कर वह धक्का दिया कि सैनिक जमीन सूँघन लगा। मुल्तान को वचपन का वह दिन याद आया जब वह किचसकोट में था। वह धम गुस्ता नबमी थी। उस दिन दुगा माता के नाम पर मसला लगता था। मस म ऊँची-सम्बी बूट कुत्ती और कटार भाँजने क खस हाते थे। एक सम्वा-सगड़ा आदमी कुछ सड़का को तग करता था। मुल्तान उस पर दूट पड़ा और गदन से पकड़ कर उसरु साथ जमीन पर साट-पलोट लान लगा। मुस्टड का गला घुटन लगा और वह दद से खींच पड़ा। सड़के वहाँ जमा हाकर मुल्तान का तासियाँ धजाकर बड़ाबा दन लग।

मुल्तान का आदरवय हुआ। वह उठकर सड़क की पाठ धपपपाने आय बढ़ा, सफिन सड़क न कुछ दूसरा ही समझा, और कटार लकर वह उमकी भार सपका। मुल्तान और सड़के म सड़ाई हान लगी। सड़क क हाथ से वह कटार छीन मना चाहता था, भार सड़का अपन का बंधा रहा था। मुल्तान को उमस कटार छानन म बड़ा दिक्कत हा रही थी क्योंकि वह अपना उग्र से ज्यादा मजबूत था। दगी मगड़ में सड़क

की बांह का कपड़ा फट गया और वहाँ पर निहासदे को एक पदाइशी निधान दिखाई पड़ा। उसने मुस्ताम और लड़के के चहरे में भी काफ़ी मेस पाया। वह तुरन्त बीच में आ मयी और उसकी बिनती पर लड़का मान गया।

निहास ने पूछा, "बेटे तुम्हारे पिताजी कहाँ हैं ?"

"मैंने अपने पिता को कभी नहीं देखा पर मेरी माँ घर पर है।"

"क्या हम सोगां का वहाँ में खलोये ?"

लड़का मान गया और वे सोग उसक पीछे खसने लगे। मुस्ताम को घर के बाहर छोड़कर निहासदे भीतर मयी। एक क्षण भर बाद मुस्ताम को बड़ा आश्चर्य हुआ, जब लड़का वीरता हुआ बाहर आया और उसके पाँवों पर गिर पड़ा। उसने मुस्ताम का हाथ पकड़ कर बिनयपूर्वक कहा "आप मेरी माँ के पास चलिए।"

लड़के के हाथ का स्पर्श करते ही मुस्ताम की देह रामाशित हो उठी। घर के भीतर निहासदे एक अपूष सुन्दरी के साथ लड़ी थी। उसने हँसते हुए कहा "आओ अपनी खूमरी पत्नी मुनाल और अपन बेटे जमदीप से मिलो।"

मुस्ताम बड़े अचम्भे में था। यह निहासदे का वह जव राज से दयने लगा।

"अधरज में मत पड़ो। जा कुछ मीसे कहा, यह सही है।"

मक़िन तुम क्या कह रही हो ? मैं तुम्हारे गिवा फिती दूसरी स्त्री से कभी पारी नहीं की।"

‘तुम्हारा कहना सच है, पर मैं जो कुछ कहती हूँ वह भी सही है।’

मुल्तान अधरज में पड़ गया। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

मुन्दरी सामने आयी।

‘क्या तुम्हें किसी घुंघट वाली स्त्री की याद है? जसदीप तुम्हारे राजतिलक का उपहार है। मैं तुमसे एक पुत्र की कामना करती थी।’

मुल्तान न तो कुछ समझ सका, न कुछ निर्णय से सका। वह उन भयंकर सम्भावनाओं को समझता था अगर उसने जसदीप के लिए कुछ किया। नरवसगढ़ का विस्फोट उसे याद था और वह वसी ही स्थिति में अपने को नहीं ढासना चाहता था। साथ ही उसने यह भी सोचा कि जसदीप के प्रति भी उसका वायित्व है। यद्यपि घोड़े में यह सब हुआ था, फिर भी जसदीप से उसके सम्बन्ध को कैसे छुट्टा किया जा सकता था? फिर जसदीप को माँ का क्या होगा? अगर वह जसदीप को गोद में ले तो क्या सबका उसे स्वीकार करेगा?

किन्तु उसे चिन्ता करने की जरूरत नहीं थी, क्योंकि निहासद जसदीप के बारे में जानती थी, और उसे याद था कि पिता पुत्र किसी दिन तो मिलेंगे ही। पहली बार मिलत ही निहासद पुत्र और उसकी माँ से प्यार करने लगी थी।

निहासद ने बड़ी बसबसा से जसदीप को गले लगात हुए कहा ‘मेरा बेटा, जहाँ मैं कितनी प्रसन्न हूँ।’

जब वे लौटे, तो जलबीप और उसकी माँ भी उनके साथ थीं। जैसेजैसे सौतेले पर उन्हें पठा चला कि उसी दिन फूसकुंवर का ब्याह है। यह शौकाने घासी बात थी, तो भी सुल्तान ने अपने आश्चर्य का भाव दशा रखा और तब तक निहासदे ने जसकुंवर से सब कुछ पूछ-ग्राछ लिया।

“ ५८ ::

सुल्तान को फूसकुंवर के व्यवहार से बड़ा धक्का लगा।

जब उसको सुल्तान ने बुझाया तो फूसकुंवर का दिल बैठ गया। सुल्तान ने झिड़कते हुए कहा अथवा तुम मुझे क्रुद्ध भी करना चाहो, तो मैं तुम्हें थोट नहीं पहुँचाऊँगा। लेकिन अगर महाराजा कामध्वज का पुत्र किसी दुर्व्यवहार के कारण मार डाला जाय, तो मैं उसके धपाने के लिए रैणसी भी नहीं उठाऊँगा।” और वह क्रुद्ध होकर चला गया।

पानी की कमी होने से जैसेजैसे में कोई बाग लगाना मुश्किल था। मगर महल के गन्दे पानी से एक आगिन में छोटा-सा बाग लगाया गया था। चमेसी के पत्तों का गमकता कुज निहासदे और जसकुंवर को उसके तीखे बैठन में बहुत मुहाता था। फूसकुंवर पर सुल्तान का जो भी बोझ-बहुत दबाव था, वह उसके अनुपस्थित रहन पर जाता रहा। फूसकुंवर खूब जमकर चराच पीने लगा। वह जानता था कि जसकुंवर पाम चमेसी के कुजों में बिताती है। निहासदे के

न रहने पर उसकी दो सखियाँ साप जातीं। फूलकुवर एक पेड़ के पीछे छिप गया, और उसकी भूखी बालों औरतों की खिलवाड़ देखती रही। वह जसकुंवर को उस भीने रेघम की पोसाक में सड़े देखता रहा जिसकी बगिया इतनी छोटी थी कि उरोजों के ठोस उभार मसभाने लगते। वह दुपट्टा फेंककर फूटक रही थी।

भाज वह बहुत ही प्रफुल्लित थी। उमग में वह खास राजस्थानी नाच भूमर नाचने लगी। जब वह नाचते-नाचते अपने पत्रा पर घूमर करती तो उसका घाघरा उड़कर जपामों तक उस मन्त कर देता।

बाग में इस उनकी हँसी की गूँज थी। फूलकुवर ने उसकी पतली कमर को बहुत सराहा और उजले पाँवों को भी जो कुजा की छाया में और सुन्दर लग रहे थे। अचानक उसका प्रणयोन्माद नयानक हो उठा। चुपचाप बाहर आकर वह उसकी बगल में गढ़ा हो गया। उसकी बासना तीव्र होने लगी। जसकुंवर की बालों नय से और बढ़ी हो गयीं। वह लज्जा से साम हा गयी और कुछ कह नहीं पा रही थी। दासियों ने अपने अपने दुपट्टे सिय धीरे उसे अकेली छोड़कर भाग गयीं।

‘नहीं प्रिये, तुम मेरी हा। तुम मुझसे डरा मत।’

जसकुंवर ने गुम्से से कापसे हुए कहा ‘आप यहाँ में तुरन्त बसे जाइए।’

उसने जसकुंवर के मुने कम्बों को दोनों हाया से जकड़ लिया, पर जसकुंवर उस पकड़े मारकर दूर करने की कोशिश कर रही थी। वह पामल की तरह अपने को छुटाने लगी।

जब वे लौटे तो जलदीप और उसकी माँ भी उनके साथ थीं। जससमेर छोटने पर उन्हें पता चला कि उसी दिन फूसकुंवर का ब्याह है। यह चौकाने वाली बात थी, तो भी मुस्तान ने अपने आश्चर्य का भाव दबा रखा, और तब तक निहामदे ने जसकुंवर से सब कुछ पूछ-पाछ लिया।

.. ५८ ..

मुस्तान को फूसकुंवर के व्यवहार से बड़ा धक्का लगा। जब उसकी मुस्तान ने सुनाया तो फूसकुंवर का विस बँठ गया। मुस्तान ने झिड़कते हुए कहा, "अगर तुम मुझे क्रुस भी करना चाहो, तो मैं तुम्हें चोट नहीं पहुँचाऊँगा। लेकिन अगर महाराजा कामध्वज का पुत्र किसी दुर्व्यवहार के कारण मार डाला जाय, तो मैं उसके बचाने के लिए उँगली भी नहीं उठाऊँगा।" और वह क्रुस होकर चला गया।

पानी की कमी होने से जससमेर में कोई बाग सगाना मुश्किल था। मगर महल के गन्दे पानी से एक अगिन में छोटा-सा बाग सगाया गया था। चमेसी के पेड़ों का गमकता कुंज निहामदे और जसकुंवर को उसके नीचे बैठने में बहुत मुहाता था। फूसकुंवर पर मुस्तान का खो भी पोड़ा-बहुत दबाय था, वह उसके अनुपस्थित रहने पर जाता रहा। फूसकुंवर खुब जसकर धराय पीन सगा। वह जानता था कि जसकुंवर नाम चमेसी के कुर्बों में बिताती है। निहामदे के

न रहने पर उसकी दा सन्नियाँ साथ जातीं । पूसकुवर एक पेड़ के पीछे छिप गया, और उसकी भूखी भाँसों औरतों की खिलवाड़ देखती रहों । वह जमरकुंवर को उस भीन रेगम की पोशाक में सड़े देखता रहा जिसकी अगिया इतनी छोटी थी कि उराजों के ठोस उभार ससभान सगते । वह दुपट्टा फेंककर फुदक रही थी ।

आज वह बहून ही प्रफुल्लित थी । उमग में वह खाम गजस्थानी नाथ भूमर नाथन सगी । जब वह नाथत-नाथते अपन पत्रों पर भूमर करती ता उसका भाँपरा उड़कर जघायों तक उसे नग्न कर दता ।

बाग में बस उनकी हँसी की गूँज थी । पूसकुवर ने उसकी पतली कमर को बहूत सराहा और उजस पाँवों को भी जो कूजों की छाया में और सुन्दर लग रहे थे । अचानक उसका प्रणयान्नाद नवानक हा उठा । सुपचाप बाहर आकर वह उसकी बगल में गड़ा हो गया । उसकी वासना तीव्र होन सगी । जमरकुंवर की भाँसों नय से और बड़ी हा गयीं । वह सज्जा स सास हो गयी और कृछ कह नहीं पा रही थी । दासियों ने अपन अपने दुपट्टे लिय और उस मकली छोड़कर नाग गयीं ।

नहीं प्रिय तुम मरी हा । तुम मुन्स बरो मत ।'

जमरकुंवर ने गुस्स में काँपत हुग कहा 'बाप यहाँ में तुरन्त ससे जाइए ।'

उसन जमरकुंवर क मुन कर्षों की दोनों हायों में जकड़ लिया पर जमरकुंवर उस मकके मारकर दूर करने की काशिया कर रही थी । वह पागम की तरह अपने को छुड़ाने समी ।

वह बिस्मायी "नहीं नहीं, यह तो बड़ी बेहयाई है।" फूसकूबर ने उसकी आँसों में भयानक क्रोध देखा।

मकामक पीछे से किसी ने फूसकूबर के दोनों हाथों को बाँह में भर लिया। उसकूबर अपने को छुड़ा और अपने को धँकती हुई महसूस की ओर भाग निकली। मेघसिंह ने अपनी तलवार की मूठ से पीठ पर मारते हुए कहा "बदमाश मुस्तान घर्म से गढ़ जायेगा नहीं तो इसके लिए मैं तुम्हें मार बासता।"

एक लम्बे अटूट मौन से मेघसिंह ने उसे तेज आँसों से देखा, और कसकर उल्टे हाथ से एक थप्पड़ रसीद किया। फूसकूबर के मुँह से खून बहने लगा और वह गिर पड़ा।

∴ ५९ ∴

वे किचलकोट वापस आ गए थे। मूरज अभी-अभी कितिन में डूबकी लगा गया था। सारा राजमहल अपने में मग्न था। सेनापतियों की बातचीतों से विशास सभा मग्न मूत्र रहे थे। पारवर्षी फ़ानूसों के कोरों से टकराकर मखिम रोहनी की लौ भी सौगुनी प्रज्वलित हो उठती। पवित्र बस्तुएँ मिश्रा-पात्र जिसे लेकर मुस्तान इदरकोट से निकला था और बारहसिंधे का वह चिर, जिसने मिहासदे से उसका मिसन कराया था सारी बस्तुएँ दीवार पर टँगी बमक लगी थीं।

“अब मेरी माँ मेरे पिता के पास गयीं, तो उन्होंने कहा, मैं फूस्तकुंवर से अपनी घेटी का ब्याह करने का वचन दे चुका हूँ। राजपूत अपना वचन कभी नहीं पसटता। अब मैं कोई दूसरी दार्त नहीं मानूँगा। उसका ब्याह फूस्तकुंवर से होकर ही रहेगा।”

“माँ ने कहा, मगर एक बार तो आप अपना वचन पसट चुके हैं। आप जानते हैं कि मुस्तान जिंदा है मगर उसे लीजने की आपने कोई खेप्टा भी की? तब धीरे-धीरे वह बीस पडे और माँ ने अपना प्रस्ताव मनवा लिया।”

“अब तुम मेरी हो। कोई भी तुम्हें मुझसे नहीं छिन सकता।” मुस्तान ने कहा।

वह चुप थी। उसके कन्धे पर सिर टिकाने अपने आप में लोपी हुई मानो दूर कहीं उसकी आँसुं कुछ खोज रही थीं। केबल कभी-कभी उसकी कसाइयों के कंगन मजक आते।

क्यां प्रिये, तुम बादलों की तरह दूर क्यों हो रही हो?

सोयेपन से जैसे वह जाग पड़ी, और मुस्तान के पास लिसक आयी। उसने कहा, “मेरे और पास हो आओ। मुझे अपने से दूर न होने दो।”

मेरी प्राण, नहीं, कभी नहीं। मुस्तान ने कहा और पास लीपकर उसे अपनी बाँहों में कसते हुए घूमने लगा। वह एक दाय कौपी और फिर उसके चौड़े बल में मुँह छिपा लिया।

केलापद में तीन दिन रुकने के बाद मुस्तान अपनी वधू के साथ इन्टरकोट लीट आया। महाराजा माघ ने हाथ जोड़ कर महाराजा कामध्वज राव से विदा ली और कहा—

उस दिन नाम की लौटने पर निहासदे ने पूछा,
"महाराजा कहीं हैं?"

"गरवसगढ़ से कोई दूत आया है, और वे लोग किसी महत्वपूर्ण विषय पर विचार कर रहे हैं। जानी नी उनके साम ही है।"

निहासदे इस समाचार से उद्विग्न हो उठी। वह अब कोई भी नयी मुसीबत मोल लेना नहीं चाहती थी, और मारु का दून बिना कोई गम्भीर बात हुए नहीं आया करता। सगमरमर के समने उस कक्ष से ऊपर प्रकोष्ठ तक चले गये थे। उन्हीं के धीप स होकर वह सभा भवन की ओर दौड़ी।

सुल्तान दूत से कह रहा था 'मुझे इसका पूरा निदधय है।'

प्रज्ञा पर एक पत्र पड़ा था। निहासदे ने उसे उठाया। वह मारु का था।

'मुम्हारे जाने के कुछ ही दिनों बाद महाराजा नारसिंह के साथ कहीं गये और फिर नहीं लौटे। कोई नहीं जानता कि नारसिंह कहीं से भाया था। अभी एक सन्देश मिला है जिसमें कहा गया है कि राजा को तभी छोड़ा जायगा जब बदले में मैं अपने आपको समर्पण करने की प्रतिज्ञा करूँ। मुझे उस के बाद क्या करना है, यह आदेश था मैं भेजा जायगा। अगर महीने भर के भीतर यह घोषणा नहीं की जाती, तो महाराजा का क़त्ल कर लिया जायगा।

निधि दम तिन पीछे की पड़ी थी। मारु अपने को मृत्यु

के निकट समझ रही थी। सिर्फ़ बीस दिन और बाक़ी हैं कोई नहीं जानता कि इसके पीछे कौन है।

निहासदे के घुटने टिपिल पड़ने लगे, और वह बठ गयी। सुल्तान ने कहा "हमें पता है कि नारसिंह उनके साथ था। यह गर्ग का ही काम होगा। अगर हम आज ही पत्त पड़ें, तो पहुँच जायेंगे।

जानी और चन्द्रसिंह रघुकोट से सौट आये थे। चन्द्रसिंह ने अच्छा काम किया था। उसने बड़ी धारीकी से योजना बनायी थी। वह क़िले तक पहुँचने के रास्ते जानता था। उसे यहाँ तक पता था कि खास-खास जगहों पर कितने सैनिक तैनात थे और कब उनकी पारी बदसठी थी।

रघुकोट एक छोटी जमींदारी थी। उसका मासिक गर्ग अपने को राजा कहता था यद्यपि उसका इलाका क़ियत तक ही सीमित था। गढ़रियों और भेड़ों को पोषण देना ही उसकी आय का साधन था। जिसके पास भी पशुओं का मुण्ड हाता वह उसके सैनिकों को उपहार माँग सकता था। इसलिए उसका क़िसा पशुओं के मुण्डों के लिए हमेशा खुला रहता था। क़िले में घुसने का एक ही तरीका था कि पशु पराने वाला गढ़रिया बन जाय।

सुल्तान ने उसी दिन गोधू जानी और अपनी सेना के साथ खूँप कर दिया। निहासदे पीछे रुकने के लिए तैयार नहीं हुई। वह भी उनके साथ सवार होकर धसी। उसने पति से कहा, "मैं अपनी किन्न अपने आप कर सूंगी तुम चिन्ता मत करो।"

== ६० ==

उस मुनसान प्रदेश में पूरे दिन वे घूमते रहते तब जाकर कहीं किले का घुंघसा आकार दिखायी पड़ा। दा सौ पगुओं के साथ वीस गडरिय किले के मोठर घुसे। सदा के नियमा नुसार उन्हें रात भर ठहरन की आज्ञा मिल गयी। दूसरे दिन वे भाव-भाव तय करके कुछ सनिकों के साथ चल जायेंगे।

मुम्तान ने कहा हमारा लिए एक ही दिन में हमला करके निवटारा कर देन में कोई मुश्किल न होगी। मगर ठोसकुंवर उनका क्रुद में हैं और वे जिन्दा नहीं बचेंगे। इसलिये खुने तौर पर आग्रहण करने का विचार छोड़ दिया गया। उन्हें सर कीव से अपना काम पूरा करना था। सोधू इसमें अगुवा बना।

बाद व तारों को डंकते हुए बर्षा के घन बादल छा गये। पुष्प अंधेरा था। किले के फाटक के पहरेदारों के सिवा सभा साम चल गये थे। चूंकि अम्दासिह किले के अल्प अल्प के धार में जानता था, इसलिये उसे ही अगुवा बनन को कहा गया। उनके पाम हयियार के नाम पर वहाँ से साजा बाटे हुए माट माटे डटे थे। देखने में तो वे पगु हकिने के लिए थे, पर उनसे काम कुछ और ही सना था।

वे मुख्य द्वार की तरफ चल। वहाँ मगन्नग पञ्चीस सनिक रहन थे।

मूठ में कुछ मौड़ ना थे। उन्होंने उनमें से दस भयकर गोशों का छाह दिया। उन्होंने सीधों की पीठ पर नोक घुमाकर उन्हें आग भगा दिया। इधों की नोक से आग्न पर वे बिबरान हा फाटक की ओर भागते। फाटक के पहरेदार

अचभित हो किर्त्तव्यविमूढ़ रह गये। कुछ तो सौदों के सींग से लोभ दिये गए, बाकी से गोशू और उसके सैनिकों ने सम्भलिया। पशुओं को एकत्र करने के लिए बिस्लाना-पुकारन को नियम का नियम था, किसी ने बिस्लाहट सुनी तो उसकी परवाह भी नहीं की।

खन्दासिह ने फाटक का ताला तोड़ डाला, और सुल्तान के घुने हुए दो हजार सैनिक किले में घुस आये। सबसे आगे में सुल्तान ने प्रवेश किया। सभी ग्रामीणों की पोशाक में ये घोड़ों को उन्होंने पूरी पर ही छोड़ दिया और वे पैदल ही आये थे। ये सैनिक इतने पटु थे कि मौका पड़ने पर मत्समुद्र सभी नहीं ठरते थे।

वे किले के कोमै-कोने में फस गये और किले के सैनिकों के घरों को उन्होंने घेर लिया। घरों के दरवाजों पर रोक लगा दी गयी और भागने के सभी रास्ते बन्द कर दिये गए। लड़ सकने के लिए कोई यात्री नहीं छोड़ा गया।

सुल्तान न अपने कुछ चुन हुए योद्धा लिये, और बहु गर्ग के महल की ओर चला। किसी गान्तरिक दंका से गगन संचेत हो उठा था, और भागने ही वाला था। जब सुल्तान भीतर घुसा तो उसने देखा कि निहामदे तमवार से गर्ग का रास्ता राके लकी है।

गर्ग बिस्साया, रास्ते से हट जाओ। मैं भीतरों से नहीं सदता।'

'ओह ! तो डाकू भी इतने इज्जतदार होते हैं !' सुल्तान न अन्दर घुसते ही बहा।

झुड़ होकर गग पीछे घूम पडा। यह एक अच्छा योद्धा था और काबो-मस्त हो सडना रहा। परदों और गहों को फाड़ते हुए व आगे-पीछे बढ़ते रहे। सुल्तान अभी तक अपनी पहले की शक्ति प्राप्त नहीं कर सका था, इसलिये गग उसे एक दीवार तक ठकस से गया। यह मौत की सडवाई थी। निहालदे बाप में दखल नहीं दे सकती थी क्योंकि सुल्तान के लिये वह पृणित बात होती। पर गर्ग एक पर्व से उमङ्ग गया, और इससे सुल्तान को मौङ्गा मिसा। गर्ग भायल हुआ, और पकड सिया गया।

.. ६१ ::

सुल्तान गग की गद्दी पर बठा। वह बडा उदास था, क्योंकि डोमकुंवर नहीं मिसे थे। 'डोमकुंवर कहाँ है? अगर तुम नहीं बनसात, ता मैं तुम्हें कुत्तों से फडवा दूँगा।' उसकी आवाज में इतनी बठोरसा थी कि उसके अनुयायी भी चौंक उठे।

मर भी गग चुप रहा। उसकी भाँखें क्रम पर गडी थीं, और वह अपना मुँह इस क्रूर वन्द किये हुए था, कि पोर्द भाप भी नहीं सकता था कि उसने मन भं क्या है।

सुल्तान न देगा कि जानी एग गडरिये को गर्दन से पपडे पता मा रहा है। जब वह पास जाया तो उगने देगा कि यह मार्गमिह है। जानी बोसा यह भादमी गडरियो के गाथ भागमे के वेर म था।

नारसिंह उसके घुटनों पर गिर पड़ा, अगर जाम बख्त की जाय तो मैं बह दूंगा ।’

गर्ग को गुस्मा आ गया। उसने नारसिंह को ऐसा जबर-बस्त धक्का दिया कि बह गिर पड़ा। गोधू गर्ग पर पिस पड़ा, और किसी तरह उसे क्राबू में किया।

मुस्तान ने कहा, ‘अगर डोसकूँवर मिस जायें तो मैं तुम्हें और गर्ग को भी छोड़ दूंगा।’

खुब धाँधकर नारसिंह को जानी के साथ ले जाया गया। आगे आगे सैनिक भी थे।

मुस्तान ने चेनाबनी की “धोला मत देना।

नारसिंह ने कहा, ‘जब मीन घूर रही है तो छस नहीं करूँगा।’

डोसकूँवर एक कुएँ के भीतर बनी एक कास-कोठरी में था। उसकी हासत बड़ी छराब थी। दो दिन से खाना तक नहीं मिला था।

वैसा कि मुस्तान ने बखन दिया था गर्ग को माफ़ करके छोड़ दिया गया। मुस्तान की सेना आ गयी थी जो दूसरे दिन किन्न पर पहुँची। मुस्तान ने डोसकूँवर को सीने से लगा लिया और अपने पाँच सौ सैनिकों के साथ उसे नरबसगढ़ भेज दिया। मुस्तान और मिहामदे किबसबाट की ओर मुड़े।

जब भी मुस्तान किबसबाट आता, तब अपने सिंघ न मही निहासदे के सिंघ धरकर ठहरना चाहता। मगर मुदिकस से कुछ ही समय बीता होगा कि उसे फिर एक बुभावा आया,

और वह अपने चुने हुए आदमियों को लेकर नयी मजिस की ओर चल पड़ा।

अब दूसरा एक मन्वा युवक उसके साथ रहने लगा।

जिस जमदीप को निहालदे ने अपना बेटा मान लिया था वह सुन्तान की बिल्कुल प्रतिमूर्ति था। निहालदे ने सोचा कि वह ठीक वही छाया देण रही है जो बेसागढ़ के घास में उसने देखी थी। जो दूसरा चेहरा उसके सामने खड़ा था, उसे वह मुद्रिकस से पहचान पाती अगर उसमें समय के साथ होने वाले परिवर्तनों को हर रोज न देखती। यह एक भूरी दाढ़ी वाले भादमी का चेहरा था, जो रेगिस्तान की गम हवामा से बाला पड़ गया था।

वे पश्चिमी लिङ्गियों के पास खड़े होकर भुक्तता हुई रात का सोनिस वृष्य देख रहे थे। कुछ दूरी पर उन्होंने आग की लौ देखी। आग के किनारे रात का पहरेदार बैठा था। निहालदे के कानों वाले आग की लौ में धमक रहे थे।

‘बेनीसिंह सभा भवन में प्रतीक्षा पर रहे हैं।’ दासी ने प्रवेण करते हुए कहा। निहालदे को दासी का आना बुरा लगा।

‘अपनी प्रजा के लिए भी तो कुछ करो जय दूसरों के लिए दत्तना सब कर रहे हो।’ निहालदे ने कहा।

‘मेरी कोई प्रजा नहीं है। मैं तो सेवार्थी का सेवक हूँ।’ और उसकी आँगों में मानो मूरज उदय हो गया। निहालदे की आँगों उस क्षमस्वार पर गड़ी रह गयी।

मेरी त्रुटियाँ क्षमा करें। इतने राजाओं के समूह में हम न ता आपकी पूरी खातिरदारी कर सके, न आपके आराम को कुछ चिन्ता ही। किन्तु मुझे हादिक प्रसन्नता है कि मेरी बेटी का ब्याह आपके कूँवर सुल्तान से हुआ।

कामध्वज राव महाराजा माघ से गले मिले और विदा लेकर इवरकोट को चल पड़े। माघ चाहते थे कि निहासदे के साथ अनेक दासियाँ जायें मगर निहासदे ने मना कर दिया।

रानी बहुत परेशान थीं। न तो निहासदे और न सुल्तान ने उनसे यह बताया था कि धास्तविक सुल्तान कौन था। वे अपने को इस बात के लिए तैयार न कर सकीं कि उनकी पुत्री और एक राजा के पुत्र सुल्तान की पत्नी बिना दासियों के जाय। उन्होंने निहासदे को प्यार से बाँहों में जकड़ लिया और वियोग के दुःख से मूर्च्छित हो गयीं।



:: ३ ::

दो छोटी-छोटी पहाड़ियाँ के बीच हरी और मुस्कराती यह एक मनोरम घाटी थी। चरख के सूय तले कुछ चकत्ते धीरे-धीरे काले भूरे रंग में बदल रहे थे। किसान फसल काट धुके थे। फसलें प्रचुरता से हुई थीं। इस क्षेत्र में सब कुछ वर्षा पर निर्भर करता था और इस बार इन्द्र देवता बड़े कृपासु रहे थे। पहाड़ी के सामने आधे सूखे भरने से पीला-पीला पानी बह रहा था। सूखी हुई बिचासी से महक आ रही थी। किसान

आनन्दमन थे, और उनकी वधुओं के गीता से घाटी गुंज रही थी। कुछ सोग फ़सल की देवाई कर रहे थे। कभी-कभी एक कुत्ता भूंक उठता था।

दूल्हे की वारात थाराम से इदरकोट की ओर बढ़ी जा रही थी। खेतों में काम करने वाले रास्ता घेर कर जगह जगह छड़े हो गये और खुशी के नारे लगाने लगे। नौजवानों ने उछल-उछल कर जय-जयकार किया।

केलागढ़ की घटनाओं के बारे में उनकी अलग-अलग रायें थीं। बहुतेरे तो यह भी नहीं जानते थे कि लक्ष्य किस राज कुमार ने बेधा था। जिज्ञासावस से देखने के लिए भा सके हुए। लेकिन जब उन्होंने राजकुमार सुल्तान को हाथी पर सवार देखा, तो वे अपनी खुशी न रोक सके। एक अच्छा-खासा प्रौढ़ आदमी सड़क की ओर दौड़कर नापने लगा। खुशी से तानियाँ पीटती हुई भीड़ पीछे-पीछे हो ली।

भूरा और मौसम से घुमना किसा उस दृश्य का ही अंग मालूम पड़ता था जिसे पहला न डक रखा था। वे मुख्य द्वार से भीतर घुसे, जिस पर कि उस युग की मध्य आकृतियाँ अंकित थीं। बड़े फाटक के किबाड़ा पर धारदार फीसें गड़ी हुई थीं। दीवार के ऊपर छज्जों से नगर के लोग यह देख कर कि राजकुमार सुल्तान भाय हैं, फूल और अच्छत बरसाने के लिए एकत्र हो गये थे। यह दृश्य तो फूलकुंवर के लिए और भी कष्टकर था, जो भीड़ के सामने अपनी पराजय स्वीकार करने से डरता था। हामीकि उसे लक्ष्य-बेध का अवसर पहल दिया गया था किन्तु यह असफल रहा।

हृष और विजय के इस ब्वार की सूचना देने के लिए रानी के पास सन्देश-वाहक पहले ही भेजे जा चुके थे ।

सबेर पाठे ही बह हृष से पुसक उठी, और उन्होंने आज्ञा दी कि सारं नगर को सजाया जाय और दीपमासिका की जाय । गृहाध्यक्ष को भी आदेश दिया कि जब राजकुमार पधारें ता उनके स्वागत का बहुत सुन्दर प्रवध किया जाय । क्षण भर के लिए भी रानी कर्णावती न यह नहीं सोचा कि आन वाला राजकुमार फूसकुंवर क तिवा नो दूसरा कोई हो सकता है । वह नहीं जानती थी कि फूसकुंवर आ चुका है और रजासा अपन कक्ष म पड़ा है ।

उस दिन प्रात कास हो महल की सारी स्त्रियाँ रानी और कामध्वज राव की त्रितीय रानी की पुत्री रत्नादे के साथ द्वार पर एकत्र हो गयीं । रानी आधा और आनन्द स उमम रही थीं । चारों ओर उछाह छा रहा था ।

वर और बधू को लेकर आन वाले हाथी न किले के द्वार स प्रवध किया । कोटपाल आगे आया और अपनी तसवार से परम्परागत ससामी धी । चाँदी की तरह चमकदार स्येत बालों वाल बृद्धजन जो अधिक चलने में असमथ थे, आनन्दित हो चौक में खड़े हो गये थे । पुरोहितों ने मन्त्रोच्चार किया । निहासदे आनन्द बिभोर थी । उसकी आँखें आश्चय और आनन्द स चमक उठी ।

सन्देश वाहक राजकुमार के आगमन की सूचना दन के लिए बड़ा । स्त्रियाँ स्वागत-गान गाने लयीं । उनके हाथ हिसने स कनक-कगन भनक रहे थे । द्वार पर रानी के साथ रत्नादे

राजकुमार के स्वागत में आरती उठारने को सोने का थाल लिये लड़ी थी। रानी राजसी पोशाक में थी और उनका रत्न खटित मुकुट धमक रहा था।

हाथी द्वार के पास आकर बठ गया। निहालदे को पीछे लिये राजकुमार सुल्तान मुस्कराता हुआ उतरा। राजकुमारी रत्नाद महल में फैंसी अक्रवाहें सुन चुकी थी। सब से पहले उसने ही स्थिति का माँपा। उसके चेहरे पर मोहक मुस्कान थी यह मुस्कान अचानक नहीं आयी, किन्तु ओठों से उठ कर धीरे-धीरे सारे चेहरे पर फैल गयी, जिससे चेहरा और अधिक मनमोहक हो उठा।

रानी अब अपने को सँभाल न सकी, और चीख पड़ी, यह क्या मजाक है! यह हाथी यहाँ क्यों बठा है? फूसकुंवर के हाथी का आने दो, जिस पर कि वह अपनी बहू के साथ है।

वारों द्वार सन्नाटा छा गया। रत्नादे ने साहस से काम लिया बोली— 'माँ, क्या आप देख नहीं रही कि भाई फूसकुंवर के बदल सुल्तान सफल हो बधू को सग साथे हैं। मुझे उन पर सचमुच गब है।'

इस अप्रत्याशित जानकारी से रानी की उद्विग्नता इतनी बढ़ गयी कि वह अत्यन्त फुट्ट होकर वहाँ से चली गयी। सुल्तान श्वेतरे पर उतरा। रत्नादे ने आरती उठार कर स्वागत किया और बर तथा बधू को मासा पहनायी। मुट्ठीभर हीरे लेकर उसने घर के मस्तक के ऊपर से फेंके, जिससे अपघ्नकुनों का नाश हो आय। फिर वे महल के भीतर गये। वहाँ आंगन में कई मुन्वरियाँ बँठी थीं, जिनके हाथों में

बाद्य-यन्त्र धं, और नतकियाँ सचक-सचक कर लोकप्रिय नृत्य करने लगीं ।

४

निहालदे सुन्दर बुझहिन थी । उसकी जोड़ी मुल्तान-जैसे लम्ब-खोड़े ब्यक्ति क साय खूब जैब रही थी । गहर साए रंग की पोशाक और लम्बा घाघिरा उसके छुरछुरेपन को और बढ़ा रहा था । उसकी बड़ी-बड़ी आँखा में इतनी चमक थी कि उसके गल की घोभा बढ़ाते दमकते हीरे भी उसक सामन हय थे । उसकी मुद्रा देवियों की जती थी । वहाँ उपस्थित स्त्रियाँ मूर्तिवत् खड़ी उस दसती ही रह गयीं ।

रानी कर्पावती के लिए वातावरण धब और भी बसह्य हो गया । उसन फूलकुंवर को सोजन के लिए आदमी भेजे । फूलकुंवर सो दुख की मूर्ति बना बैठे था । माँ को दस उसकी आँसू भर आयीं ।

माँ मैं मुल्तान से कनी एसी बाधा नहीं करता था खासकर जबकि मैं उसे अपना नाई समन्ता था ।'

रानी का पारा चड़ा हुआ था । वह चित्लाकर कहने लगी 'तुम कायर हो । नहीं तो तुमने मुल्तान को अपनी पत्नी का हरण न करने दिया होता ।'

रानी ने अपनी दासियों से कहा कि मुझे राजा के पास स चसो और वह उड़ती-सी बाहर की धोर चल पड़ीं ।

पर राजा उन्हें सन्तुष्ट न कर सका। रानी उसी तरह क्रोध से तनी अपने महल में सौटीं। निहालदे की शादी सुल्तान से हो गयी थी, और अब इस सत्य को मिथ्या नहीं किया जा सकता था। धनुष से छूटा हुआ तीर कब वापस आता है ? रत्नादे पर निहालदे को आराम से रखने का भार था। रानी अपने को सँभाल न सकी और राजकुमारी पर बरस पड़ीं।

रत्नादे ने कहा, माँ तुम्हारे पुत्र फूसफूसर को शादी एक बार ता हो चुकी है। हमने दूसरी रामिया को भी देखा है मगर उनमें से कोई भी निहालदे के पाँव की धूस के बराबर भी नहीं है।'

सुल्तान, जो एक कोने में खड़ा था, इतना अधिक धवरा गया कि उसकी इच्छा हुई कि वह जस्ती बाहर चला जाय। उसे देखकर रानी चीख पड़ीं 'ओ भिक्षुमगे ! निहालदे की सगाई मेरे बेटे फूसफूसर से हुई थी। तेरी हिम्मत कैसे हुई कि आगे बढ़कर तुने मध्य-वैष का यत्न किया। तू भूख गया रे, कि भोजन माँगकर जो दाने तुने इकट्ठ किये थे वे भरती पर बिखर गये। महाराजा न पूछते तो तू भूख के मारे ही कूब कर गया होता।

सामने आकर सुल्तान ने रानी को प्रणाम किया और बोला 'अब आप ऐसा सोचती हैं तो मेरा अब यहाँ एक पल भी रुकना अनुचित है।'

इतना कह सुल्तान निहालदे को लेकर अपने कक्ष में आ गया। निहालदे दिखाने को भरसक साहस से काम लेना चाहती थी मगर भीतर ही भीतर वह बेह्व नयनीय थी।

असह्य मनोवेदना से वह कक्ष में पहुँचते ही सिझकने लगी, 'तुम कहाँ जाओगे ? मेरा क्या होगा ? मैं क्या करूँगी ? सभी तो मेरे हाथों की यह मेंहदी भी नहीं छूटी है।' उसने शून्य में निहारना । उसके भौरे-जैसे काले बालों की दो-एक सट्टें विखर गई थीं ।

सुल्तान ने उसकी पीठ धपधपाई, "निहाल, तुमने रानी की बात सुनी है । यह सच है कि महाराजा मुझे अपने पुत्र से बढ़कर स्नेह देते रहे हैं, और मैं उनका सम्मान करता हूँ मगर जो कुछ रानी ने कहा है, उसके बाद मैं नहीं समझता कि मुझे एक पल भी यहाँ रहना चाहिए ।

'तो मैं भी तुम्हारे साथ चलीगी ।'

"मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि राजा तुम्हारी देख-भाल करेगा और तुम्हें कोई कष्ट न होगा । मैं भी साल-भर के भीतर तीज के पर्व के दिन तुम से जा मिलूँगा ।'

एक क्षण धुपधाप रह वह सोचती रही । पर वेधेनी ने निहालदे का पीछा न छोड़ा । झुलझुल कर उसने अपने एक हाथ से मास पीछे हटाये, तो उसके कानों में दमकता एक बड़ा हीरा दीखने लगा । आँसुओं में मौसू ये और उसकी भावाब्ध भरती रही थी ।

सुल्तान ने कहा, "अगर मनुष्य को यह शरीर न मिलता तो फिर क्या कष्ट था ! हमें वियोग का दुःख भी न सहना पड़ता । जो भी हो, अब तुम्हें साहस से काम लेना चाहिए ।" इतना कहकर वह पल बिया ।

निहालदे के भीतर जैसे शक्ति का एक अणु भी न बचा

हो। उसके लिए पुकारना तक असम्भव हो गया। वह ऊर्ध्व पर गिर पड़ी, कोई पीछे छुरी की नोक की तरह उसके भीतर घुसकर उसके हृदय को छीसने और मरोड़ने लगी।

राजा को प्रणाम कर और उनसे निहासदे की देख रेख के लिए प्रार्थना करने के पश्चात् सुल्तान इदरकोट से चल पड़ा।

॥ ५ ॥

शहर से बाहर पहुँच कर सुल्तान संयोग से मरवमगढ़ की सड़क पर चल पड़ा। उसने एक बार पीछे घूमकर देखा। इदरकोट धीरे-धीरे दूर और दूर क्षितिज में विलीन होता जा रहा था। किन्तु ऊर्ध्व पर मूर्च्छित उस स्त्री की छाया उसके मन पर छायी ही रही। बार-बार उसके मन में तीव्र निराशा की सहर दौड़ जाती। वह सोचने लगा कि इतिहास किस तरह दोहराया जा रहा था। उसे याद था कि किस प्रकार उसे अपनी मातृभूमि छोड़नी पड़ी थी यद्यपि तब बात कुछ भिन्न थी। देशनिकाले के बावजूद तब माता पिता की शुभ कामनाएँ उसके साथ थीं। यहाँ तो साफ़ तौर पर उसके निकल जाने से एक माँ को प्रसन्नता हो रही थी।

उस बार वह अपने पिता, किचलकोट के राजा, द्वारा निर्वासित कर दिया गया था। और साथकास उसने अपना नगर छोड़ दिया था। रात अँधेरी थी। आकाश में बादल छाये हुए थे। जब-तब बिजली के कड़कने से घाम्ति भंग हो

जाती थी। मगर तब १४ वय का सुल्तान काली पोशाक पहने काले घोड़े पर चला जा रहा था।)

किचलकोट में राजा मैनपाल राज्य करता था। वह पिता के समान अपनी प्रिय प्रजा का पालन करता था। सभी उसका आदर करते थे। उसकी सुन्दरी रानी बड़ी पतिव्रता थी। उमर से तो वह सुखी थी मगर मन में उसे एक पुत्र की कमी सासती रहती।

एक दिन राजा ने सुना कि उसके राज्य में महात्मा गोरक्षनाथ पधारे हैं और उस छोटी-सी पहाड़ी पर उन्होंने धूनी रमाई है। राजा उधर चला पड़ा। महात्मा गोरक्षनाथ अग्नि के सामने बैठे तप करते थे।

पहाड़ी के नीचे राजा ने अपना घोड़ा छोड़ दिया, और पदस ही ऊपर गया एक गोरक्षनाथ जी की सेवा एक सेवक की तरह करने लगा। राजा को सेवा करते-करते छह महीने हो गये तो एक दिन योगिराज के नेत्र खुले।

वे बोले, 'रामन् तुम्हें क्या कष्ट है जो तुम छह महीनों से एक दास की तरह मेरी सेवा कर रहे हो?'

"महात्मन् मुझे कोई कष्ट नहीं है, और मेरी प्रजा भी सुखी है, किन्तु बस एक पुत्र की इच्छा है। मैं उसी की भिक्षा माँगने आया हूँ।" राजा ने हाथ जोड़कर कहा।

महात्मा ने राजा को आशीर्वाद देत हुए कहा, "रानी के पास जाओ तुम्हें इष्ट प्राप्ति होगी।" महात्मा को प्रणिपात कर राजा सौट आया।

दस महीने बाद रानी ने एक सुन्दर पुत्र को जन्म दिया।

सारा राज्य खुशी से फूला न समाया । सभी ने दीप जलाये । दस दिन तक सारे राज्य में उत्सव होता रहा । दसवें दिन राजा ने बड़े-बड़े पंडितों और साधु-सन्तों को आमन्त्रित किया और उनसे धिधु का भविष्य बतसाने की प्रार्थना की ।

उन्होंने वासक की ओर देखकर उसकी जन्मपत्री पढ़ने के बाद कहा, 'इस वासक का भविष्य बड़ा उज्ज्वल है । यह एक महान् राजा होगा । नाम इसका सुल्तान रखा जाये । किन्तु एक बात ऐसी है जिसे आप नाराज न हों तो हम कहें ।'

राजा ने खोर बिया कि वे निर्मय होकर जो भी कहना हो वह कहें । बुढ़ापे से झुकी कमर वाले एक विद्वान् ब्राह्मण ने राजा को आधीर्वाह वंते हुए कहा 'इसके अतिरिक्त कि तुम्हारे पुत्र के लिए १२ वर्ष का निर्वासन भिखा है, इसका भविष्य बड़ा उज्ज्वल है ।'

राजा चिन्ता में पड़ गया । उसने सोच बिचार के बाद यह निश्चय किया कि वह ध्यान रहेगा जिससे ऐसी स्थिति आये ही नहीं ।

सुल्तान बसन्त के फूल की भाँति बढ़ने व खिलने लगा । राजा उसे अत्यधिक चाहते थे । जब भी समय मिलता, वे महल तक धसे जाते, और सुल्तान के साथ खेलते रहते । मन्त्री का एक पुत्र भी उतनी ही उन्नत का था । मन्त्री भी सुल्तान को बहुत प्यार करता था । धामद मन्त्री को आशा थी कि जब सुल्तान राजा बनेगा तो उसका पुत्र मन्त्री-पद पायेगा । वह सुल्तान के लिए सकड़ी की छोटी-छोटी गाड़ियाँ लाता

जिन्हें सकड़ी के हिरन घसालते थे । उस तीन वर्ष के बालक को उनके साथ खेसने में बड़ा मजा आता ।

चार वर्ष का होते ही सुल्तान घुड़सवारी करने लगा । जब वह छह वर्ष का हुआ तो उसे पढ़ाने के लिए विद्वान् अध्यापक रखे गये । उसे इतिहास पढ़ाया गया । उसे बताया गया कि राजपूत कितना कठोर होता है और साथ ही अपने शत्रुओं के प्रति उदार भी । प्राचीन कास के राजाओं की कथाएँ भी उसे सुनायी गयीं कि किस तरह उन्होंने कठम्य-पासन और सम्मान की रक्षा के लिए अपना सबस्व त्याग दिया था ।

सुल्तान दस वर्ष का हुआ । दशहरे का दिन था—क्षत्रियों का विजय-पर्व । उसके पिता सुसज्जित सफ़ेद युद्धाश्व पर सवार थे जिसकी केसर हुआ के साथ मचल रही थी । अपने समरजित सूरमा योद्धाओं के साथ वे जुसूस के आगे-आगे चले । योद्धाओं के भौड़े कन्धे और सह्रासे जामे अपूर्व खोभा दे रहे थे ।

वे जंगल में जाकर वनसे भैंसों का शिकार करने लगे । चार भैंसों के साथ एक भारी बसवान् भैंसा वहाँ खड़ा दिखायी दिया । सुल्तान के पिता ने अपनी तलवार की नोक से उसे कोंच दिया और फिर उस भागते हुए भैसे का पीछा किया और उसके पास पहुँचकर एक ही वार में उसका सिर घब से भसग कर दिया । भीड़ आये बढ़ी और खुशी के नारे लगाने लगी । दूसरे भैसे अब बचकर भागने का रास्ता ढूँढ़ने लगे । उनमें भगदड़ मच गयी । उनका सिर काटने के लिए दूसरे योद्धा भागे बढ़े ।

सारा राज्य खुशी से फूसा न समाया। सभी ने वीप जसाये। दस दिन तक सारे राज्य में उत्सव होता रहा। दसवें दिन राजा ने बड़े-बड़े पंडितों और साधु-सन्तों को आमंत्रित किया और उनसे शिशु का भविष्य बतलाने की प्रार्थना की।

उन्होंने वासक की ओर देखकर उसकी जन्मपत्री पढ़ने के बाद कहा 'इस वासक का भविष्य बड़ा उज्ज्वल है। यह एक महान् राजा होगा। नाम इसका सुल्तान रखा जाये। किन्तु एक बात ऐसी है जिसे आप नाराज न हों तो, हम कहें।'।

राजा ने जोर दिया कि वे निर्मय होकर जो भी कहना हो वह कहें। बुढ़ापे से झुकी कमर वाले एक विद्वान् ब्राह्मण ने राजा को आशीर्वाद देते हुए कहा 'इसके अतिरिक्त कि तुम्हारे पुत्र के लिए १२ वर्ष का निर्वासन भिखा है, इसका भविष्य बड़ा उज्ज्वल है।'।

राजा चिन्ता में पड़ गया। उसने सोच-विचार के बाद यह निश्चय किया कि वह ध्यान रखेगा जिससे ऐसी स्थिति आये ही नहीं।

सुल्तान बसन्त के फूल की भाँति बढ़ने व खिलने लगा। राजा उसे अत्यधिक चाहते थे। जब भी समय मिलता, वे महल तक चले जाते और सुल्तान के साथ खेलते रहते। मन्त्री का एक पुत्र भी उतनी ही उम्र का था। मन्त्री भी सुल्तान को बहुत प्यार करता था। शायद मन्त्री को आशा थी कि जब सुल्तान राजा बनेगा तो उसका पुत्र मन्त्री-पद पायेगा। वह सुल्तान के लिए सकड़ी की छोटी-छोटी याकियाँ साँचा,

जिन्हें लकड़ी के हिरन चमाते थे । उस तीन बप के बालक को उनके साथ खसने में बड़ा मजा आता ।

चार बप का होते ही सुल्तान घुबसवारी करने लगा । अब वह छह बप का हुआ तो उसे पढ़ाने के लिए विद्वान् अध्यापक रखे गये । उसे इतिहास पढ़ाया गया । उसे बताया गया कि राजपूत कितना कठोर होता है, और साथ ही अपने शत्रुओं के प्रति उदार भी । प्राचीन कास के राजाओं की कथाएँ भी उसे सुनायी गयीं कि किस तरह उन्होंने कर्तव्य-यासन और सम्मान की रक्षा के लिए अपना सबस्व त्याग दिया था ।

सुल्तान बस बप का हुआ । दसहरे का दिन था—शपियों का विजय-पर्व । उसके पिता सुसज्जित सफ़ेद युद्धाश्व पर सवार थे जिसकी केसर हवा के साथ मचल रही थी । अपने समरजित सूरमा योद्धाओं के साथ वे जुलूस के आगे-आगे चले । योद्धाओं के चौड़े कन्धे और लहराते जामे अपूर्व शोभा दे रहे थे ।

वे जंगल में जाकर वनसे भैंसों का शिकार करने लगे । चार भैंसों के साथ एक भारी बसवान् भैंसा वहाँ खड़ा दिखायी दिया । सुल्तान के पिता ने अपनी तलवार की नोक से उसे कौन दिया और फिर उस भागत हुए भैसे का पीछा किया और उसके पास पहुँचकर एक ही बार में उसका सिर घड़ से अलग कर दिया । भीड़ आगे बढ़ी और खुशी के नारे मगाने लगी । दूसरे भैसे अब बचकर भागन का रास्ता ढूँढ़ने लगे । उनमें भगदड़ मच गयी । उनका सिर काटने के लिए दूसरे योद्धा आगे बढ़े ।

सुल्तान अपने टट्टू पर सड़ा था। सोने से मड़ी उसकी तमवार बगल में लटक रही थी। लोगो ने भैसे के एक पाड़े को भागते देखा तो कहा कि सुल्तान को उस पर हाथ आज माना चाहिए। सुल्तान ने अपने घोड़े को दौड़ाया और उस पर वार किया। एक वार, दो वार तीन वार। छोटी-सी तमवार धारवासी तो थी मगर पाड़े के बमड़े को वह सिर्फ छील सकी। वह घायल होकर डिङ्कता हुआ भागा। बगल से एक योद्धा निकला, जो सदा सुल्तान के साथ रहता था। उसने पाड़े की गर्दन काटकर उसे वहीं खत्म कर दिया। सुल्तान बड़ा दुखी हुआ और उस रात को सो नहीं सका। उसके पिता उसके पसंग के पास से गुजरे और उसका सिर थपथपा दिया। दूसरे दिन दो योद्धा उसे तमवार चलाने की शिक्षा देने के लिए नियुक्त कर दिये गये।

सुल्तान निधानेबाजी का भी खासा शौकीन था। उसने तरह-तरह के घनूप-बाण इकट्ठे कर रखे थे और उनसे निधाना मगाया करता था। कुछ मन्त्रियों के लड़के भी इस काम में उसके साथी बने। उनमें से चन्द्रसिंह नामक लड़का सुल्तान को विशेष प्रिय था।

एक दिन वह अपने महल की छत से एक घाब पर निधाना मगा रहा था कि चन्द्रसिंह ने उसे धौंका दिया। अचानक बाधा पड़ने से उसका हाथ हिमा और तीर आकाश में सीधे न जाकर घाब को लगने के बजाय नीचे की ओर राजपुरोहित की पुत्री के सग गया। वह सड़क से कहीं जा रही थी। तीर उसके बायें हाथ को सुरक्षता हुआ दूर जा गिरा।

अपानक उसने देखा कि महल की छत पर कुछ सनिक आ पहुँचे और उन्होंने सुल्तान से अनुप-वाण-सहित राजा के पास चलने को कहा। राजपुरोहित भी वहीं पर थे। राजा मनपाल भाग्य की इस विधिग्रथा से अवाक् रह गये जिसने उनके पुत्र को ही अपराधी बना दिया। राजपुरोहित भी सुस्त हो गया। उसने कहा, 'महाराज, मैं सन्तुष्ट हूँ कि अपराधी को पर्याप्त दण्ड मिल चुका है।

मगर राजा ने कहा, 'पर मैंने आपको वचन दिया था कि आपकी पुत्री को ब्राह्मण करने वाला चाहे जो भी हो, उस पर दण्ड दिया जायगा।'

मन्त्रियो ने दखल देना चाहा। सुल्तान, सभी का प्रिय था। उन्होंने विरोध किया, 'अभी यह बच्चा ही है इसके साथ ऐसा करना अन्याय होगा। उसने जान-बूझकर तो ऐसा किया नहीं।' राजा वषण-वद्व धे, इन दलीलों के सामन झुकना उनके लिए असम्भव था।

सुल्तान धागे बढ़कर बोला, 'राजपूत सीना ठानकर सकट का सामना करता है। और राजपूताँ में वच्चा क्या? उसे वषण स ही संयम सीखना चाहिए। मैं दण्ड भोगने को तैयार हूँ।'

राजकुमार सुल्तान को १२ वर्षों के लिए निर्वासित कर दिया गया। उसकी आयु तब १८ वर्ष की थी मगर वह सगता था अठारह का। उस कासी पोशाक और कासा घोड़ा दिया गया। उसी शाम का घोड़े पर चढ़ वह चल पड़ा।

सुल्तान अपने टट्टू पर सड़ा था। सोने से मढ़ी उसकी तमवार दगल में सटक रही थी। सोगों ने भैसे के एक पाड़े को भागसे देखा, तो कहा कि सुल्तान को उस पर हाथ आज माना चाहिए। सुल्तान ने अपने घोड़े को दौड़ाया और उस पर चार किया। एक चार, दो चार, तीस चार। छोटी सी तमवार धारबासी तो थी मगर पाड़े के चमड़े को वह सिर्फ़ छीस सकी। वह भायल होकर डिङकता हुआ भागा। दगल से एक योद्धा निकला, जो सदा सुल्तान के साथ रहता था। उसने पाड़े की गर्दन फाटकर उसे वहीं खत्म कर दिया। सुल्तान बड़ा बुझी हुआ और उस रात को सो नहीं सका। उसके पिता उसके पसंग के पास सं गुजरे और उसका सिर बपयपा दिया। दूसरे दिन दो योद्धा उसे तमवार चलाने की शिक्षा देने के लिए नियुक्त कर दिये गये।

सुल्तान निधानेबाजी का भी खासा शौकीन था। उसने सरह-सरह के घनुप-बाप इफ्ठे कर रखे थे और उनसे निधाना सगाया करता था। कुछ मन्त्रियों के लड़के भी इस काम में उसके साथी बने। उनमें से बन्द्रसिंह नामक लड़का सुल्तान को विशेष प्रिय था।

एक दिन वह अपने महल की छत सं एक बाज पर निधाना सगा रहा था कि बन्द्रसिंह ने उसे भौका दिया। अचानक बाघा पड़ने से उसका हाथ हिंसा और तीर आकाश में सीधे न जाकर बाज को मगने के बजाय नीचे की ओर राजपुरोहित की पुत्री के सम गया। वह सड़क से कहीं जा रही थी। तीर उसके बायें हाथ को खुरचता हुआ दूर जा गिरा।

अन्धानक उसने देखा कि महल की छत पर कुछ सनिक आ पहुँचे और उन्होंने सुल्तान से धनुष-बाण-सहित राजा के पास चलने को कहा। राजपुरोहित भी वही पर थे। राजा मैनपाल भाग्य को इस विचित्रता से अवाक रह गये जिसने उनके पुत्र को ही अपराधी बना दिया। राजपुरोहित भी सुस्त हो गया। उसने कहा, महाराज, मैं सन्तुष्ट हूँ कि अपराधी को पर्याप्त दण्ड मिल चुका है।”

मगर राजा ने कहा “पर मैंने आपको वचन दिया था कि आपकी पुत्री को आहत करने वाला चाहे जो भी हो, उस वरुण दण्ड दिया जायगा।”

मन्त्रियों ने बखल देना चाहा। सुल्तान सभी का प्रिय था। उन्होंने विरोध किया, “अभी यह बच्चा ही है इसके साथ ऐसा करना अन्याय होगा। उसने जान-बूझकर तो ऐसा किया नहीं। राजा बचन-बद्ध थे इन दलीलों के सामने झुकना उनके लिए असम्भव था।

सुल्तान आगे बढ़कर घोसा, ‘राजपूत सीना ठानकर सकट का सामना करता है। और, राजपूतों में बच्चा क्या? उस बचपन से ही सयम सीखना चाहिए। मैं दण्ड भोगने को तैयार हूँ।”

राजकुमार सुल्तान को १२ वर्षों के लिए निर्वासित कर दिया गया। उसकी आयु तब १६ वर्ष की थी, मगर वह सगता था अठारह का। उस काली पोशाक और कासा घोड़ा दिया गया। उसी दान को घोड़े पर चढ़ वह चस पड़ा।

६ ::

वह षोड़ को कभी दुसकी तो कभी सरपट पाल से दौड़ाता रहा। अचानक उसने धर की दहाड़ सुना। षोड़ा हिनहिनाया और पिछसे दोनों पाँवों पर लड़ा हो गया। सुस्तान ने अपनी तसबार निकाल ली और तयार हो गया। इस पहली मुठभेड़ के जोर में उसकी आँखें धमक उठीं। मगर धर दहाड़कर भाग गया।

वह घससा रहा। पेड़ों के बीच से मन्व-मन्व वायु बह रही थी। कभी-कभी उसके चेहरे पर चाँद की किरणें पड़ जातीं। अंगस घना होता जा रहा था। उसके चारों ओर पेड़ों के तने घ और सम्बी अगली सताएँ साँपों की तरह उन पर लिपटी हुई थीं। हरीतिमा का पहला अन्दोवा बहुत ऊपर नहीं था। मगर उसके बाद देखाकार वृक्षों का दूसरा अन्दोवा था, जो छोटे वृक्षों के बहुत ऊपर था। उस घने अंगस में एक छाया उसे मार्ग दिखसाती मामूम पड़ी। वह भय और आश्चय से अकिस हो उठा।

उसे धुंधली-सी याद थी कि महात्मा गोरखनाथ कहीं मिलेगा। वह अपने जन्म की कहानी भी जानता था। चौदह वर्ष की उम्र को देखते हुए वह काफी चतुर और सबल था। उसने गोरखनाथ जी को स्मरण किया, और उसे समा जैसे एकाएक उस स्थान पर कोई शक्ति उसकी रक्षा के लिए आ पहुँची।

जमातार दो दिन और दो रातें अतकर वह ऐसी जगह जा पहुँचा, जहाँ से एक पहाड़ी दिखाई दे रही थी। थोड़ा

और आगे बढ़ने पर उसने देखा कि पहाड़ी की चोटी पर आग की लपटें उठ रही हैं। वही गोरखनाथजी का स्थान था।

महात्मा समाधि लगाये हुए थे। अग्नि निरन्तर जल रही थी। उनका एक शिष्य आग में लकड़ियाँ डाल रहा था। सुल्तान जाकर योगिराज की सेवा में जुट गया। वे उसे आँसू सोसकर देखें और पहचान इसके लिए कई दिन तक उसे रुकना पड़ा।

सुल्तान ने कहा, "मैं आपका वरदान से जन्मा था। कहने की आवश्यकता नहीं आप ही सबज्ञ हैं, आप भलीभाँति जानते हैं कि मुझे किस परिस्थिति में अपने पिता का नगर तजना पड़ा। अब मैं आपकी सेवा में हूँ। कृपया मुझे मार्ग दिखा लायें। मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।"

"दो वर्ष तक तुम्हें मेरे साथ रहकर यहाँ धनुर्विद्या और तलवार चलाना सीखना चाहिए। तुम्हें शास्त्रों का ज्ञान भी होना चाहिए, ताकि तुम एक सुयोग्य राजा बन सको। दो वर्ष बाद मैं तुम्हें अन्य आदेश दूँगा।"

सुल्तान गोरखनाथजी के साथ रहने लगा। वे उसे निरन्तर शिक्षा देने लगे। दो वर्षों में ही वह मुख्यतः में ऐसा प्रवीण हो गया कि इतना ही सीखने में साधारण मनुष्य को दस वर्ष लग जाते। उसने नौतिशास्त्र तथा अन्य विषयों का भी ज्ञान प्राप्त किया जो प्रत्येक राजा के लिए जरूरी था।

एक दिन सुबह गोरखनाथजी ने उसे बुलाकर कहा मेरे बेटे, अब तुम्हारी शिक्षा समाप्त हुई, और तुम सोलह वर्ष के हो गये। तुम जहाँ भी रहो एक योग्य शासक की तरह

रहो, पर अभी तुम्हें निर्वासित के वस वय और विसान हैं । मेरी पुत्र कामनाएँ सदा तुम्हारे साथ हैं । तुम्हें पहले इदरकोट जाना चाहिए और आधे दिन शिक्षा माँगनी चाहिए । इससे तुम में विनम्रता आयेगी । इसके बिना तुम्हारी शिक्षा अधूरी होगी । जब भी कोई सकट आ पड़े तब मुझे याद करना । मैं तुम्हारी मदद के लिए आ जाऊँगा ।” इन शब्दों के साथ महात्मा ने सुल्तान को विदा किया । वह घाड़े पर चढ़कर इदरकाट की ओर चल पड़ा ।

नगर-द्वार पर उसने एक राजपूत को देखा जो उष्ण पत्र पाने के योग्य था, मगर था गरीब, और मुसीबत का मारा । सुल्तान उदार था, उसने अपना थोड़ा और बाकी वस्तुएँ राजपूत को उपहारस्वरूप दे दीं । उसने एक मिहाना-यात्र मिया और नगर की ओर चल पड़ा जिससे अपने गुरु द्वारा निर्दिष्ट तप को पूरा कर सके ।

वह घर घर मिहाना माँगने गया पर सभी जबह उसे इन्कार मिला । अन्त में वह एक जीहरी की दुकान पर पहुँचा । जीहरी बड़ा चतुर था । सुल्तान के मुख-मण्डल में कुछ ऐसा था जिसने जीहरी को आकृष्ट कर लिया । दो मुट्ठी अनाज लाकर उसने उसका मिहाना-यात्र में दान दिया ।

तप का आधा दिन पूरा हो गया । सुल्तान को जो भी थोड़ा-बहुत मिहाना उस लेकर वह भाराम से धीरे-धीरे चला जा रहा था । उही समय वहाँ का राजा कामध्वज राज नगर में घोड़े पर जा रहा था । राजा दूसरी ओर दल रहा था तो दुलफी पास से जाने वाले उसका घोड़ा ने सुल्तान को पकड़ा दे

दिया। जो थोड़ा-सा अनाज सुल्तान ने इकट्ठा किया था वह जमीन पर बिखर गया। बिना कुछ कह सुल्तान उठ खड़ा हुआ।

अन्धानक धक्का मगने से राजा ने इधर दृष्टि घुमाई और जब उसने किसी को गिरा हुआ देखा तो वह मदद के लिए उतर पड़ा। उसने सुल्तान की आँखों में एक चमक देखी और वह उसकी ओर इतना आकृष्ट हुआ कि पूछ बठा 'नवयुवक तुम कौन हो ? कहाँ से आ रहे हो ?

'श्रीमान्, आप यही मान लें कि आकाश न मुझे फेंक दिया है और भरती ने अपनी गोद में उठा लिया है, बाकी बातें भ्रम आयें।

किसी परोक्ष शक्ति ने राजा का मागदर्शन किया। उसने सुल्तान को गले लगाते हुए कहा, 'युवक, तुम मेरे पुत्र के समान हो। तुम मेरे सड़के फूलकुँवर के योग्य साथी बन सकोगे। मैं ईश्वर को साक्षी करके बचन दता हूँ कि मैं तुम्हें अपन पुत्र से कम नहीं समझूँगा।

राजा सुल्तान को अपने महल में रानी के पास ले गया और सुल्तान का परिचय कराया।

७

सुल्तान जानता था कि महाराज कामध्वज उससे बड़े प्रसन्न हैं। निहासदे से सुल्तान का विवाह होने के पहले तो राजकुमार फूलकुँवर ने भी सब तरह से सलूक निभाया।

निहासवे मगर मुस्ताफ निहासवे को कैसे मुसाये? उसका मोहक मुखड़ा जिससे बसोबता नसकती थी उसके मन में घूम-घूम आता। उसकी आँखों में वेधन करने की उज्वल की शक्ति थी।

इदरकोट महल के जीवन में मुस्ताफ मनमोजी घुमककड़ बन गया था। सुबह से शाम तक वह अपना समय बुड़सवारी माला घसाने और चिकार में बिताता। राजदरवारी जलन की दाबसे उड़ाते और नाश देसते। घने काले घासों वाली सुन्दरियाँ अँगूठियाँ पहने हुए सुगन्धी में तर खूब सजी-धजी अतिथियों को मखिरापान करातीं।

राजघराने से सम्बन्धित हरेक ब्यक्ति को सगता कि इस तरह का वासनापूण जीवन ही उनका सक्ष्य है। किन्तु धीरे धीरे मुस्ताफ को यह विमानी जीवन बोझिल लगने लगा। वह उन मोगो से ऊच गया। दूसरी ओर, उसकी शधि पुस्तकों कलाकृतियों और अष्टे घोड़ों की ओर बढ़ने लगी। पर उसमें उस घराने के लिए एक राजपूत की परम्परागत सम्मान और स्वामि भक्ति की भावना थी जिसके कारण वह सुसकर इनका विरोध न कर सका।

एक दिन खबर आयी कि कामध्वज राज के किसी सूबेदार ने विद्रोह कर दिया है। उसने धार्मिक कर देने से इनकार कर दिया है, और पड़ोस के नवाब दाऊद खाँ से मदद लेने की सोच रहा है। इसलिये उस पर चढ़ाई कर दी गयी। मुस्ताफ और फूसकूँवर दोनों सेना के साथ गये। सूबेदार बापसिंह तीन हजार सैनिका को साथ लेकर

उनका सामना करने आया। सुल्तान ने आक्रमण कर बाघसिंह को गीब के पिछवाड़े तक मगा दिया। उसके आगे सनिक मारे गये, या घायल हुए और उसे पकड़ लिया गया।

विजैता के लिए यह आम बात थी कि वह सूटपाट करे और पराजित सत्रु के राज्य से युवतियाँ भी पकड़ मंगाय। सुल्तान ने अपने पुने हुए सैनिकों के साथ धाग आकर सैनिकों को सूटमार और बन्तात्कार करने से रोका। फूसकुंवर ने सुल्तान के सेवर समझने के लिए उसकी ओर देखा। सुल्तान आज हर कदम के लिए संभार था। अन्त में फूलकुंवर ने अपने कन्धे हिसाकर कहा, 'ठीक है, जसा तुम चाहो।' उसके स्वर में क्षमा-याचना का भाव न था।

इस चढ़ाई के बाद फिर वही पुरानी ज़िन्दगी बिठाने लगे। फूसकुंवर एक मसनद के सहारे झेटा हुआ था। नृत्य खास तौर पर रगीन था, क्योंकि नसकी दक्षिण से आयी थी और वह उभर की देव-दासियों की तरह भडकीली पोशाक में थी। सुल्तान विचारों में खोया हुआ पास में बठा था। वह जानता था कि फूसकुंवर अपने दोस्तों के साथ बहुत अनुदार था और डींग हाँका करता था। यह बड़ी छोली से अपनी भूख खराब और समोग की पाशविक वासनाओं से पूरी करने में सिप्ट रहता था। सुल्तान को योड़ी निराशा भी मालूम पड़ने लगी थी, क्योंकि अब एसी सगत में रहना उसके लिए मुश्किल हो रहा था।

फूसकुंवर ने कहा, "तो तुम समझत हो कि तुम्हीं पुरान सद्गुणों की जीती-जागती मूर्ति हो।"

‘मैं ऐसा कुछ नहीं कह रहा हूँ। मैं तो केवल ऐसे मार्ग पर चलने का यत्न करता हूँ जो मेरे विचार से जनता को कुछ कष्टों से मुक्त कर सके।’

‘मैं नहीं समझता कि पराजित क्षत्रु को दण्ड देना समत है क्योंकि यह कहते-कहते फूसकुंवर सुल्तान की ओर देखता हुआ बीच में रुक गया। उसने चेहरा बिचकाकर एक प्यासा और डान सिया। फिर वह सराव के नक्ष में मसनद पर मुड़क गया।

सुल्तान ने घृणा की दृष्टि से देखा मगर दूसरे ही क्षण उसके मुख पर कृतज्ञता का भाव उभर आया। उसे कामध्वज राव की याद आ गयी। उसने अपनी रँगसिया बटकाइ और जैभाई सेता हुआ फूसकुंवर उसके दोस्ता घरान और उन औरतों को छोड़कर बाहर आ गया। हास्यकि फूसकुंवर ऊपर से ही सुल्तान से मित्रता विकसता रहा मगर भीतर से उसके प्रति उदासीन हो गया।

उस दिन कुछ बारिध हो रही थी। फूसकुंवर और सुल्तान ने शिकार पर जाने का तय किया। अच्छे-अच्छे भोड़े लेकर वे जंगल में गये। फूसकुंवर ने एक हिरन बेसकर उस पर निशाना साधा। पर उसके मारने के पहले ही हिरन भाम निकसा। दोनों भाई उसके पीछे-पीछे भोड़े दौड़ाने लगे। तीसरे पहर तक वे उसका पीछा करते रहे। सुल्तान बड़ा भन्ना घुड़सवार था इसलिए फूसकुंवर पीछे रह गया। हिरन शहर की ओर भागने लगा। नगर के निकट राजा की पुत्री का एक भाग था। कसामड़ के राजा अपनी पुत्री को बहुत

प्यार करते थे और उसके लिए उन्होंने एक बड़ा सुन्दर बाग लगवाया था ।

उस समय राजा की बेटी निहासदे अपनी सखियों के साथ बाग में टहल रही थी । द्वार पर उसने अपने जूते छोड़ रखे थे । हिरन बाग के अन्दर बूब पड़ा और सुल्तान ने उसका पीछा किया । बाग में घेरकर उसने हिरन को गिरा दिया ।

पेड़ों के बीचो-बीच चारों ओर हरे घास के मखमली सम-कोम बने थे । हौज और फव्वारों के कारण वहाँ बूब धीतसता थी । इतनी दूर चलने के कारण वह काफ़ी थक गया था, और उसे सोटने की खास बल्बी भी नहीं थी ।

फूलकुवर उसी समय बाग के द्वार पर पहुँचा और वहाँ पड़े जूतों की जोड़ी उसे इतनी अच्छी लगी कि उन्हें लेकर वह श्वरकोट सोट आया ।

इधर-उधर घूमती हुई निहासदे वहाँ पहुँची जहाँ सुल्तान घोड़े के पीछे हिरन को बाँध रखा था । वह ऐसे सुन्दर तेजस्वी पुरुष को देखकर चकित रह गयी । उन्नत भास और सीधी नाक । वह सम्ना था, कन्धे उसके चौड़े थे और भुजाएँ बलिष्ठ । यह जानने के लिए कि वह कौन है, निहासदे चुपचाप एक पेड़ के पीछे ठहर गई ।

आधा से आगन्तुक को वह देख रही थी कि उसके बारे में कुछ और जान पाय । कुसूहल उसे बाहर बौध रहा था । गुसाब की झाड़ियों के पास एक क्षण वह ठिठकी । गुसाब की झाड़ी से एक साम-नीले रंगों से चमकती तितली उड़ी और उरा हवा में मडरा कर दूसरे फूल पर जा बठी । निहासदे फिर सामन निकल आयी ।

॥ ८ ॥

कई दिनों तक लगातार बसने के बाद सुल्तान नरवल गढ़ नगर के निकट पहुँचा। एक कुएँ पर कुछ औरतें पानी खींच रही थीं। वह नाँद पर थोड़े को पानी पिमाने लगा।

उन औरतों में एक सब पर हावी थी। मस्मस की ओर से आती हुई हवा के सूखे झोंकों से उसके बूढ़ से दो-एक सट सुन गयीं, और चिढ़कर उसने शटका देकर बान्सी को पीछे कर दिया। उसके चेहरे पर क्रोध का भाव झलकने लगा, मानो उसके बालों ने भी उसे छेड़ दिया हो। तभी उसने, लम्बे, छरहरे पुड़सवार को निश्चिन्तता से वहाँ लड़े देखा।

“समा करना, वहन ! क्या यह नरबसगढ़ है ?” उसने पूछा।

“हाँ।

यहाँ का राजा कौन है ?”

“डालकूर्बर, हासकि असली घासक सो महारानी मास हैं। अपना काम करते हुए उसमे गरदन घुमाकर देखा कि वह व्यक्ति अपना घोड़ा लेकर दहूर की ओर जा रहा है।

काफ़ी बसने के कारण घोड़ा और सवार दोनों थके हुए थे। सुल्तान ऐसी जगह की तलाश में था जहाँ कुछ बेर धाराम कर सके।

बड़ी उमस का दिन था वह। जो थोड़े से पेड़ थे, वे भी स्थिर लड़े थे। उनकी नीचे सटकती पत्तियाँ धूम से भरी हुई थीं। पोलरों से कीचड़ की मध मा रही थी। मैदान की पास जसकर भूरी हो गयी थी। कुछ दूर भाग उसने देखा कि वहाँ

एक खूबसूरत बाग है। वह उसके अन्दर गया। उसे वहाँ बहुत सुहावनी ठण्डक मानूम दी। थोड़े को एक तरफ़ बाँध वह एक पेड़ की छाँह में लेट गया। पिछले कई दिनों से निहासदे की चिन्ता के मारे वह ख़रा भी आँसों बन्द न कर सका था। वहाँ के शान्त और दीप्त वातावरण से उसकी व्याकुलता कुछ कम हुई, और वह तुरन्त गहरी नींद में सो गया।

वह बाग़ शहर के एक बड़े जौहरी की बेटी का था। कुछ देर बाद वह अपनी सखियों के साथ वहाँ आयी। धीरे धीरे टहलती वह उस पेड़ के निकट पहुँची, जहाँ सुल्तान भावर ओढ़कर आराम से सो रहा था।

सबकी ने उसके पास पहुँचकर उसकी जादर खींच ली और उससे पढ़ी "ए घुड़सवार हिम्मत कैसे हुई तुम्हारी कि मेरे बाग़ में आ धुसे?"

जैसे ही भावर झटके से खींची गयी सुल्तान धौंककर उठ बैठा। उसने सबकी को अपने पास खड़ी देखा। उसके काले केशों के झुड़े में जवाहरात दमक रहे थे। कपड़े उसमें बेपरवाही से अपने ऊपर डाल-से रखे थे। सिर्फ़ एक घाँघरा और चोली, जिसके फ़ोते पीठ पर बँधे थे। पीठ एकदम नगी थी। वह नंगे पाँव थी। एक विदोष प्रकार की स्वच्छन्दता थी उसके चेहरे पर। दौड़ते समय उसने दुपट्टा एक तरफ़ फेंक दिया था। माता-पिता की उस पर कोई रोक-टोक न थी, क्योंकि वे उसे बच्ची ही समझते थे।

सारा स्थान मरुवा की गंध से गमक रहा था। जब जौहरी की बेटी ने सुल्तान के सुन्दर मुखड़े को देखा, तो उसकी

तेज आँसों में सुधी की एक चमक आ गयी और उसके कठोर मुख पर मुस्कान फैल गयी। सुस्तान बहुत ही स्पर्शान था और उसकी गठन बढ़ी बाँकी थी। उसके मुँह पर कुछ मुहासे थे, मगर पौरुष झलक रहा था। उसे देखकर वह सड़की भी सोचती ही रह गयी, वह तो उसे चाहती है सचमुच चाहती है। तनिक भी सज्जा न दिखलाते हुए उसने कहा, 'आराम करो, सगता है जैसे बहुत बके-मादे हो।'

सुस्तान ने कहा, 'आपके बाप में बिना आज्ञा आने का मुझे बहुत अफसोस है। मैं जमा जाता हूँ।' और वह उठ खड़ा हुआ।

सड़की ने विस्मित नेत्रों से उसे देखा और हिचकिचात हुए कहा 'डरो मत, आराम से बैठ जाओ।'

'मैं डरता नहीं हूँ। मैंने तो आपको असुविधा देने के लिए क्षमा माँगी।' सुस्तान हँसा और उससे कुछ दूर हटकर बैठ गया।

मुस्तान की हँसी सड़की का खूब भायी। वह धीरे-धीरे त्रिस्तुस निकट आ गयी। बिबुक हिंसी, और वह मुस्करायी, फिर पास आकर बगल में बैठ गयी। एकाएक उसने अपने हाथ फैलाये और उसकी उँगलियों को छूने लगी।

सुस्तान ने सोचा थायद वह मित्रता का स्पष्ट हो आ सम्भव है इससे कुछ अधिक हा जो उसकी भीतरी भावना को भी प्रकट करता हो। सड़की ने धीमे से हाँस ली। उसने सुस्तान की ओर देखा। उसे आश्चर्य हो रहा था कि उसके पास होकर भी कोई इतना उदासीन रह सकता है।

“आपको अपनी सखियों के साथ जाना चाहिए ।

अपना मुँह सुल्तान के मुँह के पास करके वह बोली, यहाँ बड़ा अच्छा मगता है । फिर उसकी आँसों में भाँकते ए उसने कहा, क्यों ? कहो तो दूसरी ओर चलें ।

सुल्तान ने अपना हाथ खींच लिया । उसके नयन-नभस अच्छे थे मगर वह अपनी शोखी में पूरी पागल मासूम डूबी थी ।

वह अपना सिर सुल्तान के कन्धे पर रख कुछ फुसफुसायी । सुल्तान कुछ समझ न सका । अपनी भरी सुकुमार लचीली हँसे वह सुल्तान को वध में करने की कोशिश में लग गयी । सुल्तान उठ खड़ा हुआ और जोन मेकर घोड़े के पास आ गया ।

यदि कोई स्त्री किसी पुरुष को वध में करना चाहती हो, तो बचाव इसी में है कि पुरुष वहाँ से भाग जाय, नहीं तो मुसीबत निश्चित ही है । सड़की को सुल्तान बहुत रुसा जगली थीर सनकी मगा । सड़की के मयन कजरारे थे, पर अब उसकी सफेद पुतलियाँ लाल हो गयीं । वह जोर-जोर से साँस खने लगी, मानो फुफकार रही हो । उसके मधुने फूल गये थे ।

वह यह सोच भी नहीं सकती थी, कि कोई उस जैसी सुन्दरी का इस तरह विरस्कार कर सकता है । क्रोध से उसका गला सूँध गया । उसकी आँसुं बाहर निकल आयीं । यही कोशिश से फुफकारते हुए उसने कहा, ‘अगर इस अपमान का बदला मैंने न लिया, तो अपने बाप की बेटी नहीं ।’ और वह तेजी से भाग गयी ।

:: ६

सुल्तान बसने ही वाला था कि कुछ सैनिकों ने उसे घेर लिया। सुल्तान काफ़ी लम्बा-तगबा था और उसका साया भी करीब पाँच फीट लम्बा था। घोड़े ही चारों में उसने सब को घायल कर दिया।

सैनिक उसे इस बहादुरी से मड़ते देखकर डग रह गये। उन्हें इस बात का विश्वास न हुआ कि ऐसा आदमी किसी लड़की को छेड़ सकता है। राजा तक यह बात पहुँचायी गयी। ऐसे बहादुर और कुशल योद्धा से मिलने राजा दोसर्कुवर स्वयं बाग में था गये।

राजा को देख सहर के तमाशबीन भी इकट्ठे हो गये और बाग के सामने काफ़ी भीड़ लग गयी। राजा भीतर गये। आश्चर्यान्वित सुल्तान को देखते ही राजा को लया मानो वह मूर्तिमान धीर्य को देख रहा है। हाथ उठाकर उसने सुल्तान का जयनाद किया। सुल्तान की आँसों से स्वच्छता, दृढ़ संकल्प और बीरता झलक रही थी। राजा ने अपने मन्त्री से कहा 'ऐसा व्यक्ति ऐसा अपराध नहीं कर सकता।

सुल्तान ने झुककर राजा को प्रणाम किया।

भीड़ में भी समझ लिया कि यह योद्धा तो कोई पराक्रमी राजा है मगड़े की जड़ वह लड़की ही है।

राजा अपने घोड़े से उतर पड़ा और उसका हाथ पकड़ते हुए बोला 'माई अजनबी! तुम कहीं से आ रहे हो? तुम्हारे राज्य का नाम क्या है? तुम कहीं जा रहे हो?'

सुल्तान ने हाथ जोड़कर कहा, 'मैं बहुत दूर से आ रहा

हैं। यकने के कारण घोड़े से उतरकर यहाँ आराम कर रहा था। नाग्य जहाँ भी ले जाये वहीं चला जाऊँगा। मुझे किसी सास जगह नहीं जाना है।'

सुल्तान की बातों में जादू था। सभी उसकी ओर खिंचते चले आये।

राजा ने कहा 'मैं जानता था कि तुम्हारा कोई अपराध न होगा क्योंकि जौहरी की लड़की जब मेरे दरबार में घबरायी हुई आयी थी, तभी उसकी आवाज से यह पता नहीं चलता था कि उसका सबमुच अपमान हुआ है। उसने मुझसे कहा महाराज मैं नहीं जानती थी कि आपके राज्य में भी ऐसी घटना घट सकती है। एक बुद्धसवार खबरदस्ती मेरे बाग में घुस आया और उसने मुझसे छेड़छाड़ की।

"मैंने उससे कहा 'घबराओ नहीं। मैं उस तुष्ट को देखता हूँ जो आत्मवध करने पर उतारू है।' लेकिन अब तो मुझे पूरा विश्वास हो गया कि तुम वैसे व्यक्ति नहीं हो जिस पर ऐसा अभियोग लगाया जा सके।"

॥ १० ॥

रानी मारू की पालकी नी बाग में आ पहुँची। उसने कहलवाया कि वह भी इस खुशो में शामिल होने आ गयी है।

रानी के लिए असग से एक तम्बू याड़ा गया। सुल्तान को लेकर राजा उसके पास पहुँचे। रानी ने देखा, सुल्तान की

भुजाएँ लम्बी हैं, उनमें इस्पात की तरह घक्तिवाली पकड़ है मगर शायद आसिगन करने में रुई से भी मुसायम हैं। वह खूब लम्बा था। उसकी मुस-मुद्रा से दृढ़ सकल्प टपकता था। उसे देखकर रानी के धरीर में उमत्त हर्ष से कम्पन की लहर बौह गयी। उसने चाहा कि सुल्तान उसे अपनी बाँहों में कस स और अमकुस वासना से उसके मुस को मसस बाले। उस ब्यक्ति के सौन्दय से वह मोहित और स्तम्भ हो गयी।

रानी ने राजा की ओर देखकर कहा, 'मैंने वासी से पूछा था कि आखिर वह सुल्तान कौन है जिसने सबको मुग्ध कर दिया है।

'दासी ने कहा मैंने उसे नहीं देखा लेकिन सुना है वह इतना विस्मयकारी ब्यक्ति है कि उसे देखते ही लोगों का मय दूर हो जाता है और वे तिश्चिन्त हो आते हैं। इसलिए मैं आपके पास आ गयी।'

स्त्री के अस्तर को समझना आसान नहीं, मगर सुल्तान ने इतना ठो तड़ ही लिया कि रानी के मन में इतबस है। जब एक सडकी ने इतना सकट सड़ा कर दिया सब इस स्त्री के आ जाने से न जाने क्या हो जाय ? सुल्तान ने राजा से निबेदन किया 'मैं आपका बड़ा आभारी हूँ कि आपने मुझे इतना सम्मान दिया लेकिन मैं अधिक देर तक यहाँ नहीं ठहर सकता। अब मुझे जाना ही चाहिए।

राजा ने कहा "अब रात हो गयी है। मेरी राय है कि आप प्रात कास तक यहीं रुक जायें।

सुल्तान ने क्षमा मांगते हुए कहा मेरे लिए कोई फर्क

नहीं पढ़ता कि यह दिन है या रात।' यह घोड़े पर बड़ा और अपनी राह पकड़ी। जब वह शहर के दूसरे पार मुड़र रहा था, तो ऐसी जगह पहुँचा जहाँ एक गढ़ी थी, जिसके चारों ओर बुजियाँ थीं। लोग इसे समदबुज कहते थे। इस गढ़ी का क्रिसेदार था पनिया पठान। पठान बाहर निकली कानिस के ऊपर बठा चारों तरफ़ की रज़वासी कर रहा था। सुल्तान ने उससे पूछा, 'क्या आप मोपान मीस का रास्ता बता सकते?'

पठान ने बिस्लाकर जबाब दिया यह सफ़र का वस्तु नहीं है, रास्ता खतरनाक है। रास्त में एक भयानक जंगल पड़ता है, जिसकी चौड़ाई २५० मील है, उसमें घेर और दूसरे जगहों जानघर बहुतायत से हैं।'

मैं जगली जानघरों से नहीं डरता। मुझे इस समय यहाँ कोई काम नहीं है, फिर समय लेकर क्या कहूँगा।'

पठान अपनी जिद पर अड़ा रहा। नीचे आकर उत्तन किसी तरह सुल्तान को ठहरने के लिए मना लिया। पठान ने पहले उसके भोजन का प्रबन्ध किया और चूँकि उसे रखवासी करनी थी इसलिए सुल्तान भी उसके साथ वहीं बैठ गया। फिर वे इधर-उधर की बातें करने लगे।

नगर के इस नाग को रक्षा के लिए पठान के पास पाँच सौ सैनिक थे। उत्तन सुल्तान का गढ़ी में घटने वाला बहुत-सा क्रिसे भी सुनाय। जब आधी रात हो गयी तो पठान ने कहा, 'सुल्तान, चूँकि तुम्हें लम्बे सफ़र पर जाना है इसलिए अब सो जाओ।'

'बाँधो स तो अब नौद गावब हा चुकी। अगर तुम

मुझे जगस के रास्ते नहीं जाने देते तो घहर ही देखने दो । इस वक्त मैं लड़कियों के चक्कर म नहीं पड़ूंगा ।” मुस्तान ने कहा ।

-- ११

नरवसगढ़ में एक जिन न बड़ा उपद्रव मचा रसा था । पुरु में बह बीसियों आदमियों को खाता और डोरों को मार देता । वाद में राजा ने यह तय कर दिया कि मित्य एक आदमी १२ बीसस घराब सेकर जिन के पास जाया करेगा ।

मुस्तान घोड़े पर घहर में घूम रहा था । एक गाड़ी उसके पास से गुजरी । यह घामद देर से लौट रही थी । और सब जगह धाम्ति थी । सिर्फ एक खुसी लिङ्की का दरवाजा धीमी हवा से डोल रहा था या फनी-फनी कोई कुता भौंक जाता ।

जय बह रत्ना जीहरी के मकान के पास से गुजरा तो उसने किसी को रोठे हुए मुना । मुस्तान ने घोड़ा रोक दिया, और दरवाजे का खटखटाया । काफ़ी दस्तकें देने के बाद एक नौकर ने दरवाजा सोमा ।

“क्या बात है ? क्या मैं कोई मदद कर सफ़ता हूँ ? कौन रो रहा है ?”

‘श्रीमान्, यह हमारे मामिक की महन रो रही है । आज जिन के पास हमारे मामिक के जाने की घारी है । इस घर में बही एक मद है । रोने का कारण यही है ।”

सुल्तान न नौकर से कहा, मैं उस बहन से मिसना चाहूँगा।”

नौकर उसे भीतर ले गया।

वह पासघों मारकर ज़मीन पर बैठी थी। उठने सगो ठो गिर पड़ी।

‘आप घबराइए मत। आपके भाई की जगह जिन के पास मैं जाने को आया हूँ।’

पिता द्वारा वह निर्वासित कर ही दिया गया था और निहालदे को भी खो चुका था। निर्वासित मृत्यु के अतिरिक्त और क्या है? यह दूसरा निर्वासित पहलू से कहीं अधिक कष्टकर था एक तरह मृत्यु ही थी। फिर क्यों न किसी निरपराध को बचाकर लें, उसने सोचा।

रत्ना सेठ की बहन इस बात पर विश्वास न कर सकी। आगन्तुक की मृत्यु निश्चित थी। वह इस बात पर इतनी हर्षित हो उठी कि मुँह से कुछ बोल भी न सकी। उसने सुल्तान के हाथ पर अपना हाथ रखा। फिर नयनीत टकाकुस बनी वह सेठ रत्ना की पत्नी के पास गयी ‘एक ऐसा आदमी आया है, जो मेरे भाई की जगह जिन के पास जाना चाहता है।’

सेठानी तो कष्ट से अण्डवण्ड बक रही थी, और कनी-कनी पागल की तरह अट्टहास करने लगती थी। ‘मेरी मोला बहन तुम क्या समझती हो कि एक अजनबी मेरे प्यारे पति की खातिर अपने आपको मौत के मुँह में डाल देगा?’

सुल्तान बाहर से यह सब सुन रहा था। अन्दर आकर उसने कहा, बहन, क्यों सघम में पड़ती हो? डरन की कोई

बात नहीं। मेरे साथ क्या हो सकता है? मेरा क्या विगड़ जायेगा?"

सेठ की पत्नी का नाम मेदना था। वह भय से कांप रही थी। उसका धरीर भरपराज सगा। जब-सब, उसके मुंह से एक गहरी आह निकल जाती। बेहूरा उसका सफ़ेद पड़ गया और वह फूट-फूटकर रो पड़ी। आँसुओं को उसने पोंछने की कोशिश की और अघ-बेहोशी में उसके मुंह से शब्द अपने आप निकल पड़े "तुमने मुझे अपनी बहन समझा, इसके लिए मैं तुम्हारी आभारी हूँ। मगर तुम्हारा मतलब क्या है, तुम चाहते क्या हो? यह तो पागलपन है।' और वह अजब डम से चार-चोर हाँफती हुई साँस मन लगी मानो छत्र था गया हो। कितनी दयनीय हालत है यह सोचते ही सुल्तान ने उसे झकझोर दिया।

जब बोड़ी सेंमली ठो सुल्तान न कहा न तो आपसे मुझे बन-बोसठ चाहिए न कुछ और।

मेदना न एक क्षण समझ से देखा फिर वह इतनी हर्षो-मत्त हो उठी कि अपने नये घम-भाई का गले लगा लिया। फिर उसने कहा "जिन वह बड़ा भयानक है। मैं तो आतंकित हूँ।"

रत्ना जोहरी की बहन और उसकी परती सुल्तान को उरते-उरते रत्ना के पास से गयी, और उसे सब घटा दिया।

रत्ना ने कहा, "मैं क्या करूँ यह समझ में नहीं आता। आप मेरे लिए जो कुछ कर रहे हैं उसके लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ। मैं यह नहीं समझ पाता कि आप इतना बड़ा बलिदान क्या करने जा रहे हैं?"

‘ नहीं नहीं, मैं ऐसा क्या खास काम कर रहा हूँ। बीच में टाकठ हुए मुल्तान बोसा।

रत्ना कहने लगा, “मैं आपका अपनी जगह नहीं जान दूँगा। मुझ को एक ही चिन्ता नता रही है कि मरे बाद इन औरतों की दलनाल के लिए कोई नहीं बचेगा। मरा राधा रोधी आपका कृतज्ञ रहगा कि कम-से-कम एक आदमी तो एसा मिला जिसन मुझ पोधी-बहुत राहन दो।

== १२ ==

जब जिन क पास जान का समय हुआ तो राजा क पीप सिपाही रत्ना के घर आय। उनके श्रमुधा न रत्ना स चिन्ता कर कहा ‘गराव का बोसले मकर बाहर आयो।’

बहन जोर पत्नी न जब वह सुना ता ये शकों, मानो नौद स जागो हों। न ता रत्ना स जान क लिए कह सकी, न मुल्तान स। दाना जार-जार से रान चीखन लगीं।

मुल्तान बिना कुछ कहे उठ मड़ा हुआ, जोर उसन गराव को जानसे मांगीं। जब वहन हाण में आयी। उसन कहा, ‘मेया मुल्तान, वह ठीक है कि तुमने जाना चाहा है, पर हमारे लिए एसा करना बड़ा असब है। यदि तुम्हारा पत्ना है तो वह विधवा हो जायगा और हमारे सिर सदा क लिए एक पाप बढ़ जायगा। तुमने मदद देन का जो वायदा किया था, बही बहुत है।

‘मैं तुमसे कहता हूँ कि फ़िरक छोड़ो और मुझे भूल जाओ। भगवान् मेरा रक्षक है। तुम भाई के साथ आनन्द से रहो भगवान् से मेरी यही प्रार्थना है।’

पत्नी यह सब ध्यान से सुन रही थी। मगर वह तो एसी चुप थी, मानो उसे लकड़ा मार गया हो। उसे लगा कि उसका दिमाग खराब हो गया है। उसने प्रयत्न किया कि कभी उसे फिर ग़ल्ल न आ जाय। वह सुल्तान को नहीं जाने देगी। लेकिन वह अपने आप को संभाल नहीं पा रही थी। कमी हँसती, कमी किचकिचाती। नहीं नहीं, उसे अपने पर काबू रखना चाहिए, वह ऐसा नहीं होने देगी। यह सब सोचते-सोचते वह बेहोश हो गयी।

सुल्तान ने क्षराय की बोटमें उठायीं और दरवाज़ की ओर बढ़ा। रत्ना औहरी यह जानने की प्रतीक्षा में था कि क्या होता है। जब उसने देखा कि सुल्तान सचमुच आ रहा है तो उसने दौड़कर उसके पाँव पकड़ लिये और बोला मैं आपकी इस कृपा को कभी नहीं भूलूँगा। अब खिन्दमी में क्या घरा है? मेरी पत्नी और बहन की देखभाल आप करेंगे, बस, मुझे जाने दीजिए।’

‘ईश्वर के लिए मेरा अपमान न करें। जब मैंने बचन दे दिया है तो अवश्य जाऊँगा। आप अपने परिवार के साथ आनन्दपूर्वक रहिए।’ इतना कहकर सुल्तान सैनिकों के पास चला गया।

घर के लोग सुल्तान से अन्तिम बिदा लेने आये। उन्होंने सैनिकों को भी बताया कि वह कौन है। सैनिकों ने कहा कि

उन्हें इसकी परवाह नहीं है कि वह कौन है। एक आदमी धराव लेकर चल रहा है वस वही काफ़ी है। वं शहर क नुन-सान कोने में गय जहाँ जिन के लिए स्थान बना हुआ था।

रात अंधियारी थी। सिद्ध चांदनी को एक हल्की-सी परत फैली हुई थी। पहाड़ी की तलहटी के पास ऊँची दीवारों से घिरा हुआ वह स्थान था। जिन नहीं जाकर रात्र दावत उधाता था।

सनिका ने मुस्तान का उस घर न ठकेस कर दरवाजा बन्द कर दिया। ताला लगाकर वे शहर सौटन की तैयारी करने लगे। मुस्तान ने धिन्नाकर कहा सनिक नाइमो मुने जाम आदमी मत समझो। मैं अपनी इच्छा से जिन क पास जा रहा हूँ और मैं नागने वाला आदमी नहीं हूँ। ताला लगाकर मरा थपमान मत करो।'

सनिकों का अगुआ समन्दार था। उसने मुस्तान की बात पर यक़ीन करके ताला खोल दिया। फिर वे शहर को ओर भाग गये।

== १३ ==

मुस्तान ने चारों तरफ़ निगाह फकी। दीवारों से घिरी यह जगह बहुत बड़ी थी। बीच में एक बड़ा तस्ता रखा था, जिसके पास हजारों बोतलें पड़ी थीं। एक तरफ़ मुस्तान न

हड्डियाँ का ढर देसा । वह समझ गया कि येह ड़िड्याँ उन बेचारा की हैं, जिन्हें जिन घट कर चुका है ।

मुल्तान ने सोचा, जिन का धराब पीने का मोका देना उसकी ताकत को बढ़ाना है । इसलिये उसने धराब को ज़मीन पर उँबेस कर धोतलों को फँक दिया । उसने पेड़ का एक तना लाकर बीच में सिटा दिया और उसे कपड़े से ढँक दिया । फिर अपने गुरु गोरखनाथ को याद कर उनके आशीर्वाद की कामना करत हुए वह एक काने में बैठ जिन की माट ओहने लगा ।

उसने देखा पहाड़ी पर एक सन्धी परछाईँ काँप रही है और कुछ ही क्षणों में आकाश के सामने एक विशाल छाया मूर्ति भासित हुई । जिन पहाड़ी को साथ और वीवार फँक कर अन्दर आ गया । जब वह ठले क पास गया तो उसने देखा कि रोबमर्रा की तरह धोतलें बहो नहीं हैं । वह धीछ उठा आसकूँबर, तो तुम्हें इतना धमण्ड हो गया है कि मुझे पराव तक नहीं भंजी । भूसना मत कि मैं फिर बही किया दाहुरा सक्तता हूँ जो पहने करता था । इस भादमी को घट करके मैं तुम्हें समझूँगा ।” यह समझकर कि वहाँ कपड़ा ओढ़े हुए आवमी सो रहा है वह पेड़ के ठने की तरफ़ कूदा ।

पर जब उसने कपड़ा हटाया तो पेड़ का तना देखकर वह क्रोध से पागल हो उठा । वह जोर-जोर से धीखकर गानियाँ धकन सया । सारे दाहुर में उसकी चित्लाहट गूँज उठी । रत्ना उसकी पत्नी और यहन सभी अत्यन्त तस्त हो गय । उन्होंने समझा कि जो भादमी उनका भाई बनकर गया था वह निन्दस भाया ।

मुल्तान लड़ा हो गया और वह नो धिल्साया 'न तो राजा शासकुंवर का दोष है न किसी और का । मैं ही तुम्हारी ग़राब ज़मीन पर फेंक दी है और अब देमता है कि तुम मेरा क्या कर सेठ हो ।' मुल्तान ने जिन की आँसों को धोर नहीं देखा, क्योंकि कहा जाता है कि जिन अपनी आँसों के प्रभाव से ही पुनरों को बाँधकर मारता है । मुल्तान जिन के शरीर की हुरकतों का देखकर ही उनके पनरों का अनुमान लगाता रहा ।

जिन न प्रत्यन्त क्रुद्ध हाकर एक बड़ा पत्थर उठाया "ओ बौन, बहुत बढ़-बढ़कर बातें कर रहा है । मैं सरी एक बात की ठारोफ़ करता हूँ कि तू इस बकन नी बहादुरी से बातें कर रहा है, जबकि तू जानता है कि मौस तुम्ह पर ऋपटने ही वाली है । और उन्नन बह पत्थर मुल्तान पर मारा । मुल्तान एक तरफ़ हट गया । पत्थर दीवार में सगा और उन्ननें दरार पड़ गयी ।

तत्तवार सीधकर मुल्तान दूसरे वार का इन्तज़ार करने लगा । जिन फिर उस पर ऋपटा मार मुल्तान फिर बच गया । अब बिस्ती और बूह का खेल होन गया ।

अदृष्टहास करत हुए उसने मुल्तान की एक बाँह अपने पजे से घायल कर दी । मुल्तान पीछे हटा और फिर ध्यानकर तसवार सेकर ऋनट पड़ा । जिन दाँब जान गया मगर बचाव करन पर नी तत्तवार की नाक उड़की जाँध में घुन्न हो गयी । ये इस तरह एक-दूसरे को घायल करत हुए बककर समाने लय ।

पुढ चलता रहा । सुबह होने को हुई ता जिन ने समझ लिया कि उसे यह जोड़ का प्राणी मिस गया है ।

मुल्तान ने देखा कि जिन झूटकर भावना चाहता है, तो वह बिस्साया, 'अब छूट जाना तेरा मामुमकिन है । या तो मैं मरूँगा, या तुझे मारूँगा ।

जिन समझ गया कि उसकी मौत करीब है और मौत की दहशत से ही उसकी ताकत को लकवा मार गया । उसने मुल्तान को घृणा और क्रोध से देखा और अपनी सारी ताकत को लगाकर आखिरी वार किया । मुल्तान ने भी अपनी समवार पूरी ताकत से भाँजी और जोर से फेंकी । उसवार जिन की पसलियों को तोड़ सीने में भुस गयी और वह वहीं डेर हो गया । मुल्तान ने बतौर उपहार के उसके नाक-कान काट लिये और उसकी साघ को लीचकर अहासे से बाहर पटक दिया । नाक-कान लेकर वह रस्ता के घर पहुँचा, और उससे गप्पे मिसकर सोने चला गया ।

== १४ ==

दूसरे दिन सुबह पड़ोस के बच्चे अपने-अपने घरों से खेसने निकले । जब वे सहर के छोर पर पहुँचे तो वहाँ एक बहुत बड़ी साघ पड़ी पायी । वे डरे और भावने लगे । उनमें से एक-दो ने जरा हिम्मत से मकानों के कोने क पीछे से झाँक-कर देखा कि जिन अभी तक यहाँ सोया हुआ है । पीरे-पीरे

उनमें से कुछ वापस सौटे । एक ने फिर हिम्मत बटोर कर पास आकर जिन पर एक छोटा-सा पत्थर फेंका । कुछ भी नहीं हुआ । तब तो सड़कों ने डेर-के-डेर पत्थर फेंकने शुरू कर दिए । फिर भी कुछ नहीं हुआ । तब वे सब उसके और पास चले गये ।

गाँव के लोग अपने-अपने काम पर जा रहे थे कि उन्होंने देखा कि सड़के एक बहुत बड़ी देह को घेरे खड़े हैं । उन्हें भी जिज्ञासा हुई और वे उसके निकट आये । उनमें से एक साहसी आदमी ने एक बड़ा पत्थर उठाया और उसे जिन के सिर पर दे मारा । फिर वह दौड़ता हुआ यह सुनाने राजा के दरबार में पहुँचा कि उसने जिन को मार डाला है ।

यह खबर कि जिन मारा जा चुका है दावान्नि की तरह सारे नगर में फलने लगी । राजा ने अपने मन्त्रियों से पता लगाने को कहा । खबर सच निकली, और उस साहसी आदमी ने बहुत बड़ा इनाम माँगा । उसके साथ दो मन्त्री निदिपत स्थान पर गये । वध उन्होंने घब-परीक्षण किया तो पता चला कि उसके नाक-कान गायब हैं । उस आदमी के दावे को निराधार बतसाकर उन्होंने राजा से कहा कि जिन को मारने वाले ने उसके नाक-कान काट लिये हैं, इसलिए जो व्यक्ति नाक-कान पेश करेगा वही जिन का बचकूर्ता माना जायगा ।

राजा ने हुक्म दिया कि यह घोषणा कर दी जाय कि जो भी जिन के नाक-कान पेश करेगा उसे खूब इनाम मिलेगा । उसने यह भी पूछा कि उस रात भारी किसकी थी ? मन्त्रियों ने सुरजत पता लगाना शुरू कर दिया । श्रात हुआ कि उस रात

रत्ना जौहरी की बारी थी। रत्ना को तुरन्त दरबार में हाज़िर किया गया।

आकाश कदूतर की छाती की तरह बेगनी पर मूरे छमकेदार हो रहा था। सुस्तान निश्चिन्तता से उठा घोड़ा कसा और बिना किसी से मिले रत्ना के घर से चम पड़ा। दक्षिणी हवा जोरों से वह रूही थी। इधर-उधर अड़े छुटपुट पेड़ काँप रहे थे। वह पमिया पठान से विवा भेन उसकी गढ़ी में गया। वातनीत के दौरान उसने जिन से हुई सड़ाई का जिक्र भी कर दिया।

पठान ने कहा, 'राजा के पास नहीं जा रहे हो? रत्ना बेचारे पर तो यकी मुसीबत आ जायेगी। राजा उसे माफ़ नहीं करेंगे।'

हाँ तुम्हारा कहना ठीक है। जाने के पहले मुझे राजा को प्रणाम अवश्य करना चाहिए।'

इस बीच रत्ना को राजा के सामने पेश किया जा चुका था, और उससे सवाल पूछे जा रहे थे। रत्ना कह रहा था, 'महाराज वह एक अजनबी था। मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा था। वह खुद ही आया और मेरी जगह जाने के लिए तैयार हो गया। सुबह जब मैं उसे जगाने गया तो वह जा चुका था। मैं तो उसके उपकारों का सनिक भी बदला नहीं चुका सका।'

राजा इससे सन्सुष्ट नहीं हुआ, और वह रत्ना पर बहुत नाराज हुआ।

अभी यह सब हो ही रहा था कि सुस्तान को साथ लिये पठान दरबार में हाज़िर हुआ। उसने कहा, 'महाराज, जिन

को मारने वाला जादूमी यह है।" सुल्तान ने जिन के नाक-कान राजा के सामन फेंक दिये। सारा दरवार शक्ति हो उठा। आप से आप सौगों के सिर सुल्तान के प्रति सम्मान में झुक गये, मानो किसी पराक्ष सत्ता न उन्हें इसके लिए बाध्य कर दिया हो।

राजा तो इतना अधिक प्रसन्न हुआ कि उसने दौड़कर सुल्तान को गले लगा लिया और कहा "तुम्हारा यह काम ऐसा है कि नगर की दीवारों पर मुनहरे अक्षरों में अंकित कर देना चाहिए। तुमन हमार नगर को भीषण संकट से उबार लिया है। तुम्हारी इस सोच-सेवा को हम कभी नहीं भूल सकते। तुम जो चाहो मांग लो।

महाराज, मैंने किसी पुरस्कार के लिए जिन को नहीं मारा है।"

जब वह बाहर आया तो सारा शहर सुल्तान को घेरकर खड़ा हो गया। एक हाथी पर बिठाकर वे उसको जुसूस में ले बस।

जब जुसूस रानी मारु के महल के नीचे से गुजरन सगा तो वह अपन का नहीं संभाल सकी। सुल्तान से मिलने को उसे तीव्र कामना थी। इतना साहसी और ऐसा सुन्दर पुरुष। क्या वह आयगा? बस थोड़ी-सी देर उसन बाग में सुल्तान को उस दिन देखा था। उसके अन्तर में हसबस मची हुई थी। उसे सगा कि इसके पहल उसन कभी ऐसी बेधनी महसूस नहीं की थी। उसकी पहली नज़र में ही वह पुसक उठी थी। दूसरों के मन को भापन की क्षमता रानी मारु में थी। उस

सगा कि उसके उस दिन के व्यवहार को सुल्तान ने धायद पसन्द नहीं किया था।

उसने दासी से कहा, 'तुरन्त नीचे जाओ और सुल्तान से कहो कि मैं उससे मिलना चाहती हूँ।'

दासी गयी और हाथ फँसाकर हाथी के सामने खड़ी हो गयी। हाथी बका से दासी ने रानी का सम्बन्ध बे दिया।

सुल्तान महल में गया।

रानी ने कहा, 'तुमने हमारे राज्य पर जो उपकार किया है, उसका शब्दों में वणन नहीं हो सकता। इतना कुछ करने के बाद हम तुम्हें ऐसे ही नहीं जाने देंगे। मैं पूछती हूँ तुम्हारे योग्य कोई काम दे दें तो कैसा रहे? क्यों न तुम हमारे ही साथ रहो?'

महारानी मैं सभी स्त्रियों को बहनों के समान समझता हूँ और उसी तरह उनका सम्मान करता हूँ। किन्तु मैं ऐसी जगह नहीं रह सकता जहाँ एक स्त्री शासन करती हो। मैं केवल पुरुषों के नीचे ही कार्य कर सकता हूँ।'

'मैंने तुम्हारे-जैसा व्यक्ति नहीं देखा। तुम जैसे बाहर से हो वैसे ही भीतर से भी। तुममें झूठा अह नहीं है न खोससा दिखावा। तुम बन्धी नहीं हो, इसीलिए तुम मुझे पसन्द हो।'

'अगर आप चाहती हैं कि मैं आपके राज्य में रहूँ तो मैं समदबुर्ब के पनिया पठान के साथ रहना चाहूँगा जहाँ मैं सीधे तौर पर आपके अधीन नहीं रहूँगा।'

रानी ने सुल्तान की बात मान ली। यह भी निर्णय हुआ कि उसे प्रति माह एक लाख रुपये दिये जायेंगे।

तुमने मुझे अपनी बहन माना है इसलिए, हे भाई, यह राज्य अब तुम्हारी ही सुरक्षा में रहेगा। मुझे पूरी आशा है कि तुम इसकी ठीक से रक्षा कर सकोगे।" रानी ने पूरा भरोसा प्रगट करते हुए कहा।

"बहन, मैं भरोसा कुछ भी उठा न रखूंगा। अब तक देह में प्राण है, मैं इस राज्य की भलाई के लिए लड़ता रहूंगा।"

रानी मारु की आज्ञा से मुस्तान को पनिया पठान के पास पहुँचाया गया। पठान को बड़ी खुशी हुई कि उस मुस्तान के साथ-साथ काम करने का अवसर मिलेगा। उसने मुस्तान को गंभीरता से लिया।

नगरवासियों को पता चल गया कि मुस्तान को समदबुर्ज में रखा गया है। सभी इससे बड़े प्रसन्न हुए। रत्ना चौहरी भी अपने उपहार लेकर मुस्तान के पास पहुँचा और उसने कहा, "मुस्तान, जिस दिन तुम मेरे बक्स जिन के पास बनने को गये उन्ही दिन से मेरे सहोदर भाई बन गये। मेरे पास इतना धन है कि नगर के १८ जौहरियों के धन के कुल जोड़ से भी अधिक है। मेरी बहू सारी ही सम्पत्ति तुम्हारी सेवा में समर्पित है।"

मुस्तान ने इस कृतज्ञता के लिए रत्ना को धन्यवाद देकर बिदा किया।

मुस्तान और पठान साथ-साथ घोड़ों पर सवार होकर मरबसगढ़ तथा दूसरे इलाकों की देख रेख करने लगे।

॥ १५ ॥

सुल्तान को नरबसगढ़ में रहते कई मास बीत गये। यद्यपि उसे राजा ने कई धार महल में आने का बुलावा दिया, किन्तु अक्सर वह अपने विचारों में ही लोया-सा रहता। इदरकोट की तरह नरबसगढ़ के राजपूतों का भी स्वभाव उसे बड़ा छराव मगा। वे उमड़-कूर और घोबबाज थे और डंडे की मार का ही मतलब समझते थे।

राजा को अपने रागरग से ही कुसंत न थी। रानी ही शासन करती थी और भरसक अच्छा ही करती थी। मगर उच्च उद्देश्यों के लिए वह रागरग को छोड़ने वाली भी न थी। अगर सुल्तान बीमार हो जाता तो रानी उसे अपना प्रेमी बनाने में भी न शुकती। ऐसी वधा में सुल्तान पर ही सब कुछ छोड़ दिया गया था। वह अपना अधिकतम समय सेना को मजबूत करने और सैनिकों के कुशल प्रविक्षण में लगाता था। बाकी समय वह दूसरों के झगड़े सुझाने में खर्च करता और इसमें न तो वह मन्त्रियों के कामों में देखस देता और न राजा से कोई आर्थिक मदद लेता।

सारा नगर सुखे वासुई क्षेत्र की तरह सगने मगा था। बसन्त आ रहा था। छुटपुट विलारे रोहितास्व के वृक्ष नारंगी सास रंग के फूलों से भर उठे थे। बकाइन की मोहिनी सुमग्न से वातावरण भरपूर था। सुल्तान को घन जमा करने की इच्छा न थी। वह जो कुछ राजा के यहाँ से पाता एरीबों में बाँट देता और ऐसे कामों में लगाता जिनसे जनता का भला हो।

नगर में घूम फिरकर उसने देख लिया था कि कहीं ऐसा

स्थान न था जहाँ लोग नहा सकें और साय-साय तरन का जानम्व भी उठायें। इसलिए उसने एक प्राकृतिक म्हीस बनवाने का तय किया। म्हीस बन चुकन पर उसने कहा कि अगर किसी पक्ष को वह जनता क नहाने के लिए खुल जायेगी।

म्हीस बड़े मनोरम स्थान पर बनी थी। पीछे उसका एक छोटी डामुआँ पहाड़ी थी। उसकी तसहटी में पसाश के वृक्ष थे जो इस बात के प्रतीक थे कि नीचे जल होगा। दूसरी ओर मुनहरे रंग की रेतीसी रेखा दीखती थी।

सपता हुआ शीष्म-काल था। आकाश कुछ ऊपर उठ गया था और उसमें धुंधलापन था। सूरज जल भाग उगल रहा था। बामू के कम जल रहे थे।

एक दासी ने मुल्तान से आकर कहा 'समदनुज से कुछ दूर रानी मारु आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं। उन्होंने आपका बुलाया है। उन्हें बनजारा भोमसिंह न जबरदस्ती रोक सिया है और उनके सैनिकों को मार डाला है। अगर आप तुरन्त नहीं जाते, तो रानी अपना अन्त कर लेंगी।'

मुल्तान उठ खड़ा हुआ। उसने अपने सबसे माय्य सहायकों जानी और गोषू को बुलाया। इन दो सहायकों के साथ मुल्तान रानी के पास गया। वहाँ पहुँचकर उसने रानी को दूसरे घोड़े पर बिठाया और क्रिसे की आर सीट पड़ा। क्रिसे के पास की पहाड़ी पर वह चढ़न लग्य। सुदूर पहाड़ियों के पीछे सूर्य डूब रहा था। उसने क्रिसे के पहरेदारा से फाटक खोलने को कहा।

'धामान्, हमें राजा न फाटक खोलने से मना कर दिया है।' पहरेदार साभार प।

‘धबराओ मत मेरी जिम्मेवारी है, तुम फाटक सोम दो।’

सुल्तान के इतना कहने पर फाटक सुसे और रानी मारू अपने महल में चली गयीं।

रानी ने सुल्तान को बताया कि कैसे क्या हुआ था। जब उसने मीस के बागे में सुना, तो रानी ने तय किया कि सबसे पहले स्नान करके मीस का उषाटन वही करेगी। उसके साथ एक महिला ज्योतिपिन थी जिसने कहा था, ‘महारानी यहाँ के हुर-फेर के कारण आपका उस दिन न तो मीस में नहाने के लिए और न किसी अन्य काम के लिए अपना महल छोड़ना चाहिए।’

रानी को बड़ी भुंभलाहट हुई। उसने ज्योतिपिन से कहा ध्यर्ष की नविष्यवाणी मत किया करो और ऐसे कामों में टांग न जड़ाया करो या पूरी तरह ईश्वर के हाथ में हैं। जब मेरे माई ने एक मीस तैयार करायी है तो मैं एक अच्छे उद्देश्य से उसमें नहाने जाऊँगी और मेरे साथ कोई अशुभ घटना क्यों घटेगी।

ज्योतिपिन ने कहा ‘जसा ग्रहो का जमघट है उससे मैंने आपको चेता दिया, आगे जसी आपकी इच्छा।’

नवनिर्मित मीस के पास बनजारा मोमसिंह अपने माई के साथ पड़ाव डाले हुए था। उसके साथ पन्चीस हजार सैनिक थे। असम में वह एक खबरस्त सुटेरा था। पर अपना मान बढ़ाने के लिए ही अपन को बनजारा कहता था। उसकी सना म ऐसे चुने हुए सैनिक थे, जिनका सड़ना ही मघा था, और वे अपने से दुगुनी सना का भी सामना कर सकते थे। हरेक उससे डरता था यहाँ तक कि मरवमगड़ का राजा भी।

रानी पचास सैनिकों के साथ अपने रथ पर जा रही थी। आगे-आगे राहुनाई बजाने वाले थे। उसकी दासियों के लिए भी झुली गाड़ियाँ और रथ थे। जुलूस भोमसिंह के पठाव के पास धीरे धीरे जा रहा था। उसके आगे अर्द्धगोलाकार रूप में हथियारबन्द सैनिक थे। भोमसिंह ने वो सौ सैनिकों के साथ आकर जुलूस को घेर लिया। उसने अपने सैनिकों से आक्रमण करने को कहा। मारु के सगभग सभी सैनिक भाग गये, सिर्फ पाँच-सात वहाँ बड़े रहे। भोमसिंह ने हमला किया। वे भरसक जूमते रहे मगर जल्दी ही मारे गये।

रथ पर पडा परदा उठा दिया गया। रानी की सुन्दरता को देखते ही भोमसिंह पागल हो गया, और उसे बच म करन को बचस ही उठा।

उसे लगा जैसे आकाश में पूनम का चाँद उदय हो रहा है। खजन की सी आँसू कूज की सी गहन और उसकी देह पोपल के पत्तव की तरह—ऊपर की ओर चौड़ी फटि के पास पतली। दाँत उसके पानीदार मोतियों के बस थे। उसकी सारी देह धूमहीन सपट की तरह काँप रही थी। परद के एकान्त में उसका धाँस भी सरक गया था। तन पर केवल महीन रेशम की अगिया थी, और भाँपरा मुद्रिकन से घुटनों तक।

मारु के अपूर्व सौन्दर्य से भोमसिंह कुछ क्षण के लिए स्तम्भित रह गया। कुछ देर अपने को सयत करता हुआ यह बोला, आ परियों की रानी, तुम कहाँ से आ रही हो ? क्या तुम विद्युत् की जीती-जागती मूर्ति हो या स्वर्ग की काँई

अपसरा ? तुम्हारे अर्गों की शोभा अवपनीय है । मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें इतना सुख दूंगा जो डोसकुंवर के महल में तुम सपने में भी नहीं पा सकती ।”

“नीच है तू । तेरा विभाग खराब हो गया है । तू सीढ़ियाँ भगाकर चाँद तक पहुँचना चाहता है । अमर राजा को तेरी इस नीच हरकत का पता चल गया तो तू अपना सब कुछ खोने के साथ अपनी जिन्दगी से भी हाथ धो बैठेगा ।”

भोमसिंह हँसा ‘तुम्हें मेरी ताकत का पता नहीं । तुम यह नहीं जानती कि मैं शैलगढ़ कुम्भलगढ़ और सियासकोट को हरा चुका हूँ । मैं बूँदी क हाइलों की ओर भी गया था । वे मुदिकस से चार घंटे टिक सके और फिर उन्होंने भी क्षिपार बाण दिये । और डोसकुंवर मैं कई बार नरबसगढ़ भी आया हूँ और हर बार राजा डोसकुंवर में मुझे खुश करने के लिए बहुमूल्य उपहारों से मेरा स्वागत-सत्कार किया है । वह तो एक मक्खी की तरह है जिसे मैं चूरा सी उँगली दबाकर खरम कर सकता हूँ ।

‘अरे दुष्ट दूसरे की स्त्री की ओर ताकना महापाप है जो सप के बिय की तरह तुम्हें खा जायेगा । जब तक सर्प क्रुद्ध नहीं हुआ सभी तक तू सुरक्षित है सप के फन उठाते ही तेरी मीत निश्चित है ।

‘मुझे श्रेय न दिसाओ रानी । मैं तुम्हारे पिता को जानता हूँ और उन्हीं के पास स मैं तुम्हें उठा लाया हाता अगर तब तक तुम डोसकुंवर के साथ ब्याही जाकर नरबसगढ़ न चली गयी होती ।’

‘बकार की बातें मत बक । अगर तू मरे पिता के किले म गया होता तो बहाँ से ज़िन्दा न सौटता ।’

भोमसिंह झुट्ट होकर घोड़े से कूद पड़ा और उसन मारु का हाथ पकड़ लिया । उसकी बाँसों के खुलारपन से मारु डर गयी । अपना हाथ झटक इधर-उधर भागन का रास्ता बूडने लगी ।

‘ता तुम डरने लगी न । मैं यही देखना चाहता था । अब तुम्हारी जान कहीं चली गयी ?’

रानी को अपनी दयनीय स्थिति का पता चल गया । वह वाली, ‘तुमन मुझ अकेले में पकड़ लिया है, तुम जो चाहा कर सकत हो । लेकिन मुझ जाकर अपन भाई सुल्तान से भेंट कर सेन दो मैं वायदा करती हूँ कि तुम्हारे पास सौट आऊँगी ।’

भोमसिंह जानता था कि रानी पर इतना विश्वास किया जा सकता है । अगर वह वापस न आई तो सेना तो है ही और जब वह स्वयं अपन को समर्पित करगी तो कैसा अपुत्र आनन्द आयेगा । यह साचकर उसन रानी को सुल्तान क पास जाने दिया । पर जात जाते यह चेतावनी दे दा, ‘भूसना मत । अगर तुमन अर्पना बचन न रखा, तो मैं नरबल्लगढ़ के पत्थर से पत्थर बजा दूँगा और तुम्हारे पति का भी सारमा कर डालूँगा ।’

रथ बहों छाडकर रानी अपनी दासी क साथ सुल्तान के पास चली । रास्त में यह रत्ना जोहरा की पत्नी का पासकी के पास से गुजरा । पासकी से यह उतर गयी और बोली, यह अच्छा नहीं लगता कि आप पैदल चलें और मैं पासकी पर । मरे साथ चलकर मरा मान बढ़ाएँ ।’

“अब मेरे पति मेरी रक्षा नहीं कर सक तो मैं तुम्हारी सुरक्षा स्वीकार नहीं करूँगी। मुझे अकेली ही छोड़ दो।

रानी पहले अपने पति के क्रिसे का आर गयी। निकट पहुँचने पर सोग उस धरकर आँसों की प्यास बुझाने लगे क्योंकि ऐसी त्रिलोक-मुन्दरी उन्होंने पहले कभी नहीं देखी थी। मारु के शरीर पर गहने नहीं थे। वह एक सास डब से चल रही थी मानो उसका रूप ही उसके लिए भार हो।

तब तक राजा को इस घटना का पता चल चुका था। उसने यह आज्ञा दे दी कि क्रिसे के फाटक बन्द कर लिये जायें। रानी ने मन में सोचा जब भाम्य साथ न दे तो ऐसा ही होता है। कुछ घटा पहले जिस राग्य की मैं रानी थी आज उसी के द्वार मेरे लिए बन्द हो गये।

“महल को खिड़की पर मेरी सीस अमियादे लड़ी है। मरी ओर ताककर वह मुझ पर हँस रही है। तुम्हारे वाप उँट चराते थे इसलिए तुम पदल आ रही हो जबकि राजा ने तुम्हारे साथ साबसकर भेजा था।

रानी मारु ने अपने को और अपमानित अनुभव किया किन्तु अपने को समत करती हुई वह समदबुज की ओर घसी। कुछ दूर चलने के बाद वह एक पेड़ के नीचे बैठ गयी, और अपनी दासी को समदबुज में भेज दिया।

॥ १६ ॥

मुस्तान निडर व्यक्ति था। निडरता मनुष्य के गरीर और मन का विशिष्ट शक्तिघाती बना देती है। इस गुण का प्रभाव दूतरा पर ना पड़ता है और वे नी साहली बन जाते हैं। यह साधा राजा के पास गया और रानी से जो कुछ सुना या वह कह सुनाया।

एस ही अवसर पर राजपूत के माहस की परीक्षा होती है। अगर हम इस समय कुछ भी नहीं करत हैं तो हमारा मूँह फाला हो जायगा। हमें दुष्ट नार्मसिंह की खबर सेनी चाहिए।

अधिकारी लोगों का जीवन उनक वामावरण द्वारा निर्मित होता है। वे नाग्य से यनी परिस्थितियों में अपने को बाल ससे हैं और उची में सन्तुष्ट रहत हैं वही उन्हें नावा नी है। पर कुछ लोग जो इन श्रमी के बाहर हात हैं अपना माग स्वयं बनाते हैं। कहावत मगहूर है

‘सीक सीक कायर ससे सीक सीक कपूत।

लीक छाड़ तीनों धर्म सागर सिंह सपूत ॥

मुस्तान नी इसी बाहर की धनी म था। परिस्थितियाँ चाहे जितनी विपम हों उनक सानन उसन घुटन कनी नहीं टके प। यह उनस हमेसा अना और ईस्वर पर निष्ठा होमे के कारण सदा बिबया हुआ।

राजा बालकंदर एक अंधर कमर म बठकर अपना दुस मुस्ताने के लिए पुराब पी रहा था। वह नोमसिंह की मरिठ स आसक्ति था। उसमे मुस्तान को उत्तर दत हुए कहा, ‘खाली

हाथों से तुम सारे तोड़कर नहीं ला सकते । उसने इस घटना पर कोई भी क्रम उठाने से इन्कार कर दिया ।

मुल्तान ने दृढ़ता के स्वर में कहा, प्रत्येक मनुष्य में अपना भाग्य निर्माण करने के लिए अपार सामर्थ्य है । इच्छा-शक्ति एक चमत्कारी हथियार है । मुल्तान ने सामने के उस हीन व्यक्ति को देखा । उसकी आँसों में एक पल के लिए एक मृत्ता की झलक कौंध गयी ।

वह ही भावपूर्ण वक से मुल्तान ने डोमकूँवर को उसकी जाति की महत्ता उसके परिवार का सम्मान और स्वामित्व की याद दिलायी । कहा, अपने पूर्वजों की परम्परा की याद करो, और उनकी कीर्ति को क्रायम रखो, नहीं तो न केवल अपने राज्य से आप हाथ धो बैठेंगे, बल्कि राज-सम्मान भी मिट्टी में मिस जायगा ।

जब मुल्तान ने और जोर दिया तो वही उदासीनता से वह मुल्तान को १० हजार सैनिकों की एक सेना देने पर तैयार हुआ और वह भी मुल्तान की जसती आँसों को प्रान्त करने के लिए । ऐसा लगता है कि भविष्य में होने वाली घटनाओं के प्रति मनुष्य अभी तक भयभीत रहता है, जब तक वे घट नहीं आती और घायद होने वाली जल्दी घटनाओं की छाया पहने ही पड़ जाती है । यही डोमकूँवर उसे सेना देने को राजी हुआ मुल्तान आशाओं से इतना फूस उठा, मानो वह वनजारे पर विजयी हो चुका हो । सौभाग्य से यह भाषा सत्य में परिणत भी हो गयी ।

॥ १७ ॥

छोटो-सी सेना लेकर, गोधू और जानी के साथ मुस्तान भोमसिंह से सड़ने को तैयार हुआ। पनिया पठान ही समद बुर्ज क्रिसे का रक्षक था। वहीं पर मुस्तान को नी रखने का आदेश मिला था, मगर पनिया को यह बात बिल्कुल नहीं लसी और वे दानों भनिष्ठ मिश्र बन गये। जब पनिया का मुस्तान की सैनारियों का पता चला तो वह भी अपने पाँच सौ सैनिक लेकर उसके साथ हो लिया।

मुस्तान ने एकाएक आक्रमण करना ठीक न समझा। वह बनजारे को नुसावा देकर आक्रमण की तरफीव पूरी करना चाहता था। इसलिये उसने भोमसिंह के पास एक सन्देश भेजा, जिसमें राजा डोलकूबर की तरफ से कहा गया था कि बनजारा उस रात के लिए रानी को वहीं ठहरने की आज्ञा दे दे, दूसरे दिन वह सौटकर अपना बचन पूरा करेगी। और इस अवसर पर उसके सम्मान में एक ऐसी दावत दी जायगी जिसे वह जीवनभर नहीं भूसेगा।

जब सन्देश-वाहक भोमसिंह के पास पहुँचा तो वह इतना खुश हुआ कि उसने दूत को सौ माहरें इनाम में दीं। उसने अपने सैनिकों में यह एसान करा दिया कि वे खूब आनन्द मनायें और रानी मारू क आगमन की खुशी में नर्तकियों को बुलाकर वह नाच-गान कराने लगा।

भोमसिंह उठा, जम्हाई लेकर उसने अपनी पगड़ी सवारो और किनारे पर सवे पीछे में मुँह देल मुँहों पर ताब दिया और अपने आप स कहा तुम्हारी उम्र चासीस बय की है भोमसिंह,

और मारू की २३ वष की मगर वह इस सूरत में कोई कमी नहीं पायेगी ।’

सुल्तान और सेना को परस्पर एक दूसरे को समझना था । सनिक किसी ब्यक्ति-विशेष के प्रति स्वामिभक्त रहेंगे और उसके लिए मर भी मिटेंगे पर किसी ऐसे ब्यक्ति के लिए नहीं जिसका उन्होंने केवल नाम ही सुना है लेकिन उसे खूब देखा नहीं । उसे उनके सामने सक्षरीर प्रगट होना था ।

सुल्तान ने उन्हें मदान में इकट्ठा किया और एकबारगी पुरानी परम्पराओं और परिपाटियों को भग कर दिया । उसने आक्रमण का प्रश्न उनके सम्मान से जोड़ दिया । असम्भावित के प्रति उनमें सालसा थी । उसकी वाणी से उनके चहरों पर मन्द-मन्द हँसी फूट पड़ी ।

जहाँ भोमसिंह का पड़ाव था सुल्तान उस क्षेत्र से भसी भाँति परिचित था । यह एक सुभा हुआ मैदान था जिसमें कुछ बानुई टीले थे और जहाँ कुछ भी छिप नहीं सकता था । वनआरे के पास तोपें थीं जबकि सुल्तान के पास इस मुकाबले के लिए कुछ भी नहीं था । जब तक तोपों को बकार नहीं किया जायेगा तब तक आये बढ़ना मुश्किल होगा ।

रत्ना भी आकर सेना में शामिल हो गया । सुल्तान ने पूछा ‘माई रत्ना अब हम सड़ने को तैयार हैं तुम्हीं बतलाओ तुम्हें कौन-सा काम सीपा जाय ?’

‘मैंने तो कभी तमवार की मूठ भी नहीं पकड़ी । सड़ाई की मैं एक भी कसा नहीं जानता, लेकिन मेरी सारी सम्पत्ति तुम्हारी सेवा में हाज़िर है ।

'तुम्हारी इस नोट के लिए धांधारी हूँ। तुम में मेरा वास है और ईश्वर ने चाहा तो तुम्हारे मन की मुझे जबरन पड़ेगी। सुल्तान ने कहा।

फिर सुल्तान ने पनिया पठान मोघू और जानी स पूछा व किस तरह मदद करेंगे।

पनिया पठान न वृद्धतापूर्वक जवाब दिया 'ससवार के टै नें मुक्त काइ पछाड़ नहीं सकता।

'पाँच घंटों के लिए मैं युद्ध का सारा भार अपने ऊपर लूँगा। और भाव देखेंगे कि एक राजपूत कितनी बहादुरी स सकेता है।' मोघू का उत्तर था।

जानी असल नें एक चार था, जो नारु के महसू म घोरी रते पकड़ा गया था। सुल्तान न उसमें निहित गुप्त को पहचान गया और बहू छाड़ दिया गया। अब वह सुल्तान का एक योग्य सहायक था।

जब उसकी बारी थापी तो उसने कहा, "मैं दिन में कुछ ही कर सकता मगर रात में आप कोई भी काम सोंपें मैं स पूरा कर दूँगा।"

तो जाओ जो उचित समझो करो, मेरी मुन काननाएँ तुम्हारे साथ हैं।" सुल्तान न उसको पाठ ठोकरत हुए कहा।

जानी ने अपन साथ बसन क लिए छह आदमियों को लूना, जिसका अमुआ सागरसिंह था।

== १८ ==

जानी भोमसिंह के पड़ाव की ओर चला। वे बिना रुके पाँच दहा-दहाकर चलते रहे। सामने एक मैदान था और हलकी चाँदनी में कुछ बीस रहा था। हवा के चलने से इधर उधर डोमती झाड़ियाँ, मदान में यहाँ-वहाँ, छितराई हुई थीं। उन्होंने खमों का सर्वेक्षण किया। जानी ने फुसफुसा कर कहा 'उत्तर की ओर मुइसास मासूम पड़ती है।'

जैसे ही चाँद बावलों की ओट में गया, उसे एक आहत मालूम हुई। कोई उसकी तरफ आ रहा था। सागरसिंह फुसफुसाया, 'शायद कोई पहरेदार आ रहा है। उसे कुछ कहने का मौका न मिला। एक बड़ी-सी छाया उभरने लगी। वह उसकी तरफ बढ़ी। सभी उसे पता चला कि जानी उसकी धगस में नहीं है।

पहरेदार किसी सटके की आवाज से सजग हो गया, और उसने बन्दूक संभाल ली। दश भर बह कान लगाकर आहत नेता रहा, लेकिन बासू पर गुंजने वाली हवा के सिवा और कुछ नहीं सुनायी दे रहा था। पर उधर धीरे-धीरे जानी पहरेदार के पीछे आ गया। चाँद निकलने के साथ ही सागरसिंह ने देखा कि जानी ने हाथ बाँधकर उल्टे तरफ से पहरेदार की गरदन पर चार किया जो उसके घेंटू में तपाक से लगा। बिना किसी आवाज के पहरेदार बेर हो गया। वे उसे बासू में गाड़कर आगे बढ़े।

चाँद का प्रकाश बढ़ने लगा था। पड़ाव के आसपास बहुत-से पहरेदार थे मगर वे चौकसे नहीं थे। उन्हें इस बात

का गुमान था कि वे मासिक हैं और किसी की हिम्मत नहीं, जो उनका विरोध करे। भोगसिंह के खेमे स्पष्टसे आकाश के सामने काली छायाओं की तरह भासित हास थे। जानी चुपके से खेमों की अंधेरी छाया-छाया चलकर आगे बढ़ा। उसका किसी से सामना नहीं हुआ।

पहले उन्हें अस्त्रबर्षों की उलास करनी थी। बिना किसी दुर्वटना के वे वहाँ पहुँच गये। सौभाग्य से सारे पहरेदार बाहर थे और साईस खर्राटे भर रहे थे। पहले उन्होंने उसवार के प्रहार से १००० जोड़े बैलों के रस्से काट दिये। फिर पन्द्रह सौ ऊँटों को रिहा किया। वहाँ एक सौ हाथी थे, और पन्द्रह हजार घोड़े। जानी के साथियों के लिए यह बड़ी मेहनत का काम था। हर तरह की कोशिश करके उन्होंने उन सबको सोल दिया।

उपर जानी बनबारे के पड़ाव की तरफ़ चल दिया। चुपचाप उसके हरम में दाखिल हो उसने देखा कि औरतें सो रही हैं। उसने छुरी निकाल कर उनके बालों के जूड़े काट दिये। फिर वह भोगसिंह के खेमें में पहुँचा। वह नद्ये में धुत होकर गहरी नींव सो रहा था। जानी ने उसकी भाषी मूँछें और दाढ़ी काट ली, और उसके हथियार गायब कर दिये।

फिर जानी अस्त्रागार की ओर गया। वहाँ वायन तोपें थीं। सागरसिंह भी भा पहुँचा। मिलाकर उन्होंने उन तोपों में पत्थर डाल उनके मुँह बन्द कर दिये, जिससे दागी न जा सकें। उनका काम खतम हो गया। अब सब कुछ उसके डायू में था। उसने धारों ओर देखा और आराम की साँस ली।

अब वे वापस अस्तबख्तों के पास आये, और पास इकट्ठा कर वहाँ जोर की जाग बसा ली। इससे थोड़े बर गये और उनमें भगदड़ मच गयी। दूसरे आनवरो के लिए भी यह खतरे की घण्टी थी। उस भगदड़ में हाथी भी शामिल हो गये फिर बेस और डैट भी। इस फेद में बनबारे की फौज के दो हजार से अधिक आदमी सेत रहे और कई हजार भायल हुए।

सुबह के बक्स जब आती किमे के बाहर जाने के रास्ते तक पहुँचा तो रात के पतुरेदारों का मुस्तिया दिन के रसकों के मुस्तिया से विशा ले रहा था।

॥ १६ ॥

भोमसिंह का सेनापति दौड़ता हुआ आया और उसने उसे जोर से हिसाकर जगा दिया। जब बनबारे ने अपनी सेना की दशा देखी, तो वह समझ गया कि किसी जोड़ीवार से पामा पड़ा है, और लड़ाई हुई तो जीतना मुश्किल होगा। जल्दी से उसने अपने आदमी इकट्ठे किये और उन्होंने जितने आनवरो को सम्भव हुआ वश में किया।

इसी बीच भोमसिंह के हरम की औरतें बिस्ताने लगीं। इससे भोमसिंह इतना भ्रमसाया कि दिमागी चतुस्तन खा बठा। उसने अपने सेनापति को मुद्र की तैयारी का हुकम दे दिया।

मुस्ताफ सुबह ही उठ गया था। चूंकि बनबारा अपनी घोषा से हाथ धी बैठा था, इसलिए जब मुस्ताफ के दिन में पूष

बढ़ता था। उसने हासत पर शौर किया। बनजारे की मार अब मुस्लिम से केवल दो सौ गज तक ही सीमित थी।

उसने जानी की पीठ थपथपा कर कहा "खूब अच्छे, इसके पहल कि शत्रु को अपनी तोपों की हासत का पसा चले, हमें उसके निकट पहुँच जाना चाहिए।" उसका बड़ा घोड़ा तैयार था। उसने सुन्दर कढ़ी हुई रास सँभासी और शानदार काठी पर उछलकर बैठ गया। गोधू और पनिया पहले से ही अपने घोड़ों पर सवार थे। वे उसके अगल-अगल चले।

भोमसिंह की तोपें ऐसी जगह रखी गई थीं अहाँ से सुल्तान को आगे बढ़ने से रोका जा सके। अब भोमसिंह के सैनिकों ने तोपें दागनी चार्हीं तो उन्होंने देखा कि नार्वे आम हैं और तोपें बेकार। इससे वे बेहद डर गये। सुल्तान ने उनकी प्रतिरक्षा की अगली कक्षार पार करली। इतने में बन्दूकों की गोमियों की बौछार सुल्तान की ओर आयी और उसने उसका जवाब भी दिया। कुछ सैनिक घराघायी हुए मगर उनकी जगह दूसरों ने ले ली।

भोमसिंह एक हाथी पर बठा अपनी सेना का जोर बढ़ा रखा था।

सुल्तान ने चिल्लाकर कहा, "भोमसिंह, कोई फायदा नहीं, तड़ाई छोड़ो। हम तो एक अच्छे उद्देश्य के लिए लड़ रहे हैं और तुम पाप का पक्ष लेकर। तुम कभी नहीं जीत सकते।"

भोमसिंह का जवाब था, "ठीक है, तो आओ, सिर्फ इन्द्र-युद्ध लड़कर ही निर्णय कर लें। तुम अपना सहायक चुन लो, और मैं भी अपना चुन लेता हूँ।"

सुल्तान रीमार हो गया ।

सुल्तान की ओर से पनिया पठान आया । भोमसिंह ने अपने छोटे भाई परबतसिंह को बुलाया, जो उस समय का सबसे जबरदस्त पट्टेबाज माना जाता था ।

वे एक-दूसरे पर तमवार मींचते और वार करते रहे । दोनों थोड़ा जोश-खराब से लड़ रहे थे, उनके घोड़े तिरछे हो कर अपनी जगह बदल देते । पनिया मौक़े की ताक में था । जब भी परबत उस पर वार करता, वह बच जाता । करते करते उसे मौक़ा मिला और अचानक उसने परबत पर वार किया । वार इतनी फ़ूर्ती से किया गया था कि परबत छारका हो रह गया और वह वहीं डेर हा गया ।

सुल्तान बिल्साया, 'अब तुम्हें समझ लेना चाहिए, भोमसिंह कि पाप कमी विजयी नहीं हो सकता ।'

भोमसिंह क्रोध से पागल हो उठा "तुमने मेरे भाई को मार डाला । मैं अब मानने बासा नहीं हूँ ।

सुल्तान ने अचानक देखा कि भोमसिंह के धुड़सवार आगे बढ़ने लगे । सवारों के हाथों में तनी हुई वल्लूकें थीं और उनका निघाना सुल्तान की दाहिनी भुजा पर था । सुल्तान के सैनिक उसकी आज्ञा के लिए उठावते हो उठे ।

गोधू को पुकार कर उसने हुकम दिया, 'अब मुझ का भार तुम पर है । अब अपने सैनिकों को लड़ने की आज्ञा दो ।'

गोधू ने इष्ट देवता का स्मरण किया और तमवार सीधे-कर चल पड़ा । वह दशरुदस को भेवता हुआ आगे बढ़ा । उसके साथी साथ-साथ थे । वह मड़ी बहादुरी से लड़ रहा था, और

वे जहाँ भी देखते भोमसिंह की सेना को काटता हुआ गोधू ही नज़र आता। सैकड़ों की सख्या में सैनिक खेत रहे फिर एक-दम घमासान सड़ाई होने लगी, और दो घण्टे के भीतर गोधू ने भोमसिंह के आक्रमण को पीछे धकेल दिया।

भोमसिंह क्रोध से पागल हो उठा। कहावत मशहूर है कि जब दुर्दिन आने को होते हैं तो आवमी की भति मारी जाती है। भोमसिंह ने अपने आवमियों को इकट्ठा कर मुल्तान पर सीधे भाषा बोल दिया। उसके घोड़े तेज़ दुस्की में उस तरफ बढ़ने लगे।

मुल्तान इसके लिए तयार हो गया। उस टीस के पीछे होती मुगमुगाहट को उसने ठाढ़ किया था। घोड़ की रास रुक सी। घोड़ों के उत्तजित सुरों की आवाज़ के असावा धारा ओर सघाटा छा गया। अपने सैनिकों की ओर ताकते हुए यह स्पष्ट और तेज़ स्वर में आदेश देने लगा।

उसने अपने पास चुने हुए २५ सौ सैनिक रलकर बाज़ी का शेरों दिखाओं में तनात कर दिया। यह बरखबरी की सड़ाई न थी, और जोखिम खाया था। मुल्तान अपनी टुकड़ी के साथ प्रतीक्षा करता रहा और भोमसिंह ने पास पहुँचते-पहुँचते मुल्तान पर आग बरसानी शुरू कर दी। चारों ओर धड़धड़ाहट हान लगी, और कासा घुआँ मेंबराने लगा। मुल्तान ने जवाब देने का निदख्य किया। हालाँकि धनुदस कहीं खाया था, फिर भी मुल्तान की सेना निबरता से भागे बढ़ी। राजपूता की पगड़ियों के छोर हवा में सहरा रह गये। जब वे धनुओं से ३० गज दूर रह गये, तो ग़ज़ब की घुड़सवारी से उम्होंने

अपने घोड़ों को साधा और भोमसिंह की सेना की दाईं-बाईं मुजाबों पर घूम पड़े। घोड़ा पर बैठे-बैठे ही वे क्षमदस पर इतनी सरसता से निघाना लगाने लगे जितना जमीन पर लड़े हीर मारते।

भोमसिंह की सेना को गहरी क्षति पहुँची किन्तु उसके सैनिक बड़े जोर से सुल्तान पर उमड़ पड़े। लगने लगा कि सुल्तान अबश्य हार जायेगा। सभी सुल्तान की दूर लड़ी बाएँ और दाएँ की टुकड़ियों ने हमला बोल दिया। इससे भोमसिंह की सेना बीच में पिस गयी, और बनजारा क्रय कर लिया गया।

जजीरों से बाँधकर बनजारे को सुल्तान के पास लाया गया। नीचे तुम्हारे जैसी के लिए कोई भी दण्ड कम है। तुम दूसरे की स्त्री का हरण करना चाहते थे? यह भी भूम गये कि वह रानी भी है। बताओ तुम्हें क्या दण्ड दिया जाय?

भोमसिंह उसके धरणां पर गिर पड़ा और बोला 'तुम महान् हा में पायी हैं। अपने जीवन में मैंने यह सबसे बड़ा पाप कर्म किया। मैं फिर कभी ऐसा नहीं करूँगा। आज से मैं रानी मारु की पूज्य समझूँगा और राजा बोलसुंवर का सदा सम्मान करूँगा। तुम चाहे जो करो। मैं तुम्हारी शरण हूँ।'।

इसका फ़ैसला रानी करेगी क्योंकि तुमने उम्हीं का अपमान किया है।

सुल्तान ने युद्धक्षेत्र के वारे में बिस्तार से महत्त में कहसा नज़ा। रानी मारु रथ में बैठकर वहाँ पहुँची। उनकी आँतों

में एक चमक थी। पहले अपनी वाहन वासियों के साथ वह नवनिर्मित भील पर गयीं। वहाँ स्नान किया और खेमे पर लौट आयीं, अहाँ मुस्तान उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह सिंहासन पर बठी और भोमसिंह उनके सामने पेश किया गया। भोमसिंह ने अपने सबसे कीमती जवाहरात नजर करत हुए कहा, मेरा जीवन आपके अधिकार में है। आप मुझे जो दण्ड देना चाहें दें।”

मारू ने व्यग्न करते हुए कहा ‘हसके पहले कि तुम्हारा कोई फसला करूं मैं अपना दिया वचन तो पूरा कर लूं। क्या मैं तुम्हारे खेम में चरूं ?’

मुस्तान ने यह सुना तो क्रोध से कांप गया। पनिया ने तसवार खींच ली। भोमसिंह ने मारू के चरणों पर अपना सिर रखते हुए कहा, “मैं अपनी दुष्टता और नोचतापूण व्यवहार की काफ़ी सजा पा चुका हूँ। हूँ रानी इस अधम पापी को अब क्षमा कीजिए।”

‘यह निर्णय तो राजा करे, क्योंकि तुमने मुझसे अधिक उनके प्रति अपराध किया है।’

मुह में सिनका दबाये पशु की भाँति भोमसिंह को नये पाँव ज़मीरों से बाँधकर डोसकुंवर के दरवार में लाया गया। मुस्तान और रानी मारू वहाँ पहल ही पहुँच गय। भोमसिंह राजा के सामन जाकर झुका, और उसन उन्हें कीमती उपहार नजर किये। फिर हाथ जोड़कर बोला, महाराज, मन धोर अपराध किया है। माप मेरे साथ जो चाहें, करें। मेरे प्राण अब मापके हाथ में हैं।”

मुस्तान उदार-हृदय राजकुमार था। जब उसने देखा कि बनबारा पूरी सजा पा चुका है और उसने अपना सब कुछ सो विया है तो वह पिषस गया। उसने राजा से प्रार्थना की कि भोमसिंह को छोड़ दिया जाय।

राजा डोलकूबर ने उसे प्राणदान द दिया, और चेठावनी देते हुए कहा, "भोमसिंह, यह मस भूसना कि हमारा मुस्तान जैसा भाई है, बिसने बिन तक को खत्म कर दिया है। हमारे राज्य को किसी बुरी वृष्टि से न ताकना। जब तक तुम ऐसा नहीं करते, तुम सुरक्षित हो। जब भी तुम आओ, राजबखार में आकर नजर पेस करो।

राजा के सामने घुटने टेककर भोमसिंह चसा गया।

:: २० ::

समदयुर्ज म आकर रानी मारू की दासी ने मुस्तान से उनका सन्देश कहा "यह तुम्हारा कैसा ब्यबहार है? महम में कुछ घोर घोरी करते पकड़े गये हैं और उनका कहना है कि तुम्हीं ने घोरी करने को कहा था।"

मुस्तान स्तम्भित रह गया। उसने घोड़ा लिया और तुरन्त रानी मारू के पास पहुँचा।

"बहन मेरी पिछली दस पीढ़ियों में ऐसा कभी नहीं हुआ कि किसी ने घोरों से दास्ती भी की हो। फिर आपने किस तरह मुझ पर घोरी का इन्जाम लयाया है?"

माऊ ने सुल्तान के हाथ पर एक पत्र रखते हुए कहा 'तुमने यह सब मुझसे छिपाया था क्या यह चोरी नहीं है?' सुल्तान पत्र पढ़ने लगा। उसमें लिखा था 'आपाङ्क के महीने में आकाश में वावम घुमने होते हैं, सावन में तीतर और मोर भादों में अवावीस, आश्विन में समुद्री सीप, फार्सिक और अगहन में हिरन और बारहसिंघे, पौष में गीवङ्क, माघ में बिल्लियाँ फागुन में हाथी और घोडे, चत में सारा वनस्पति जगत् बसाऊ में कोयल और कौवे तथा जेठ में वन्दर मस्त रहते हैं। ऐसा लगता है कि वर्ष के सभी महीन दूसरों न अपन हिस्स में बाँट सिये हैं, और मरे लिए एक दिन भी न छोड़ा कि मैं अपने प्रियतम के साथ बिना सकूँ। तुमने उन्हें मुझसे छीम लिया है।'

— 'रानी माऊ, तुम्हें जानना चाहिए कि तुम्हारे साथ रहने वाला बहादुर सुल्तान किष्ककोट के राजा मैमपास का पुत्र है। वह प्रतिहार क्षत्रिय है। वह बारह वर्ष के लिए अपने राज्य से निर्वासित कर दिया गया और राजा कामध्वज राव न उसे अपना वसुङ्क पुत्र मान लिया। मैं राजा माधपत राव की पुत्री, सुल्तान की ब्याहूँता पत्नी हूँ। सुल्तान ने बचन दिया था कि पहले तीज-नव पर वह अवश्य लौट आयगा। तब से पाँच तीजें बीत गयीं, और वह अभी तक तुम्हारे ही साथ है। ऐसा लगता है कि दूसरों की आँसों में भूस भोंकन के लिए ही तुम उस अपना भाई कहती हो, पर तुम्हारा-उसका सम्बन्ध कुछ दूसरा ही है। एक पुरुष की दो स्त्रियाँ तो दली गयी हैं, किन्तु धादक्य है कि तुम्हारे दो पति हैं।'

सुस्तान ने निहामदे का पत्र बार-बार पढ़ा । उसे अपने ही कुरूप से इतना घबका लगा जैसे उसके बोलने और सोचने की शक्ति नष्ट हो चुकी हो । वह पत्थर की तरह बठा रहा । वह बार-बार नाक साफ करने लगा । अक्सर उसकी सांस हो गयी । हाथ कांपने लगे । उसने सज्जा से अपना मुंह मारु की गोद में छिपा लिया ।

यद्यपि स्वयं ही मारु की आँसों से आँसू झरने लगे थे फिर भी उसने बड़ी बत्सलता से सुस्तान की गरदन और पीठ सहमायी । फिर उसने सुस्तान के प्रति संबेदना व्यक्त करते हुए कहा 'मेरे भीतर कोई मुझे कभोट रहा है । मैं इतनी अन्धी क्यों हो गयी थी ? तुमने मुझसे यह बात छिपायी इससे मुझे बड़ी गहरी चोट लगी है ।

वह कुछ देर तक भाव-धूम्र की तरह बैठा रहा । फिर उसने कहा 'वहल मुझ जान की आशा दे दो जिससे मैं निहामदे के पास तुरन्त पहुँच जाऊँ नहीं तो वह आत्मघात कर लेगी ।

मारु ने सिर हिसाया 'मगर तुम्हें उस सड़की से तो मिसला चाहिए जो यह पत्र लायी है,' कहते-कहते उसने पत्र की ओर संकेत किया और सुस्तान के दाँव कंधे पर सिर रख कर फफककर रो उठी ।

मीरा, दासी से कहीं अधिक, निहामदे की सहेली थी । जब सुस्तान ने इंदरकोट छोड़ा, तो सयोग से उसको निहामदे

के साथ रहने का व्यवहार निहालदे ने सुल्तान से उसने कहा, "जब आप नहीं लौटे तो राजा ने इंदरकोट में तीव्र का पव ही बन्द कर दिया ।

"उस दिन उसमें थी । निहालदे सेठी पसवाड़े म रही थी । उसने अपनी चादर उतार फँकी । बाहर भीसी पड़ रही थी । हवा में नमी थी । शरीर उसका गिथिस पड़ने लगा, मानो उठ भी नहीं पायेगी । उसकी देह बिस्कुल हुवल मासूम दे रही थी । उसकी चमकीली आँखें अँधेरे में घूर रही थीं । उसने मुझसे उसे अकेली छोड़ बाहर जान को कहा ।

"अभी अँधेरा ही था कि उसे भपकी आ गयी । उसने सपने में देखा कि वह तुम्हारे कमरों पर झुकी हुई है और तुम्हारे बेहरे पर विखरी मुस्कान को टाक रही है पर कुछ कह नहीं पाती ।"

सुल्तान ने अन्तर की बेदना से सम्झी साँस लीथी । मासु भावावेग में डूब रही थी ।

मीरा ने आगे कहा 'हाँ तब उसने अपने हाथ उठाये, मानो तुम्हारा बेहरे छूना चाहती हो और उस तुम्हारी साँसों की मर्माहत महसूस हुई । उसने हॉठ छुए, माना रँगलियों के स्पष्ट से काँप रहे हों ।

"उसने बैनाई सेते हुए आँखें खोलीं । वही वह लड़ा था । उसने आँखें ऋपका कर देखा । बायीं आँख थोड़ी दवा कर देसी । वह बिस्कुल भीचे नुककर स्पर्श करने का ही था । वह कूदकर दीवार के पास जा पहुँची । फूसकूँवर कामुकता से उसे घूरने लगा ।"

मुस्तान क्रुद्ध हो उठा। उसकी इच्छा हुई कि अपना कमजा पीर कर फेंक दे।

“‘डरो मत, मेरी बात सुनो’, फूसकुंवर ने उससे कहा। वह उस आर बढ़ने लगी जहाँ उसकी कटार रखी थी। धीरे धीरे उसने कटार को उठा लिया।

‘आओ आओ’ फूसकुंवर ने फिर कहा ‘मुझसे डरना क्या ?’

“तुम यहाँ क्यों आये ?’ निहालदे ने पूछा।

‘मूर्खता मत करो मुस्तान कभी नहीं आयेगा।’

फिर क्या हुआ उसे याद नहीं। आगे की बात और घटना वह सब भूल गयी। जब उसे होश आया तो देखा कि जैसलमेर का बड़ा फूसदान टुकड़े-टुकड़े होकर छितरा गया था। वह हाँफती हुई ऊर्ध्व पर पड़ी थी। उसे इतना ही याद था कि उसने कटार फेंकी थी और वह जाकर सिद्धकी के पत्थर में धँस गयी थी। फिर वह फूसदान के पास कुछ देर खड़ी रही और बस। या तो घोट लगने के बाद फूसकुंवर भाग खड़ा हुआ था या फिर फूसदान ही गिरकर टुकड़-टुकड़े हो गया—यह उसे याद नहीं।

मुस्तान ने अपना मुँह हथेलियों से छिपा लिया। मार काँप उठी।

निहालदे इसीलिए अपने दिन काट रही है कि तुम जल्दी आओगे। जब उसे तुम्हारी याद आती तो वह कराहने लगती है और उसकी मुट्ठियाँ बँध जाती हैं।”

मुस्तान ने सन्धी भाह भरी।

“जब मैं आ रही थी तो निहासदे ने कहा कि ‘अब मैं और अधिक न रह सकूंगी।’ वह उठी और कई डग चली और उसकी परछाईं दीवार पर काँपती रही मानो वह कहीं अपने की ठौर खोजती हो। मैं तो रोने लगी। उसने अपने गले से नासते हुए कहा ‘दुनिया में अनगिनत लोग हैं जो एक-दूसरे को प्यार करने के लिए ब्याह कर लेते हैं। मैं उसी क्षण की, जिस दूटे स्वप्न की माद में हूँ। अब मेरा जीवन-भीत बिना निहासदे की एक नीरस कड़ी है। अबश्य में कुछ तो करूँ।’

‘मैंने उसे बताया कि मैं नरवसगढ़ की रहने वाली हूँ और तुम रानी मारु की सेवा में हो।

मारु ने बीच में टोकते हुए कहा ‘बहु मरी सेवा में नहीं हूँ, वह मेरा भाई है।’

निहासदे ने हिचकिचाहट से पूछा ‘क्या वह अपनी तकलीफें नहीं है ?

मीरा ने जरा सकुचा कर कहा ‘मुझे माफ़ी बच्चों मैं तो निहासदे की कही बात बता रही हूँ। फिर निहासदे बोली ‘क्या पता अब मारु उनकी नयी प्रेमिका हो ? फिर उसने अपना हाथ अपने हृदय पर रखा। माथे पर पसीने की नूँद झलक उठी और उसके गालों पर डरने लगीं। मेरे कुछ कहने से पहले ही वह चीख पड़ी ‘नहीं, नहीं ऐसा असम्भव है। लड़कड़ाती हुई वह सिड़की के पास पहुँची। मैं अबाकु छड़ी थी। जमकते बौमुरों के बीच वह अनुपम सुन्दरी लग रही थी।’

मुल्तान उठा और धापोमानी करने लगा। वह बेचन हो रहा था। कभी वह अपनी तलवार सीपता और फिर म्यान

में रख लेता। मारू अपनी हथेलियों से मुँह छिपाकर रो रही थी। बीच-बीच में वह बुरी तरह काँप उठती।

“तो फिर क्या हुआ ? कहती क्यों नहीं ? कहो कहो कहो।” सुल्तान का स्वर ऐसा भयानक हो उठा कि मारू उसे पहचान तक न सकी।

“मुझे अपने बचपन के दिन याद आ गये और मैं जोश में उछल पड़ी क्योंकि मुझे एक बात सूझ गयी थी। निहालदे मेरी ओर बड़ी आशा से देख रही थी।

“मैंने उसे अपनी सूझ बताया। असली कठिनाई मुझे यहाँ भेजने में हुई। साथ में कोई रखक रहता तो फूलकुवर मुझे बीच में ही रोक देता।’

‘फूलकुंवर फूलकुंवर नहीं मैं रामा के महसनों से बहुत बड़ा हुआ हूँ, बरना ” सुल्तान फुफकारता रहा।

“अन्त में निहालदे ने ही समस्या का हल किया। उसने भाटों को बुसाया और मुझे से जाने को कहा। यहाँ भी उनके लिए महल में आना आसान था।

मीरा कुछ क्षण सोचती रही, फिर कहने लगी “बरखात शुरू हो गयी थी। उपा का भूरा उबेसा धीरे-धीरे रग बदन रहा था। काले रग के सफ़ेद कोर वाले बादलों की सीटी बजाती हुवा ठंसने लगी। हम धीरज बाँधे बसते रहे। पेड़ों से जल घप-घप करता और ऊपर के तरते भेष बड़ी फुर्ती से हर-हराकर बरस पड़ते। हमारे कपड़े बिल्कुल भीग चुके थे। हुवा फिर वही और पानी के फकोरे ढर गये। महल के द्वार पर मैं घोड़े से उतर पड़ी। वहाँ कुछ भोग सड़े थे जो मुझे

रोकना चाहते थे मगर क्रिस्मत मेरे साथ थी और मैं सीधे रानी के पास बौककर आ पहुँची।”

॥ २२ ॥

सुल्तान पसने के लिए तैयार हुआ पर उसके पास घन के नाम कुछ भी नहीं बचा था।

माऊ समझ गयी। उसने पूछा ‘तुम्हें तो अच्छी तनखाह मिलती थी, आखिर उसका तुमने किया क्या?’

“बहन क्या तुमने अपने राज्य में बाण-बधीष भीमें और कुर्ए नहीं देखे? मैं यही सब करता रहा।

‘किन्तु उनमें तो कहीं पयादा लगा होगा।’

इसमें रत्ना जोहरी मेरा मददगार था।’

रानी माऊ ने पहरेदार को रत्ना के मही भेजा जिससे वह सुल्तान से हिसाब किताब कर ले।

रत्ना ने हाजिर हाकर कहा, कि सुल्तान के मही उसका कुछ बकाया नहीं है।

जब राजा डोसकुंवर ने उसके जाने की बात सुनी तो वह भी वही भा गया। सुबह होने से पहले ही हरेक नागरिक जान गया कि सुल्तान जाने वाला है। महल के सामने द्वारों भोग खड़े हो गये। उस जन-समूह के बीच से विदा लेकर सुल्तान पसने को तयार हुआ।

विदा के समय उसने रानी माऊ से कहा, “बहन जब भी

मेरी ज़रूरत पड़े, बिना सकोच के नुमा भेजना, मैं शीका हुआ आऊँगा ।”

सबको नमस्कार कर सुल्तान ने अपने घोड़े की रास इबरकोट की ओर मोड़ ली। घोड़ा सड़क का था—काफ़ी ऊँचा और ठगड़ा—जिस पर एक सुल्तान ही चढ़ सकता था। वह जितनी फुर्ती से ज़मीन पर चमता उतनी ही तेज़ी से पानी में भी तैर सकता था।

धारीरिक मेहनत में सुल्तान का कोई मुकाबला न था। यदि सक्य तक पहुँचने में आरिभक सन्तोप मिसता हो, तो अपनी लगन में वह किसी भी सतरे या मुसीबत की परवाह न करता था। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि और साहस के कारण वह एक सुयोग्य सेनापति था। किन्तु वह सदा धान्तिरक्षा के लिए ही लड़ता था।

नरखसगढ़ के सीमान्त पर एक ज्योतिपी बठा था। उसने सुल्तान की ओर देखकर कहा, “भय घुड़सवार तुम्हारे ग्रहों को देखने से पता चमता है कि इस समय तुम्हारा जाना ठीक नहीं। रास्ते में तुम्हें बड़ी-बड़ी मुसीबतों का सामना करना होगा ।”

वहीं एक पद्धित की बेटी बैठी थी। वह बोली, “ज्योतिपीजी, आपने अपनी पुस्तकें ठीक से नहीं पढ़ी हैं। मेरी यथना से तो यह सवार ठीक समय पर अपनी पत्नी के पास पहुँच जायेगा ।” सुल्तान ने दोनों की बातें सुनीं, और जाने बढ़ गया।

सुल्तान इबरकोट की सड़क पर बढ़ने लगा। उसे एक